5811

5811

ढ़ाई शती समारोह के अवसर पर प्रकाशित

जयपुर कला और कलाकार

5811

राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जयपुर कला और कलाकार

लेखक सम्पादक

सुमहेन्द्र

जयपुर अढ़ाईशती
समारोह के अवसर पर
प्रकाशित

राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

प्रकाशक
सचिव,
राजस्थान ललितकला, अकादमी
रवीन्द्र मंच, जयपुर

जयपुर अढ़ाईशती समारोह के अवसर पर प्रकाशित
1978
राजस्थान ललितकला अकादमी, जयपुर

मूल्य : 10/=
मुद्रक :
ऑफसैटर्स
आवरण एवं सज्जा विनोद भारद्वाज

राज्य संग्रहालय पुस्तकालय, लखनऊ
क्रम 5011
प्राप्ति तिथि
State Museum, Library, Lko.

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रम

संदेश
जयपुर कलम
परम्परा के चिन्ह
उभरती प्रतिभाएँ
पुनरुत्थान काल
समसामयिक कलाकार
नये उभरते प्रयोगशील कलाकार
मूर्तिकार
सहयोग
लेखक सम्पादक
अनुक्रमणिका

7–20
21–25
26
27–38
39–72
73–84
85–95
96
97
98–100

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ललित कला अकादेमी LALIT KALA AKADEMI
राष्ट्रीय कला संस्थान NATIONAL ACADEMY OF ART

17 सफदरजंग रोड, नयी दिल्ली ।

दिनांक : 28 जनवरी, 79

प्रसन्नता का विषय है कि राजस्थान ललित कला अकादमी जयपुर स्थापना के 250 वें वर्ष की समाप्ति के उपलक्ष में जयपुर के कलाकारों का तथ्यात्मक विवरण प्रकाशित कर रही है । इसमें जयपुर स्थापना से अब तक के सब सृजनशील कलाकारों का लेखा जोखा है जिन्हें जयपुर कलम, परम्परा के चिन्ह, उभरती प्रतिभाएं, पुनरुत्थान काल, समसामयिक कलाकार तथा मूर्तिकार एवं नये उभरते प्रयोगशील कलाकार, श्रेणियों में विभक्त कर प्रकाशन को और सहज एवं उपयोगी बना दिया है । वस्तुत: यह जयपुर के कलाकारों का परिचयात्मक इतिहास है । आशा है कला जगत एवं शोधकर्त्ताओं के लिए यह प्रकाशन महत्त्वपूर्ण सिद्ध होगा । आकादमी के इस प्रयास की सफलता के लिए मेरी शुभकामनाएं ।

रा० मिर्धा

(राम निवास मिर्धा)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

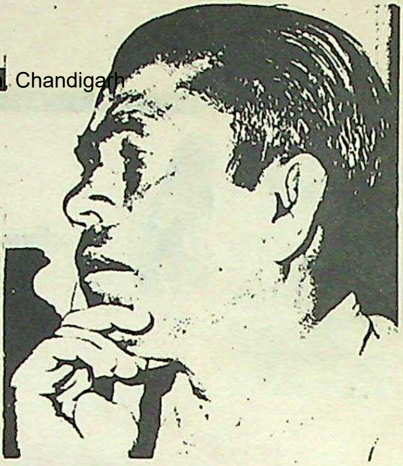

भंवरलाल शर्मा

शिक्षा एवं स्वायत्त शासन मंत्री

राजस्थान सरकार

अर्द्ध शा. क्रमांक 25584

दिनांक 22/12/78

-: संदेश :-

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि राजस्थान ललित कला अकादमी जयपुर 250 वर्ष समारोह के शुभ अवसर पर एक कला निर्देशिका का प्रकाशन कर रही है। निर्देशिका के माध्यम से कला के क्षेत्र में हुई गतिविधियां, उपलब्धियां एवं आगामी योजना की झांकी उपलब्ध होगी इस शुभकामना के साथ मैं इसकी सफलता चाहता हूं।

(भंवर लाल)

सचिव,
राजस्थान ललित कला अकादमी,
रवीन्द्र मंच,
जयपुर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कृपाशंकर रस्तोगी,
शिक्षा आयुक्त एवं शासन सचिव

राजस्थान सरकार
जयपुर।

क्रमांक :- एफ-8 (4) शिक्षा/गुप-1 /76

दिनांक- 3 जनवरी 77

संदेश

======

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि जयपुर नगर के अढाई शती समारोह के अवसर पर राजस्थान ललित कला अकादमी, जयपुर के प्रमुख कलाकारों, मूर्ति कलाविदों एवं वास्तु कलाविदों की डाइरेक्टरी प्रकाशित कर रही है।

जयपुर शहर अपनें आपमें उच्चकोटि की वास्तुकला का उदाहरण है और प्रारम्भ से ही यहां विभिन्न कार्यक्षेत्रों के मूर्धन्य कलाकारों को अपनी कला को विकसित करनें के सुअवसर प्राप्त होते रहे हैं जिसके कारण कला जगत में जयपुर का अपना उच्च स्थान है।

मुझे आशा है कि डाइरेक्टरी विभिन्न कलाकारों को एवं उनकी कला को प्रकाश में लाने का सशक्त माध्यम प्रमाणित होगी।

प्रयास की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनायें।

(कृपाशंकर रस्तोगी)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जयपुर
राजस्थान

केoकेo भटनागर
विशिष्ट सचिव (शिक्षा)   दिनांक 26 दिसम्बर, 1978

मुझे जानकर प्रसन्नता हुई कि ललित कला अकादमी द्वारा जयपुर के कलाकारों एवं मूर्तिकारों की निर्देशिका प्रकाशित की जा रही है। जयपुर नगर की 250वीं वर्षगांठ पर अकादमी की यह भेंट इस सुन्दर नगर के सांस्कृतिक वैभव को बढ़ाने में अवश्य सफल होगी।

(केoकेo भटनागर)

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जयपुर स्थापना के समापन वर्ष पर ललित कला आकादमी जयपुर के कलाकारों का लगभग पूरा विवरण प्रस्तुत करते हुए गौरव का अनुभव कर रहे हैं। जयपुर का कलाकार किसे माना जाय यह बहुत ही दुरूह प्रश्न है। आज की स्थितियों में जमीर की सीमाओं में बंध पाना और उन सीमाओं में बंधकर् काम करना जयपुर के कला इतिहास एवं कलाजगत के लिये उचित प्रतीत नहीं होता। अत: यहां की कलाधारा में जिसका भी अंशदान रहा है उसे सम्मिलित करना आवश्यक हो जाता हैं। बहुत कम समय में इतना बड़ा काम कर लेना निश्चित रूप से अत्यन्त कठिन कार्य है। इसे मैं मात्र सत्तर अस्सी प्रतिशत ही काम मानता हूं। बहुत प्रयास किये हैं पर फिर भी प्रतिभाएं छिपी हुई हैं उन्हें खोजने के लिये समय चाहिए। पुनः फिर भी मैं आशान्वित हूं कि यह प्रकाशन कला जगत के लिए महत्वपूर्ण सिद्ध होगा।

राजस्थान ललित कला आकादमी **श्री राम गोपाल विजयवर्गीय कु० संग्राम सिंह श्री रामचरण शर्मा, "व्याकुल" श्री राधा मोहन, श्री नरबदी लाल शर्मा श्री "नान्हा जी" यजेन्द्र प्रकाश शर्मा** के प्रति आभारी हैं जिन्होंने अपने संग्रह में उपलब्ध चित्रों को प्रकाशित करने की अनुमति एवं महत्वपूर्ण सूचनाएं दी। **श्री विनोद भारद्वाज एवं श्री के० पी० सिंह** के अथक प्रयासों से यह प्रकाशन सुन्दर बना सका। और अंत में पर अत्यन्त महत्वपूर्ण **विशिष्ट सचिव शिक्षा श्री के. के. भटनागर उपसचिव शिक्षा श्री आर. एस. शर्मा उपसचिव वित्त श्री अनिल वैश्य** के प्रति हृदय से आभारी हैं जिन्होने तत्काल इस प्रकाशन हेतु अनुदान की स्वीकृति देकर हमारा साहस बढ़ाया। साथ ही सभी कलाकार साथियों के प्रति भी आभारी है जिन्होंने बहुत कम समय की सूचना पर भी वांछित सहयोग दिया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जयपुर कलम

जयपुर की स्थापना के समय से आजतक कला के क्षेत्र में अनवरत काम हो रहा है। जयपुर कलम की लोकप्रियता के पीछे उसके सर्जकों की साधना छिपी है। यद्यपि इस शैली में आज भी काम हो रहा है परन्तु यहाँ मात्र उन्हीं कलाकारों का उल्लेख किया जा रहा है जिनकी मात्र रचना ही शेष रही है :

जयपुर की चित्रकला वस्तुतः आमेर से प्रारंभ हो जाती है। सूर्यवंशी रामचंद्रजी के वंशज कछावा राजपूतों के काल से ही आमेर में कला पल्लवित हुई। राजा भगवन्तदास, राजा मानसिंह, मिर्जा राजा जयसिंह और सवाई जयसिंह कलाप्रेमी और कलाकारों के आश्रयदाता रहे हैं। राजा भारमल की छतरियों में १६०० से १६१५ ई. के बीच में बने चित्र हम आज भी देख सकते हैं। बैराठ और मोजमाबाद में बने भित्ति चित्र भी इसी काल के लगभग हैं। १६५० से ७५ के बीच हमें केवल, मोहनदास के नाम का उल्लेख मिलता है। इसकी रचनाओं में लोक एवं मुगल प्रभाव है। १६९९ से १७४३ तक महाराजा सवाई जयसिंह I के राज कलाकार मोहम्मद शाह ने कृष्ण पर पुस्तक चित्रित की। जयसिंह ने अपने राज्यकाल में पोथी खाना को विस्तृत किया और इस समयलोक प्रभाव एवं जकड़न भरे चित्रण से मुक्ति मिली तथा आमेर और मुगल शैली के मिश्रण से नई शैली का जन्म हुआ। इस समय रागमाला चित्र खूब बने। इन चित्रों का अब अन्तर्राष्ट्रीय महत्व हो चुका है। मौलिक कल्पना, शास्त्रोक्त विवरण, संयोजन में नवीनता और कलाकारों का सधा हुआ हाथ इस काल की कृतियों में विशेषता है, तैयारी में जहाँगीर काल की मंजावट देखी जा सकती है।

महाराजा सवाई जयसिंह I के काल में उपरोक्त मुहम्मद शाह के बाद ईश्वरी सिंह के काल (१७४३–५०) तक आते आते साहिब राम का हाथ सध चुका था। कपड़े पर चन्द्रस लगाकर उन्होंने आदम कद आकार में पोर्ट्रेट खूब बनाये हैं। लालचन्द चितेरा ने जानवरों की लड़ाई के चित्र बनाये। इन चित्रों को बनाने से पूर्व जयनिवास बाग के पश्चिम में स्थित चौगान में होने वाली ऐसी लड़ाइयों का कलाकार, अध्ययन करता था। इनके चित्रों में भय, चिढ़न, खुशी और दुख आदि भावों की सफलता पूर्वक अभिव्यक्ति हुई है। साहिब राम माधोसिंह I (१७५०–६७) के काल में भी बड़े आकार के व्यक्ति चित्र बनाते रहे। इस समय रामजीदास भी अच्छे व्यक्तिचित्र फलक १ बना रहे थे। गोविन्द और कुशल चितेरा इनके साथ काम करते थे।

१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सवाई पृथ्वीसिंह (१७६७–७६) के काल में हीरानन्द और त्रिलोक ने साथ मिलकर महाराजा की छवि बनाई। इन्ही पृथ्वीसिंह का साहिब राम ने भी १७६७–७६ ई० में छोटा चित्र, फलक २ बनाया जो तैयारी में बेजोड़, मूलरंगों के प्राधान्य से बना सुन्दर चित्र है।

२

प्रतापसिंह (१७७६–१८३०) ने अपने समय में पोथी खाने को विस्तृत रूप दिया। इनके कारखाने में इक्यावन कलाकार थे। रागमाला, दुर्गापथ, भागवत एवं रामायण आदि विषयों से सम्बन्धित इस समय खूब चित्र बने। इन चित्रों के निर्माण में १. रामसेवक, २. गोपाल, ३. उदय ४. हुक्मा, ५. लक्ष्मण, ६. सालिगराम, ७. घासी, ८. जीवन, ९. राधाकिशन, १०. चिमन, ११. राजू १२. घासी पुत्र सीताराम, १३. सीताराम, १४. जीवन पुत्र राजाराम, १५. घासी पुत्र दयाराम, १६. मंगल, १७. फैंजुल्ला, १८. रामकिसन, १९. गोपी, २०. राजाराम, २१. दयाराम, २२. निरंजन, २३. कुशल पुत्र सेवा, २४. सालिगराम बड़ा, २५ गोविन्द, २६. गोविन्दराम, २८. हरिनारायण, २९. रामजीदास, ३०. शिवराम, ३१. उस्तालाल, ३२. गुमना तथा ३३. पन्नालाल आदि कलाकार व्यस्त थे। साहिब राम इस समय भी काम कर रहे थे। सम्भवतः उन्होंने दीर्घ आयु प्राप्त की होगी। इन्होंने विश्वविख्यात रास मण्डल का १५'×६' आकार का विशाल चित्र १७७५ ई० में बनाया। यह चित्र संयोजन एवं कल्पना दोनों ही दृष्टियों से सुन्दर बन पड़ा है। नरसी चितेरा फलक ३ भी दर्शनीय रचना है।

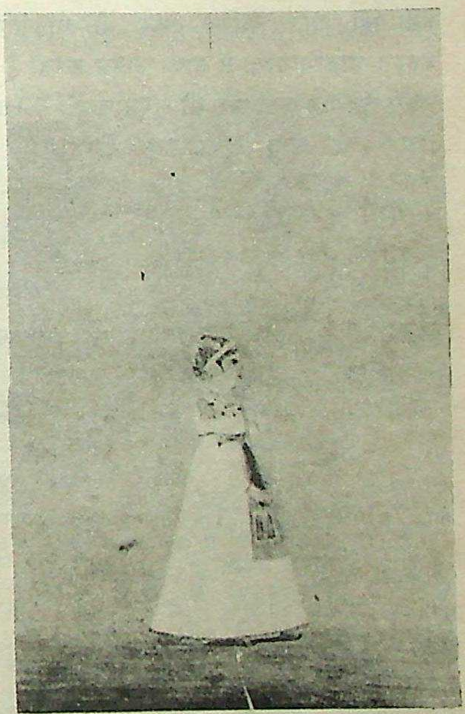

३

उन्नसवीं शताब्दी में पहुँचते पहुँचते हम देखते हैं कि कलाकारों ने विदेशी प्रभाव ग्रहण करना शुरू

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कर दिया था। यद्यपि यह स्वीकार करना पड़ेगा कि प्रभावों के उपरान्त भी उन्होंने मौलिक सृजन किया, वस्तुतः प्रभावों को अपनी इच्छानुसार ही स्वीकार किया। यह स्थिति पुनरूत्थान काल के आते आते तो काफी बिगड़ चुकी थी। फिर भी इन कलाकारों का ऐतिहासिक दृष्टि से महत्त्व है। कम्पनी प्रभाव लिये जयपुरी ठाठ को समेटे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे पहले कलाकार गुमना १८०० ई० फलक ४ है। इस समय तक 'मेम' और 'साब' बनाने का प्रचलन काफी बढ़ गया था। परम्परागत भवन और सज्जा में साब की गोद में मेम बैठी दोनों प्रेम प्रसंगों में व्यस्त हैं। चित्र को भव्य रूप देने के लिए पारिचारिकाएं खड़ी हैं। तैयारी में कोई कमी नहीं आती लेकिन फिर भी आकृतियों में जकड़न भावभिव्यक्ति में बाधा उत्पन्न करती है और रचना केवल कौशल भर सी लगने लगती है। इसके ठीक विपरीत साधू लच्छी राम १८२६ ई० कल्पना शील कलाकार हैं जिसकी रेखाओं में सधाव और कल्पना में निजस्व दर्शनीय है। यहां प्रकाशित फलक ५ उनका स्वचित्र है। इसके अतिरिक्त एक वर्ष बाद इन्हीं के बनाये हुए नायिका के चित्र में विरह की अभिव्यक्ति, काम की पीड़ा, सुन्दर प्रतीकात्मक रूप से उभरी है।

४

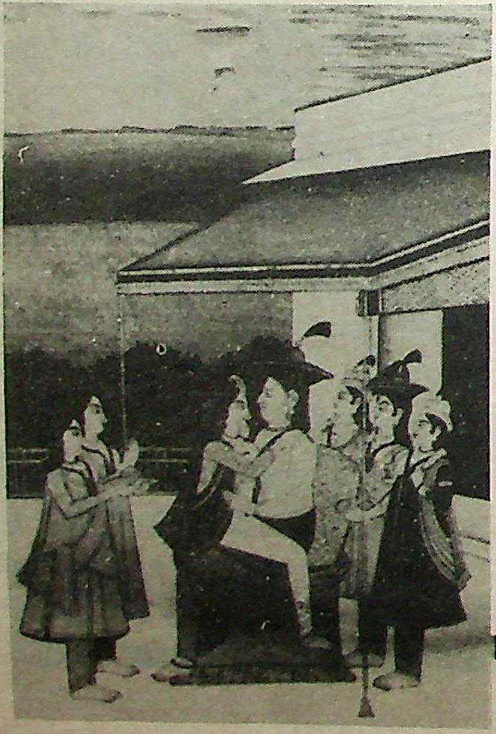

५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सवाई जयसिंह के काल तक आते आते कला में ह्रास प्रारम्भ हो गया था। इस समय भी साहिब राम एवं उसके समकालीन कलाकार परम्परा को जीवित रखने में लगे हुए थे। अन्य कलाकार यूरोपीय दृश्य चित्रों से बुरी तरह प्रभावित होते जा रहे थे।

महाराजा सवाई जयसिंह II (१८१८-३५) और सवाई रामसिंह (१८३५–८०) के काल में फोटोग्राफी और विदेशी प्रभाव लगभग पूर्ण रूप से छा गया था इस समय १ फकीरा, २. रामजी, ३. मंगल, ४. रामचन्द्र, ५. मोहनलाल, ६. रामलाल, ७. गंगाबक्श, ८. माधोलाल, फलक ६, ९. बक्ता १०. केसा और ११. रामलाल आदि कलाकारों के नामों के उल्लेख मिल जाते हैं।

७

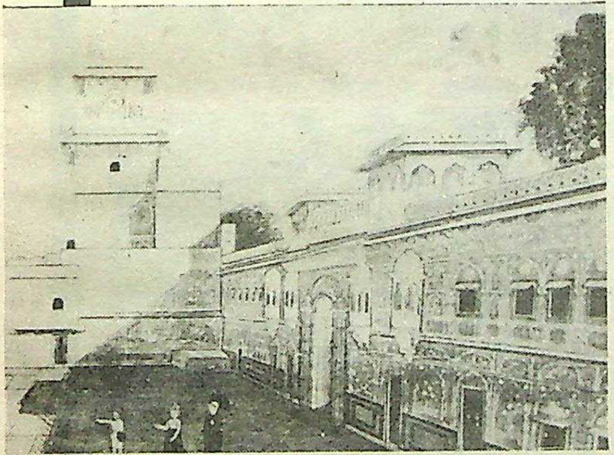

६

८

महाराजा रामसिंह द्वारा १८५७ में मदरसे हुनरी के नाम से स्थापित संस्था जो बाद में महाराजा स्कूल ऑफ आर्टस एण्ड क्राफ्ट्स के नाम से प्रसिद्ध हुई, के प्रथम आचार्य सी. एस. वैलेन्टाइन बने। इनके साथ मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट्स के शिक्षकों का समूह भी आया था। यह स्वतंत्र

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

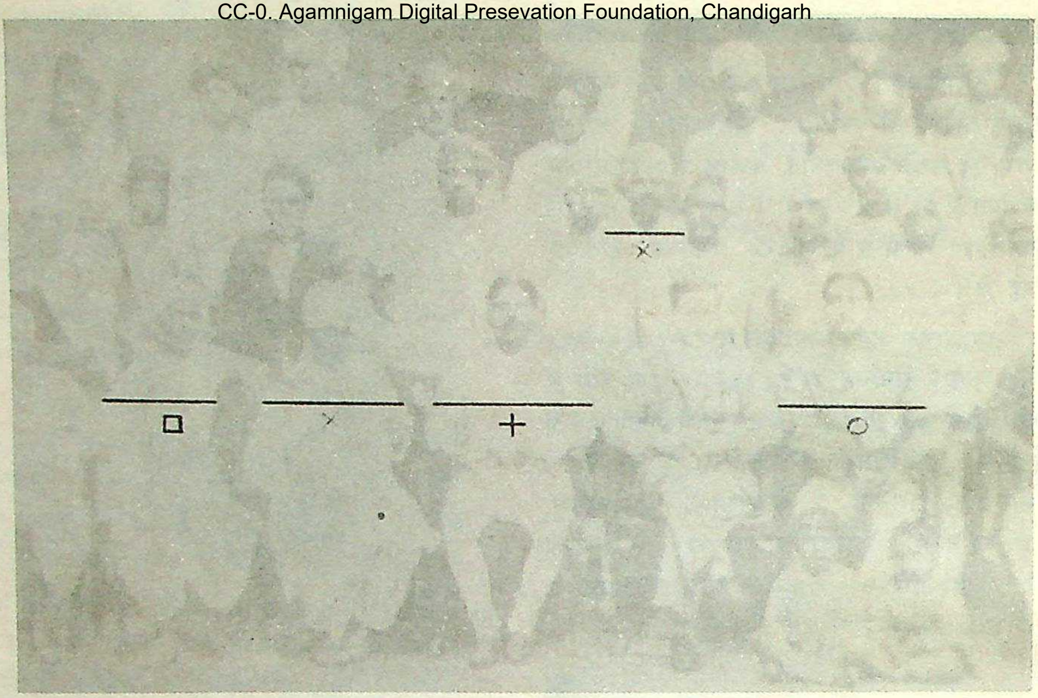

९

संस्था रही जो सीधी महाराजा रामसिंह की देख-रेख में चलती थी। उपेन्द्र बाबू फलक ७, शंकर दयाल सक्सेना, असित कुमार हल्दार फलक ८, हिरण्मय राय चौधरी, के. के. मुकर्जी + फलक ९, शैलेन्द्र नाथ डे, फलक ११ में बैठे हुए, चित्र फलक १० एवं रामगोपाल विजयवर्गीय, फलक ११ में खड़े हुए आदि इस संस्था के आचार्य रह चुके हैं। यहाँ विधिवत अध्ययन की व्यवस्था हुई। आजकल यह संस्था राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस के नाम से किशन पोल बाजार में ही पुराने भवन में स्थित है।

१०

११

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

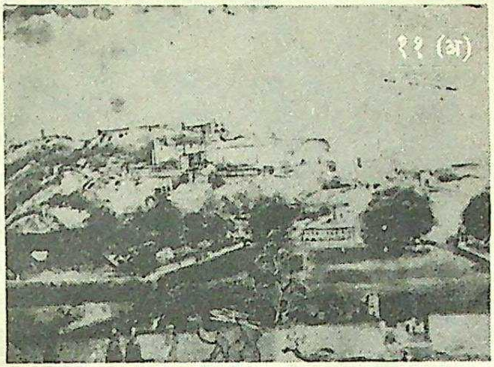
११ (अ)

5811

सवाई माधोसिंह II (१८८०–१६२२) के काल में भी विदेशी प्रभाव बढ़ता ही गया। यद्यपि इस समय भी परम्परागत शैली का निर्वाह कुछ कलाकार कर रहे थे पर तैयारी में कमजोरी साफ दिखने लग जाती है। इस समय १. गंगाबक्श पुत्र लक्ष्मीनारायण, २. पन्ना, ३. गोपीराम, ४. गोपीनाथ पुत्र बालगोविन्द, ५. गोपीनाथ पुत्र बंशीनाथ, ६. गंगाबक्श पुत्र गोविन्द, ७. मुरली, ८.छाजू राम पुत्र रामचन्द्र, ६. मोहनलाल शर्मा, १०. रघुनाथ पुत्र रामचन्द्र, ११ नन्दराम, १२. कालुराम, १३. गोपीनाथ, १४. जगन्नाथ, १५. गंगाबक्श एवं १६. गोपीराम आदि कलाकारों के नामोल्लेख मिलते हैं।

अब २० वीं० शताब्दी के कलाकारों के बारे में विस्तृत सूचनाएं मिलने लगती हैं। पैतृक व्यवसाय के रूप में काम करने वाले कलाकार घरानों में तो आज भी कलाकार मौजूद हैं और काम कर रहे हैं। मुरली जी पोथी खाने में काम करते थे इनका चित्र फलक १२ यथार्थवादी शैली में बना दृष्टिक्रम का बखूबी निर्वाह करता है। कबूतरों के भुण्ड में भी दूरी का आभास दिया है। एक-एक बारीकी को सफलता पूर्वक उभारा है। इस चित्र में रोशनी के खम्बे के नीचे घूंघट में बैठी स्त्री और उसके दो बच्चे में मिनियेचर का बारीकी यथार्थ

१२

का निर्वाह और कलाकार का अध्ययन साफ देखा जा सकता है। तस्वीर लघुचित्र तकनीक में ही बनी है। इनके पुत्र मोहन लाल शर्मा फलक १३ स्वचित्र है। इनका पाँच सात वर्ष पहले ही स्वर्गवास हुआ है। रचना, फलक १५,१८६६ में बनाई गई नवलगढ़ के ठाकुर महाराज साईल सिंह की तस्वीर है। गलीचे में आधुनिकता और आकृति में फोटोग्राफी का प्रभाव इसमें स्पष्ट देखा जा सकता है। इन्होंने दर्शनी तस्वीरें लघुचित्र शैली में भी खूब बनाई हैं। सब तरह का ही काम करते थे। इनके

१३

१४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुत्र महीपाल जन्म १९२५, की संगीत और ज्योतिष में भी रुचि थी। महाराजा स्कूल आफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स से क्ले मॉडलिंग में १९४२ में डिप्लोमा प्राप्त किया। १९४८ से बून्दी महाराजा के यहाँ कलाकार और आर्किटेक्ट का दोनों ही कार्य किये। १९५२ में वहाँ से आकर मेडिकल कालेज, जयपुर म्यूजियम, पुरातत्व विभाग एवं कृषि विभाग में कार्य भी किया पर कोई नौकरी रास नहीं आई। फिल्म लाइन में आकर देसी विदेशी फिल्मों के बैनर का काम भी किया। ४'× ६' में ईरानी पोलो की बनाई हुई तस्वीर आज भी स्व० महाराजा मान-सिंह के निजि संग्रह में है। इनके चित्र फलक १६ में भी यथार्थ और परम्परा का मिश्रण देखा जा सकता है। दुबले से फलक १४ पर बहुत तेजी से जल्दी काम करते थे। ज्यादा जी नहीं सके।

१६

१५

एक और घराना रामचन्द्र मुसव्वर का है। रामचन्द्र मुसव्वर के नाम से जयपुर में आज भी गली है। यह उस समय कलाकारों में राज्य से जो मान सम्मान मिलता था उसका ज्वलंत प्रमाण है। रामचन्द्र मुसव्वर की तस्वीर 'भोपजी नाथावत का बेटा' का पोर्ट्रेट रामसिंह काल की छाप लिये यथार्थ वादी शैली में सुन्दर चित्र है। आश्चर्य इस बात का है कि यथार्थ वादी प्रभाव को आत्मसात कर इन्होंने मिनियेचर की बारीकी भी कायम रखी। रामचन्द्र पेनटर (पेन्टर) ने तस्वीर हीरा लाल जी का चेला की' पोर्ट्रेट भी बनाया है। बहुत ही अच्छा फिनिश पोर्ट्रेट यह शक अवश्य पैदा कर देता है कि रामचन्द्र मुसव्वर और पेन्टर कहीं अलग-अलग तो नहीं हैं। पर तैयारी के स्तर पर दोनों ही चित्र लगभग बराबर हैं। अब "कलम रूघनाथ की बेटा

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

रामचन्द्र मुसव्वर का निजरी साल गिरह मिति भादवा बुदी ६ संवत १६७४ ग्रामेर का दृश्य है ग्रौर इसी तकनीक में लगभग टिन्टेड ड्राइंग से मिलता जुलता फलक ११ (अ) चित्र है। रामचन्द्र के बेटे छाजू राम ने भी पोर्ट्रेट बनाये हैं। इनका बनाया हैण्डले का चित्र ग्रच्छा यथार्थ प्रभाव लिये हुए है। इन्हीं के भाई गंगाबक्श बेटा राम चन्दर का, फलक १७, सभी प्रकार के चित्र बनाते थे। यह प्रमाणित होना कठिन लग रहा है कि क्या यही गंगा बक्श स्कूल ग्राफ ग्रार्टस में शिक्षक थे ? गंगा बक्स बेटा लछमी नारायण चित्रकार का, फलक १८ ग्रंग्रेजी कागज पर बना लगभग स्केच सा चित्र ग्रौर है।

गणेश जी फेडवाल सिटी पैलेस में ही नौकरी करते थे। स्व० महाराजा सवाई मानसिंह को ग्राप चित्रकला सिखाते भी थे।

एक घराना ग्रौर जिसका पीढ़ियों से कला से सम्बन्ध रहा है, वे हैं ईसर जी। इनकी रचनाएं देखने को नहीं मिल सकीं। इनके पुत्र खाजू राम जी फलक १६ मन्दिरों में काम करते थे। ग्रजमेर की नसियां में ग्रापने काम किया। कला के ग्रतिरिक्त दुखी लोगों का मेसमेरेजम से इलाज भी करते थे।

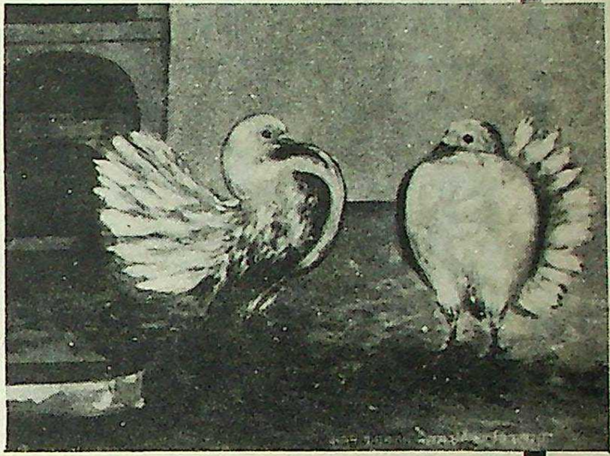

१८

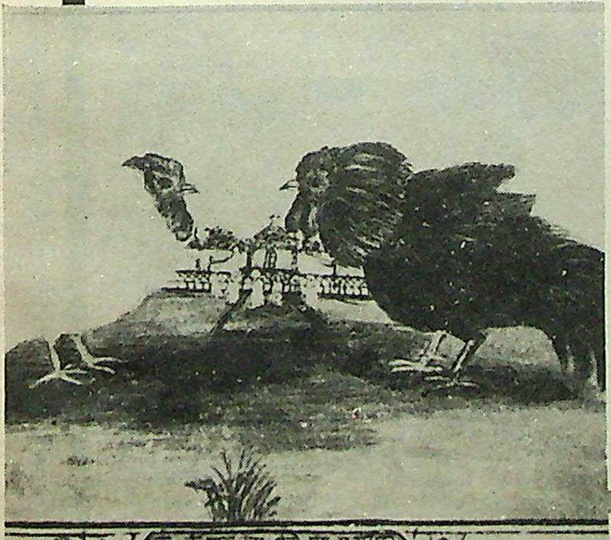

१७

नाथू लाल जी महाराजा माधोसिंह के मर्जीदान कलाकार थे। पोथी खाना में काम करते थे ग्रौर एक बुर्ज पर ग्रलग ही बैठते थे। जब भी इच्छा होती माधोसिह जी इनके पास ग्राकर बैठ जाते थे। इज्जत इतनी कि दो घोड़े लाने ले जाने के लिये तैनात रहते थे। याद इतनी लाजवाब कि किसी सभा में बैठते तो उन सब चेहरों को देखकर दूसरे दिन पूरे ग्रुप की तस्वीर बना देते थे। शिव का ताण्डव नृत्य इनकी रचना फलक २० दर्शनीय है। इनका चित्र फलक २१ है। ग्रभी हाल में स्वर्गवासी हुए गेंदी लाल जी काला इन्हीं के शिष्य थे। नाथू लाल जी के पुत्र भौंरी लाल जी, फलक २२ खुल्ला (फ्री लान्स) काम करते थे। ज्यादा उम्र नहीं जी सके। इनके पुत्र यजेन्द्र प्रकाश शर्मा ग्राज भी कार्यरत हैं। दूसरे भाई बुद्ध करण शर्मा भी मेडिकल कालेज से सेवा मुक्त हुए हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जिनके नाम ही मालूम है वे श्याम लालजी पोथी खाने में कलाकार थे, शिकार, दरबार दृश्य, राम लीला आदि विषयों पर परम्परागत शैली में काम करने के साथ यथार्थवादी शैली में भी काम करते थे। रघुनाथ जी भी पोथी खाना में ही काम करते थे। संभवतः पांच सात वर्ष पूर्व ही स्वर्गवासी रघुनाथ बाबा मिनियेचर में अच्छी गति रखते थे। नारायण लाल जी कुमावत, अनुकृति बनाने में कुशल तैल रंगों में पोर्ट्रेट बनाने में विशेष दक्ष थे। इन्होंने ख्याली तस्वीरें भी खूब बनाईं। माधोजी खोवाल पुरानी बस्ती में रहते थे। त्रिपोलिया बाजार में इनका स्टूडियो था। तैल रंगों में पोर्ट्रेट बनाने के साथ फोटोग्राफी भी करते थे। स्टूडियो के अतिरिक्त पैलेस में ही नौकरी करते थे। रामप्रसाद जी अलवर महाराजा के निजि कलाकार थे। महाराजा जयसिंह इन्हें भाई साहब कहते थे। वहा के पोथी खाने में अफसर से अनबन होने पर जयपुर आ गये और यहीं बस गये। उन्हीं के भाई बिशन जी भी अलवर महाराजा से नाराज होकर नौकरी छोड़ आये और

१९

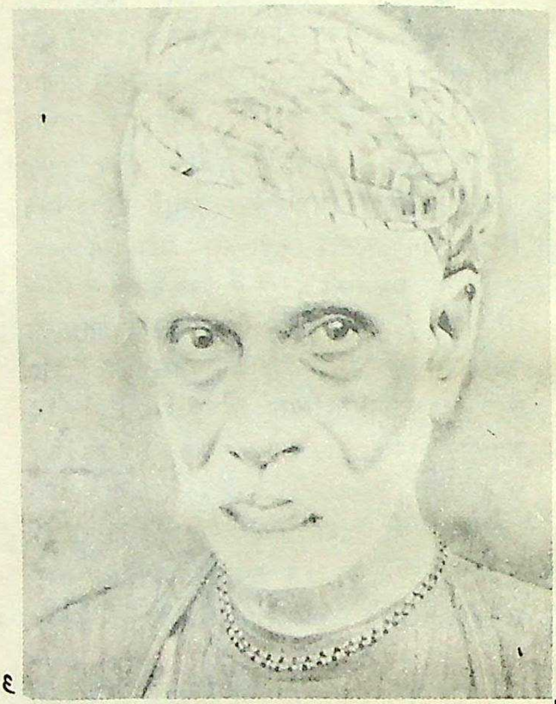

२०

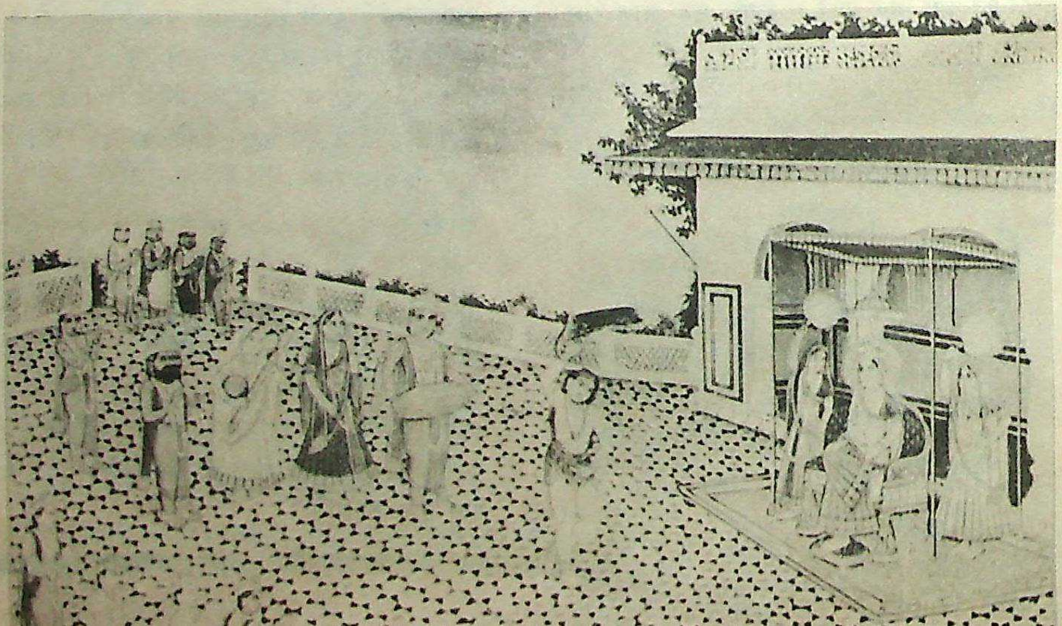

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जयपुर में बस गये। इन्होंने दर्शनी तस्वीरें खूब बनाई हैं। रघुनाथ जी पंवार जयपुर में जन्मे, उदयपुर महाराजा के मर्जीदान होकर फिर वहीं बस गये। सब तरह का काम करने वाले रघुनाथजी पंवार ख्याली तस्वीरें भी अच्छी बनाते थे। बद्री जी बारू खुल्ला ही काम करते थे। तैल और जलरंग दोनों ही माध्यमों पर इनका अधिकार था। पुरानी बस्ती के निवासी इनके पिता मोहन जी बारू भी यही काम करते थे। छुट्टूजी बारू तेल और जलरंग दोनों ही माध्यमों में पर्दे खूब बनाते थे। भौंरी लाल जी (डाडाबाज) कुमावत नमक की मण्डी में रहते थे। मकानों एवं मन्दिरों में तैल व जलरंगों में काम करते थे। नाथू लाल जी माली आर्ट स्कूल के पीछे रहते थे। फोटो पर पहले तैलरंग (फुलेरा पेन्टिग) लगाकर उसे रंगीन करना और सजावट के लिए ऊपर से काम करना इनकी विशेषता थी। सोने के

२१

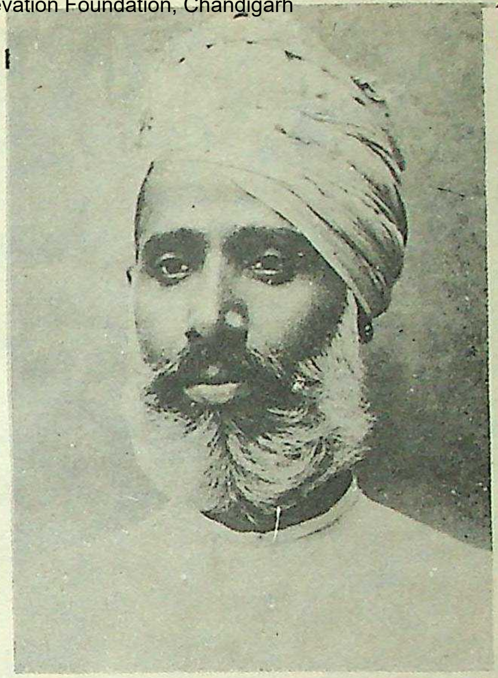

२२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

काम में भी माहिर इन्होंने ऐसी तस्वीरों को बढ़िया फिनिश दी है। हजारी लाल जी कड़वारिणया पर्दे बनाने और मकानों में चित्रण का काम करते थे। राम गोपाल जी पटेल ने खूब ख्याली तस्वीरें बनाई। हजारी लाल जी कड़वारिणया की रचना बाबा हरिशचन्द्र मार्ग में गणेश जी के दरवाजे में स्थित गणेश जी के मन्दिर में देखी जा सकती है। यथार्थवादी चित्रण के साथ काल्पनिक अंकन इनकी विशेषता है। अन्दर शिवबरात का चित्र कल्पना शक्ति का उदाहरण चित्र कहा जा सकता है। गणेश जी (मर्द) इसी दरवाजे में रहते थे। देशी कागज पर यथार्थवादी शैली में काम करते थे।

लाला जी दिल्ली वाले नाथूलाल जी के सम-कालीन हाथी दांत पर चित्रण करते थे। मिलाण (पोर्ट्रेट) का काम करने में खूब अच्छी फिनिशिंग करते थे। काम बस अंग्रेजों का ही करते थे। हिन्दुस्तानियों से न जाने इन्हें क्यों चिढ़ थी। पर-दाज के काम में इनका कोई सानी नहीं था। लक्ष्मीनारायण जी चोपल भी पोथी खाना में ही काम करते थे। राम सहाय जी कुदाल के नाम का भी उल्लेख मिलता है। रामचन्द्रजी फेडवाल और मक्खन जी फेडवाल मन्दिरों का काम करते थे। कालूरामजी डैरोलिया अचरोल ठाकुर साहब के रास्ते में रहते थे। तैल रंगों में पोर्ट्रेट ज्यादा बनाते थे। बहुत नजाकत पसन्द, लियाकत वाले कालू-रामजी अच्छे कपड़े पहनने के बेहदशौकीन थे।

२४

२५

२६

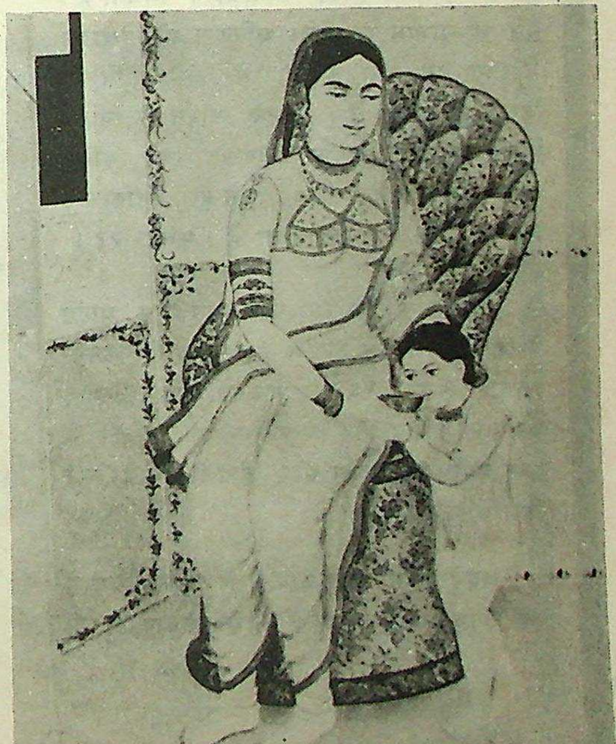

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आज जयपुर रेल्वे स्टेशन पर कृपालसिंह द्वारा बनाये गये गणगौर के चित्र में नारायण जी पटेल ने तकनीकी सहयोग दिया था। १९६१ में स्वर्गवासी इन्होंने इन्दौर के महलों में भी काम किया। जयपुर के चन्द्र महल को भी सजाया। इनके परिवार के एक पुत्र ब्लूपॉटरी में आज भी काम कर रहे हैं दूसरे दामोदरजी एवं लल्लूजी की दिनेश प्रिन्टर्स के नाम से बाबा हरिशचन्द्र मार्ग में प्रेस है। गोविन्द नारायण जी फोटोग्राफर चौगान जी की तरह ख्याली तस्वीरें तैल रंगों में बनाते थे। बाबा हरिशचन्द्र मार्ग में दरवाजे से सीधे जाकर खेजड़े के रास्ते के चौराहे पर बने भैंरूजी के मन्दिर में चित्रण इन्हीं द्वारा किया हुआ है।

शिवनारायणजी 'चौगानजी' कुमावत, विशिष्ट कलाकार हैं। ज्यादा न जी सके पर अजन्ता शैली का परिष्कृत रूप इनकी रचनाओं में मिलता है। तैल रंग माध्यम पर इतना अधिकार और रेखांकन में इतना दम तथा कल्पना में उतनी मौलिकता बिरली ही मिलती है। दैनिक जीवन के चित्रण में भी अलंकारिकता का आवरण रखा लेकिन अध्ययन के मामले में चित्र देखते ही कलाकार के प्रति श्रद्धा से सिर झुक जाता है। फलक २३।

मोहनलाल शर्मा राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में शिक्षक थे। कम उम्र में ही स्वर्गवासी इनकी रचनाएं, फलक २५ वाश में बनती थीं। राजस्थानी कलम का प्रभाव और अलंकरण की बारीकी के साथ यथार्थवादी दृश्य और बंगाली प्रभाव सारे चित्र में छाया मिलेगा।

जयपुर रामनिवास बाग में स्थित म्यूजियम में कुछ अनुकृतियां बनी हुई हैं हरीनारायण, मुरली गोविन्दनारायण, गैंदालाल, बद्रीनारायण एवं नन्द की रचनायें आज भी देखी जा सकती हैं।

सालगराम की बनाई तस्वीर फलक २६ कागज पर बनी हुई बहुत अच्छी फिनिश तस्वीर तो है पर रेखांकन में कम्पनी प्रभाव की जकड़न वहाँ साफ

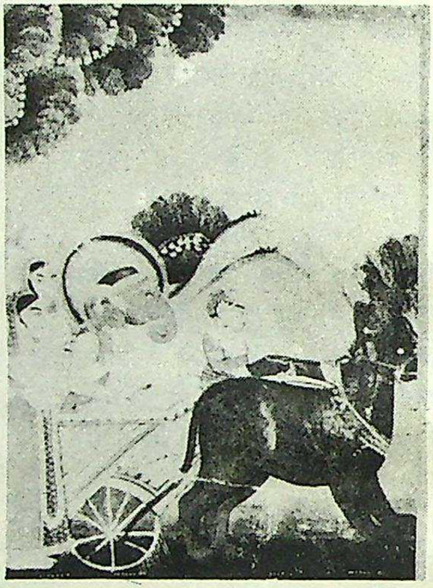

२७

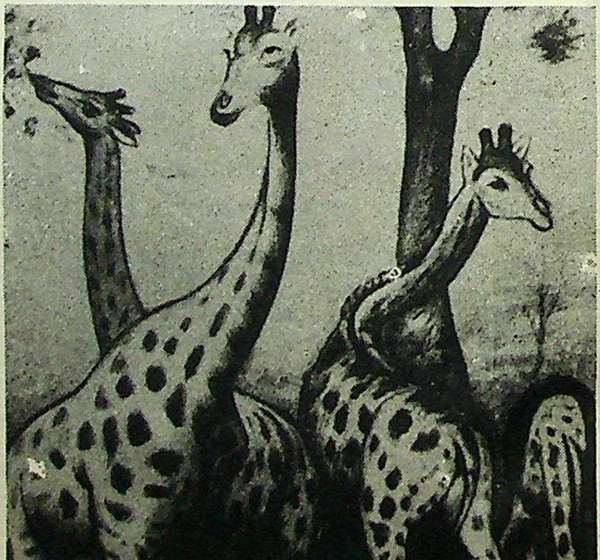

२८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिखाई देती है । घासीराम का गनेशजी की सवारी का चित्र फ. २७ जयपुर शैली की बाद की शैली की प्रतिनिधि रचना है । दोनों पर ही हस्ताक्षर ऊपर से किये हुए हैं । चार जिराफों की तस्वीर फलक २८ चित्रकार नाथु की बनाई हुई है । साल गिरह पर इस चित्र को संवत १९४१ में नजर किया गया था । गणेश ने रामनिवास बाग के रीछ का चित्र १९५० में बनाया था ।

रामप्रताप संभवतः महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स के विद्यार्थी रहे हैं क्योंकि इनकी रचना पर १९०७ वर्ष अंकित होने के साथ स्कूल ऑफ आर्ट्स भी लिखा हुआ है यह गंगा की तस्वीर है । इन्होंने यर्थाथ वादी शैली में पौराणिक एवं दैनिक विषयों के चित्र फलक २९ खूब और अच्छे बनाये हैं । काल्पनिक उड़ान के बाद भी इनकी सीताजी या राधाजी जयपुर की ही कोई सुन्दरी लगती है । अंकन में दूरी का आभास देने में इनकी रचनायें बेमिसाल हैं । कुछ पोर्ट्रेट फलक प्रभाववादी सा प्रभाव लिये सुन्दर व्यक्तिचित्र हैं । इन पर कलाकार ने अपना नामोल्लेख नहीं किया पर उन्मुक्तता के साथ वास्तविकता के कारण, लगता है कहीं राम प्रताप के ही बनाये हुए न हों । फलक ३० के चित्र की खूबसूरती और कलाकार का अध्ययन दर्शनीय है ।

२९:

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

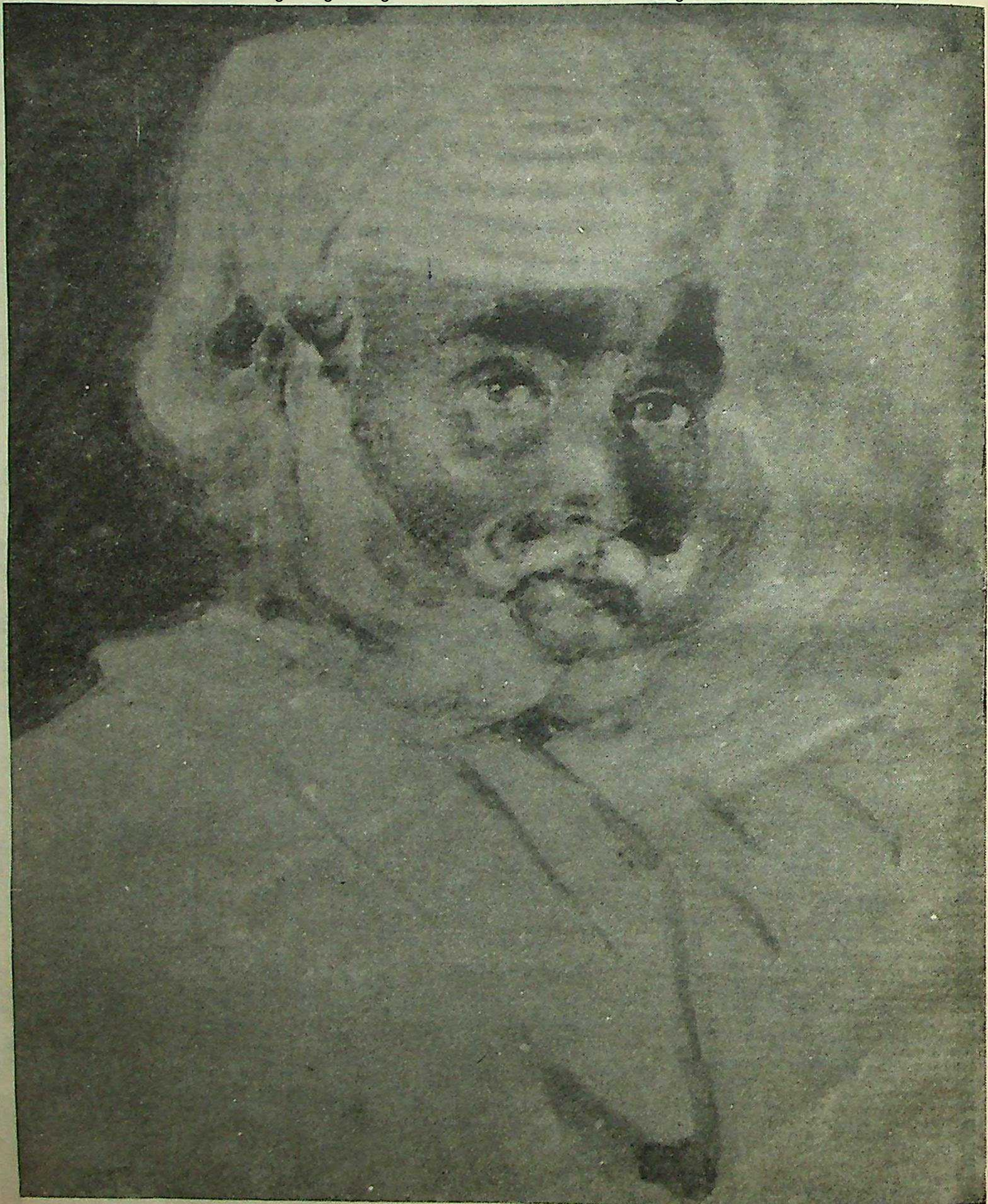

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आज भी परम्परागत शैली में काम हो रहा है। वंश परम्परा से यह काम जिन्हें पैतृक व्यवसाय के रूप में मिला वे अभी भी रचनारत हैं। बेशक अवस्था की कठिनाई भुगत रहे हैं लेकिन ब्रुश बाँधना, रंग तैयार करना और नये विषय बनाने की कल्पना करना, ये सब श्रेष्ठ तरह से यही कर सकते हैं।

'नान्हा जी' यजेन्द्र प्रकाश शर्मा

सोलह वर्ष की आयु में ही पिता श्री का स्वर्गवास हो गया। अतः दादा श्री नाथूलाल जी से काम सीखा। जयपुर सिटी पैलेस में २१ वर्ष तक सेवा की और अलवर के राजकीय संग्रहालय में ग्यारह वर्ष की सेवा के बाद १९६४ में सेवा मुक्त हुए। राजस्थानी शैली फ० ३१ के साथ यथार्थवादी काम भी करते हैं। चित्र फलक ३२।

स्टूडियो टिक्की वालों का रास्ता, म. नं. ८३७ किशनपोल बाजार, जयपुर।

कल्याण सहाय शर्मा

महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स से १९३९ में डिप्लोमा प्राप्त किया। शिक्षा विभाग में १९४३ से १९७७ के सेवाकाल में विभिन्न

३१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

संस्थाओं में कला शिक्षा कार्य किया। वाश में आपने कई अच्छे चित्र बनाये हैं। 'अन्तिम समय' चित्र लेखक को आज तक याद है जो बचपन में देखा था। प्रस्तुत रचना फ़० ३३ में फिनिशिंग दर्शनीय है। चित्र फलक ३४।

स्टूडियो बाबा हरिश्चन्द्र मार्ग, म. नं. ६९४, जयपुर।

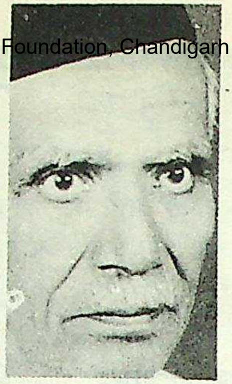

३२

३३

नरबदीलाल शर्मा

महाराजा स्कूल आफ आर्ट्स के ही विद्यार्थी नरबदी लाल शर्मा ने १६३८ में डिप्लोमा प्राप्त किया। इसी संस्था से जो अब राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स है से १९७५ में अवकाश प्राप्त कर अपने घर पर ही साधना में जुटे हैं। एक विशिष्ट प्रकार के जयपुर शैली के ही मकान में छोटे से सादगी भरे कार्यकक्ष में इन्हें ऐतिहासिक धार्मिक एवं जन जीवन को चित्रित करते देखा जा सकता है। भिश्ति से पानी पीते हुए आदमी, विलियम ओमन्स का रेखा चित्र, महाराजा सवाई मान सिंह का बचपन, हुक्का पीते हुए ग्रामीण, पेड़ के पीछे छिपी कृष्ण को निहारती राधिका, तीतरों का समूह एवं गांधीजी का चित्र इनके पास अब भी देखे जा सकते हैं। स्वभाव से सीधे साधे, ठेठ जयपुरी लहजे में जीते, बेहद सफाई पसन्द, माथे पर बड़ी लाल गोल टीकी लगाये नरबदी लाल उम्र के बोझ से झुक तो गये हैं पर साधना में कमी नहीं आने दी। मूलतः मिनियेचर तकनीक व शैली में इनके काम में अच्छी परदाज और तैयारी है। फलक ३५, ३६।

३४

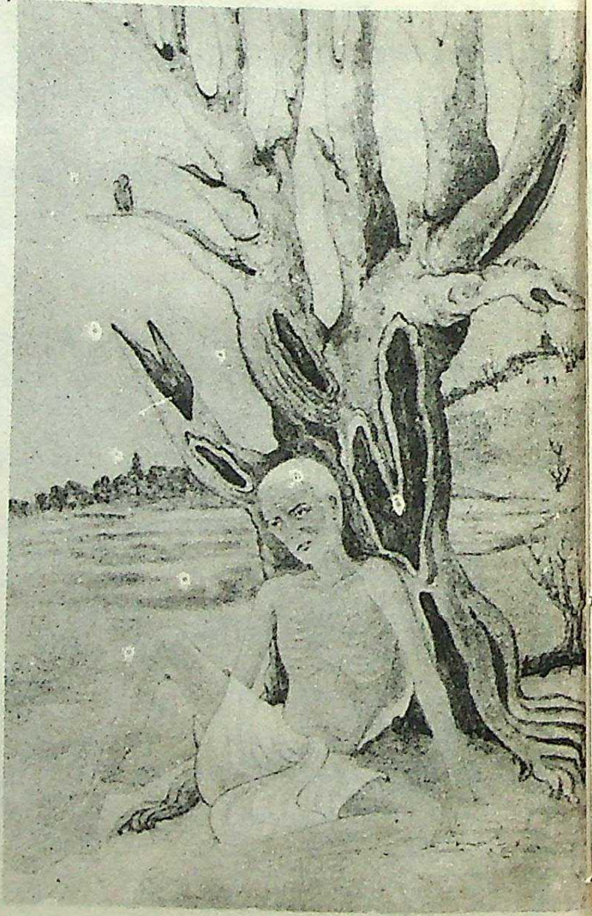

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्टूडियो : मिश्रराजा जी का रास्ता, जैन मन्दिर के पास, मं. नं. ८४५, जयपुर ।

छुट्टनलाल जी

आज लगभग ८२ वर्ष की उम्र पर पहुँच गये हैं। अब तो दिखाई भी कम देता है । चलने के लिये भी सहारे की आवश्यकता होती है । लगभग ३५ वर्ष पूर्व पोथी खाने से अपनी स्वेच्छा से छुट्टी ले ली । फिर स्वतंत्र ही काम किया । इनके चार पुत्र बाबूलाल, नवलकिशोर, मुन्नालाल एवं कौशलकिशोर सब अपना पैतृत ही काम करते हैं ।

स्टूडियो जाट के कुंए का रास्ता, पंचवीरों के कुएं की गली, म. नं. १५३१, जयपुर ।

सुन्दर लाल शर्मा 'श्याम सुन्दर'

पैतृक व्यवसाय को आज भी अपनाये बिलकुल। मस्तमौला रूप में सुन्दर लाल जी देखते ही कलाकार लगेंगे । मुँह पर तक, जरुरत के समय गिलेरी की ब्रश पोंछ डालते हैं । हाथ पर ब्रश की लाइनें और कपड़ों पर रंग के धब्बे, हमेशा खोये से, धोती बाँधे बगल में बस्ता और ब्रश की डिब्बी दबाये, वृद्धावस्था में भी तेज चलते हुये कोई कलाकार

३६

३५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जयपुर की गलियों में कहीं आता जाता दिखाई दे जावे तो समझ लीजिये वह सुन्दर लाल जी ही हैं। पोथी खाने के बाद खुल्ला ही काम किया। वैसे कुछ समय के लिये वनस्थली विद्यापीठ में भी अध्यापन के लिये गये पर बन्दिश बर्दास्त न कर सके। गंगा बक्ष और रघुनाथ बाबा के परिवार से सम्बन्धित हैं।

बृह्मानन्द शर्मा

गणेश जी फेडवाल के पुत्र दरबार मिडिल स्कूल से कुछ वर्षों पूर्व ही सेवा मुक्त हुए मास्टर जी तैल रंगों में विशेष रुचि रखते हैं। व्यक्ति चित्र और दर्शनी तस्वीरें दोनों ही साधिकार बनाते हैं। सीधे, सरल इनकी रचनाओं, रंगों में गाम्भीर्य दर्शनीय है।

स्टूडियो : बाबा हरिश्चन्द्र मार्ग, मालियों का चौक, जयपुर।

जगन्नाथ शर्मा

जयपुर में १९१२ में जन्म। महाराजा स्कूल आफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्टस से १९३१ में चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया। कला विरासत में मिली। राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स से १९६७ में सेवा मुक्त। चन्द्र महल एवं राष्ट्रीय भवन में अन्तकरण का काम कर चुके हैं। आजकल जयपुर की बनी मूर्तियों पर रंग करने का काम कर रहें हैं। फ ३८।

स्टूडियो : खूंटेटों का रास्ता, जयपुर

वेदपाल शर्मा 'बन्नू'

वेदपाल "बन्नू" महीपाल का पुत्र उदार और मितभाषी फलक है। बन्नू ने राजस्थानी चित्र शैलियों का गहन अध्ययन किया है। आज किसी भी शैली में विशेषज्ञ यदि कोई है तो केवल बन्नू। लगभग पैंतीस वर्ष के इस युवक ने आधुनिक चित्रों में कुछ काल्पनिक चित्र बनाये हैं जो लीक से हट कर हैं। चाहे वे पन्सिल में बने हों या रंग से रेखांकन में दमखम और फिनिशिंग में गजब की बारीकी के साथ यह महत्त्वपूर्ण है कि बन्नू केवल कौशल के पीछे नहीं जाता उसे मालूम है तस्वीर में

३७

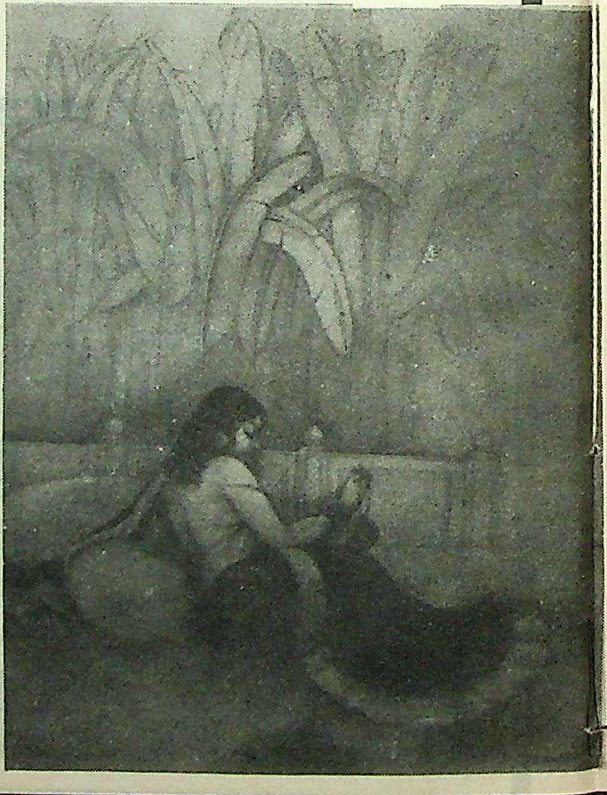

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किस जगह पर ज्यादा और कम तैयारी देनी है। यदि फ्रान्सिसी कलाकार माने की वीनस उसी की अनुमति होकर भी क्रान्तिकारी मौलिक रचना है तो बन्नू की यह नारी आकृति फलक ३७ परम्परा और यथार्थ के बीच की सुन्दर कड़ी ही नहीं आधुनिक राधा मानी जायगी। चित्र फलक ३६।.

•

स्टूडियो : मोहन चित्रकला मन्दिर, सुभाष चौक, जयपुर।

३८

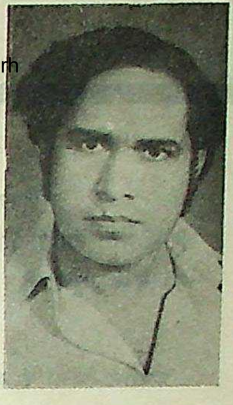

३९

मोहनलाल शर्मा

सुन्दरलाल जी के पुत्र मोहनलाल भी कुछ वर्षों से जयपुर नहीं रह रहे हैं। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस से डिप्लोमा प्राप्त इन्हें चित्रण के साथ लेखन (पाण्डुलिपि के अक्षर लिखने) में भी दक्षत प्राप्त की है। रंगों की तैयारी और संयोजन में अपनी मौलिकता रखने वाले आप सभी शैलियों में साधिकार काम कर सकते हैं।

राधेश्याम शर्मा

सुन्दरलाल जी के दूसरे पुत्र कुछ समय तक सरकारी सेवा में भी रहे पर कला क्षेत्र में ही आ गये। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स के विद्यार्थी रह चुके हैं। सामाजिक पचड़ों से कोसों दूर, लघुचित्र शैली के लिये ही समर्पित इन्हें सभी शैलियों का अच्छा अध्ययन है।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

उभरती प्रतिभाएँ

परम्परा शैली के चित्रों की बढ़ती लोकप्रियता ने अनुकृति को अत्यधिक प्रोत्साहन दिया है। मांग ज्यादा होने के कारण चित्र बनाने में ज्यादा से ज्यादा व्यक्ति जुट गये। ऐसे कलाकारों की लम्बी सूची है। जो कुछ भी ठीक काम कर रहे है यहाँ उन्हीं का उल्लेख किया जा रहा है।

प्राचीन चित्रों के व्यापार के साथ इस शैली के काम करने वाले कलाकारों की आवश्यकता अनुभव हुई। धीरे-धीरे कुछ अच्छे चित्रकार तैयार हुये जो इस परम्परा में दक्ष, प्रतिष्ठित कलाकार हैं। जिनके नाम इस पूरे विवरण में कहीं न कहीं उल्लेखित हो चुके हैं, उनके अतिरिक्त इरशाद, माध्यम में अधिकार के लिये सुप्रसिद्ध हैं। इकराम और उस्मान दोनो भाई हैं और सभी शैलियों पर समान अधिकार रखते हैं। रमेश और उसके भाई सुरेश तथा कृष्णा भी इस क्षेत्र में अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। रमेश चन्द्र शर्मा अब भी स्कूल ऑफ आर्टस में अध्ययन कर रहे हैं, उनके भाई भानू दोनो ही अच्छा काम कर रहे हैं। जगदीश प्रसाद अजमेर रोड़ पर कामां हाऊस में रहते हैं, पिछवाई तस्वीर और हाथीदांत की पटरी तीनों पर ही बहुत बढ़िया काम करते हैं। रमेश ग्रामीण राजस्थान ललित कला अकादमी से पुरस्कृत राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस के विद्यार्थी आज कल बम्बई में हैं, अनुकृति से साक्ष तस्वीरों के रेस्टोरेशन का काम भी साधिकार करते हैं। एक राधेश्याम 'अनाडी' अच्छी फिनिशिंग और अपनी कल्पना से किसी भी शैली में सुन्दर संयोजन बनाने में सक्षम हैं। इनके भाई कालूराम ने भी अच्छा अभ्यास किया है। महेंन्द्र सिंह शेखावत के पास कई विद्यार्थी काम करते हैं। स्वयं अच्छे कलाकार पिछवाई बनाने के लिये जाने जाते हैं। अस्लम और अख्तर बाल कलाकार मुगल पन्नों पर काम कर रहे हैं। शंकरलाल झालाणियों के रास्ते में रहते पर्दे बनाने के लिये मशहूर थे। उनके साथ सुदेश कुमार जो आजकल दिल्ली रह रहे हैं कांगड़ा के मास्टर आर्टिस्ट हैं। बाबूलाल शर्मा राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस से डिप्लोमा प्राप्त चित्र एवं मूर्ति दोनो ही माध्यमों में गति रखते हैं। मूर्ति मोहल्ले में निवास परम्परा शैली में भी इनका अच्छा अभ्यास है। महेन्द्र कुमार शर्मा स्कूल ऑफ आर्टस में अध्ययन कर चुके हैं। अब मुगल और राजस्थानी दोनों ही प्रकार का काम अच्छा कर रहे हैं। राम चरण स्कूल ऑफ आर्टस में अध्ययन कर रहे हैं साथ ही विरेन्द्र कुमार शर्मा के कार्यकक्ष पर परम्परागत शैली में काम सीख रहे हैं। तोताराम पांचाल स्कूल ऑफ आर्टस में अध्ययन के साथ परम्परागत शैली में भी कार्य करते हैं। कई जगह व्यापारियों के यहाँ १०–२० कलाकार काम करते हुए मिल सकते हैं पर उनके नाम खोज पाना कठिन है क्योंकि न वे अपना नाम बताना चाहते हैं और न व्यापारी लोग उनका नाम जानने देते हैं। यह निश्चित है कि आज इस प्रकार का काम करने वाले कलाकार जिन्हें यह शिक्षा न भी मिली हो उन्हें मिला कर पाँच-सात सौ तक हैं। इन्हें खोज कर उनकी प्रतिभा को उजागर करने के लिये अलग से पुस्तक प्रकाशित करने की आवश्यकता होगी।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुनरुत्थान काल

नवजागरण के समय कला भी प्रभाव से बच नहीं सकी थी। देश के प्रति अथाह श्रद्धा ने अंग्रेजों को ही बाहर निकालने का संकल्प ले लिया व उनके सभी प्रभावों को उखाड़ फेंकने हेतु कृत संकल्प हो गये। बंगाल से प्रारंभ हुए इस आन्दोलन में जयपुर का उल्लेखनीय योगदान रहा है। उन कलाकारों का परिचयात्मक विवरण प्रस्तुत है।

बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में जयपुर के या यहां आकर बसे कलाकार पुनरुत्थान काल से प्रभावित रहे हैं। इन्होंने पाश्चात्य प्रभाव त्यागने का प्रयास किया और भारतीयता के पक्षधर होकर मिनियेचर, वाश आदि तकनीकों में स्वतंत्र मौलिक चित्रांकन किया। उन्नीसवीं सदी के उत्तरार्द्ध में जब कालीघाट चित्र परम्परा ही शेष बची थी, पच्छिमी साम्राज्यवाद ने यहां की कांगडा की कोमलता किशनगढ़ की कमसिन कल्पना और मुगल की तैयारी को धू धू कर स्वाहा कर दिया। आश्चर्य की बात है कि अंग्रेजों द्वारा ही भारतीय संस्कृति में दिलचस्पी लेने के कारण भारतीय कला का अध्ययन होना प्रारम्भ हो सका। नवीन खोजों द्वारा काल के गर्त से ढकी हमारी कला हमें देखने को मिली। उस समय लगभग यह स्थिति थी कि भारतीय, अंग्रेजी किस्म के चित्र बनाना चाहते थे और अंग्रेज भारतीय शैली के प्रशंसक बनते जा रहे थे।

कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना और ई० बी० हेवल की व्यक्तिगत दिलचस्पी के कारण कुमार स्वामी जैसे शोधक एवं कला पारखी तथा संरक्षक ने जन्म लिया। इण्डियन सोसाइटी ऑफ ओरीएन्ट्ल आर्ट ने अवनीन्द्र नाथ ठाकुर के मार्ग दर्शन में भारतीय कला छात्रों को देशज अभि-व्यक्ति की ओर उन्मुख किया। रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने भी कुमार स्वामी के साथ भारतीय कला पर चिन्तन किया, उसका प्रचार-प्रसार किया। बेशक जो कलाकार तैयार हुए वे चीनी जापानी और पश्चियन प्रभावों से पूर्णतः मुक्त तो नहीं हो सके फिर भी लगता था उनकी रचनाएं भारतीय हैं। अवनीन्द्र नाथ टैगोर ने एक लम्बी शिष्य परम्परा स्थापित की। नन्दलाल बोस, आसित कुमार हल्दार, समरेन्द्र नाथ गुप्ता, वैंकटप्पा, विनोद बिहारी मुकर्जी, मुकुल डे और शारदा उकील आदि कला-कारों ने अपनी साधना को भारतीय गन्ध दी जिसे समाज ने जाना और स्वीकार किया।

इसी शिष्य परम्परा से आसित कुमार हल्दार जयपुर आये और महाराजा स्कूल ऑफ आर्टस के प्रिंसिपल बने। बाद में के० के० मुकर्जी आचार्य और शैलेन्द्र नाथ डे, उपाचार्य जो नायब साहब के नाम से ही प्रसिद्ध हुए ने यह कार्य भार संभाला। इन्होंने जयपुर की कला को प्रभावित किया और पुनरुत्थान काल में बंगाल द्वारा प्रारम्भ किये भारतीयता को पहचानने के महान यज्ञ में जयपुर को भी साथ ले लिया।

रामगोपाल विजयवर्गीय

इन्हीं शैलेन्द्र नाथ डे के छात्र राम गोपाल विजयवर्गीय आज सत्तर पार कर चुके हैं। विजय

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

वर्गीय महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफ्टस जो अब राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स के नाम से विख्यात है, के प्रिंसिपल बने और इसी पद से १९६६ में अवकाश ग्रहण किया। देश के महत्त्वपूर्ण संग्रहालयों एवं निजी संग्रहों में विजयवर्गीय के चित्र

४०

देखे जा सकते हैं। इन्हें चित्र के साथ साथ कविता कहानी व लेखन में भी उतनी ही रुचि है। सारी शिक्षा दीक्षा परम्परागत तरीके से ही ली इसलिए उर्दू, फारसी पर भी इनका अधिकार है। बेहद मितभाषी, संकोची, उदार हृदय, खूब पैसे से सरोबार और फक्कड़ ये सारे ही गुण देखने हों तो इसी रूप में मिल सकते हैं। रसिकता इतनी कि चाहे चित्र हो चाहे स्वयं किसी को भी इर्ष्या हुए बिना नहीं रहती।

१९५७ में राजस्थान ललित कला आकादमी की स्थापना हुई तो इन्हें उपाध्यक्ष चुना गया। १९५९ में आकादमी द्वारा पुरस्कृत विजयवर्गीय को इसी वर्ष साहित्य आकादमी ने इनकी कविता पुस्तक "अभिसार निशा" के लिये पुरस्कृत किया। राजस्थान का सर्वोच्च कला सम्मान 'कलाविद्' सर्व प्रथम राम गोपाल विजयवर्गीय को देकर ललित कला आकादमी ने अपना कर्तव्य पूरा किया।

राजस्थानी चित्रकला को इन्होंने संभाला, ढूंढा और दूसरे लोगों को समझने के लिये प्रेरित किया। आज यदि कोई चित्र दो-पांच लाख में बिकता है तो इसके पीछे विजयवर्गीय की व्यापारिक बुद्धि और अपनी कला के प्रति प्रेम ही कारण है।

मेघदूत, रसिक प्रिया, कृष्ण लीला व ऐतिहासिक विषय ही नहीं विजयवर्गीय ने जन जीवन को भी नजदीक से देखा और रूपायित किया है। उमर खैय्याम की रूबाइयों को मूर्त किया और उसकी साकी से दर्शकों को रूबरू कराया। फलक ४०।

स्टूडियो : विजयवर्गीय आर्ट गैलेरी, चौड़ा रास्ता, जयपुर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कृपालसिंह शेखावत

पुनरुत्थान काल के दूसरे कलाकर जो सीधे नन्दलाल बोस का शिष्यत्व प्राप्त कर जयपुर आये वे कृपाल सिंह शेखावत १९२४ में सीकर जिले के मऊ गांव में जन्मे थे। दसवीं कक्षा तक पिलानी में भूरसिंह शेखावत से कला शिक्षा ली साथ ही गांव के महादेव चेजारा और रामदेवा खाती से भी ज्ञान ग्रहण करते रहे। शान्ति निकेतन में ही चित्रकला में तीन वर्ष तक व्याख्याता भी रहे और फिर जापान जाकर माइदा सेसों, आता चाऊ, युकोयामा एवं ताइकान जैसे चित्रकारों का अनुभव भी लिया।

जयपुर आने पर पाबूजी राठौड का विवाह, पाबूजी की कालमी घोड़ी और एक फूलों की तस्वीर बनाई इसी समय आधुनिक नव कला दीर्घा में इनका चित्र खरीदा गया। शान्ति निकेतन के हिन्दी भवन में रामायण प्रसंग के चित्र, बिड़ला भवन नई दिल्ली में पाबूजी का विवाह, जयपुर के रेलवे स्टेशन पर गणगौर का जुलूस, जापान की परमाणु भट्टी में मंजू श्री का चित्र, ओबेराय इन्टर कॉन्टिनेन्टल दिल्ली में रास मण्डल का चित्र तथा अकबर होटल में अकबर का शिकार खेलते हुए चित्र कृपाल सिंह शेखावत ने बनाये हैं।

१९४४ में इन्होने आल इण्डिया फाइन आर्ट्स एण्ड क्राफट्स सोसाइटी से, १९५० में कलकत्ता फाइन आर्ट्स आकादमी द्वारा १९५८ में मध्य प्रदेश ललित कला आकादमी से पुरस्कार प्राप्त किया। राजस्थान ललित कला आकादमी से पांच बार पुरस्कृत हुए। इसी शृंखला में भारत सरकार ने १९७४ में कृपाल सिंह शेखावत को पद्मश्री से सम्मानित किया जो जयपुर ही नहीं राजस्थान भर के लिये गौरव की बात थी।

४१

केन्द्रीय ललित कला आकादमी के लिए आमेर एवं बैराठ बाघ, कांगडा के तीहरा और सुजानपुर के नर्बदेश्वर मन्दिर के भित्ति चित्रों की अनुकृति का दुष्कर कार्य इन्होंने किया और भारतीय संविधान की मूल प्रति में सज्जा का काम भी करने का गौरव प्राप्त किया।

चित्र ही नहीं कृपालसिंह शेखावत ने ब्लूपॉटरी में भी विशेषज्ञ का ज्ञान और कुशल कलाकार का कौशल हॉसिल कर लिया है। एचिंग में भी इनका अच्छा अध्ययन है। राम सिंह शिल्प कला मन्दिर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

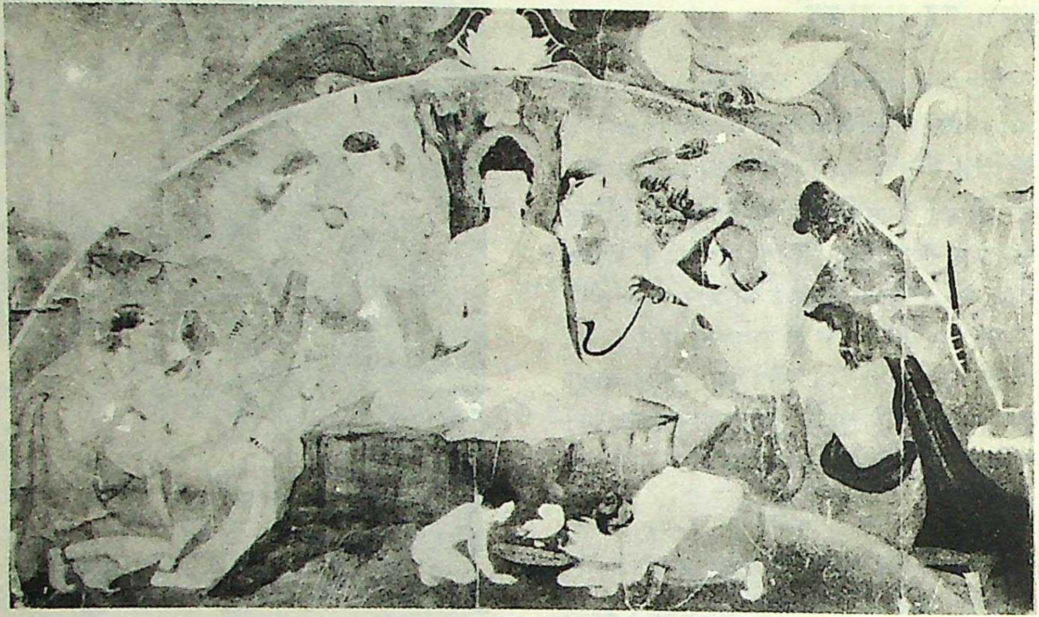

४२

के माध्यम से आपने कला शिक्षण भी किया और खूब शिष्य तैयार किये। फलक ४१।

स्टूडियो : बी १८ए, शिवमार्ग, बनीपार्क, जयपुर।

१६३५ में बनी मिश्र की रचना फलक ३४ में बंगाल स्कूल का प्रभाव खूब है। रामगोपाल विजय वर्गीय से बहुत मिलती जुलती इस रचना में सशक्तता है। अजन्ता का प्रभाव और बंगाल की कल्पना लेकर निर्मित इस रचना में वाश और टेम्परा दोनों तकनीकों को मिलाकर ही काम किया गया है। फलक ४२।

रामनिवास वर्मा अकाल मृत्यु के कारण ४५–५० वर्ष की आयु में ही स्वर्गवासी हो गये। कृपाल सिंह शेखावत के साथ शान्ति निकेतन में इन्हें कला शिक्षा मिली। बनस्थली विद्यापीठ में लम्बे समय तक अध्यापन कार्य करने के बाद राजस्थान ललित कला आकादमी में प्रदर्शनी अधिकारी के पद पर आये। मेंहदी मांडणों पर आकादमी से प्रकाशित इनकी पुस्तक बहुत प्रशंसित हुई। आपने केन्द्रीय ललितकला आकादमी के लिए नागौर के महलों में बने भित्ति चित्रों की अनुकृति का काम भी किया। लोक कला का प्रभाव लेकर कृष्ण लीला सम्बन्धित इनकी रचनायें फ० ४३, ४७ आकादमी से पुरस्कृत भी हुईं।

देवकीनन्दन शर्मा

बंगाल का प्रभाव लिये स्कूल ऑफ आर्ट्स

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

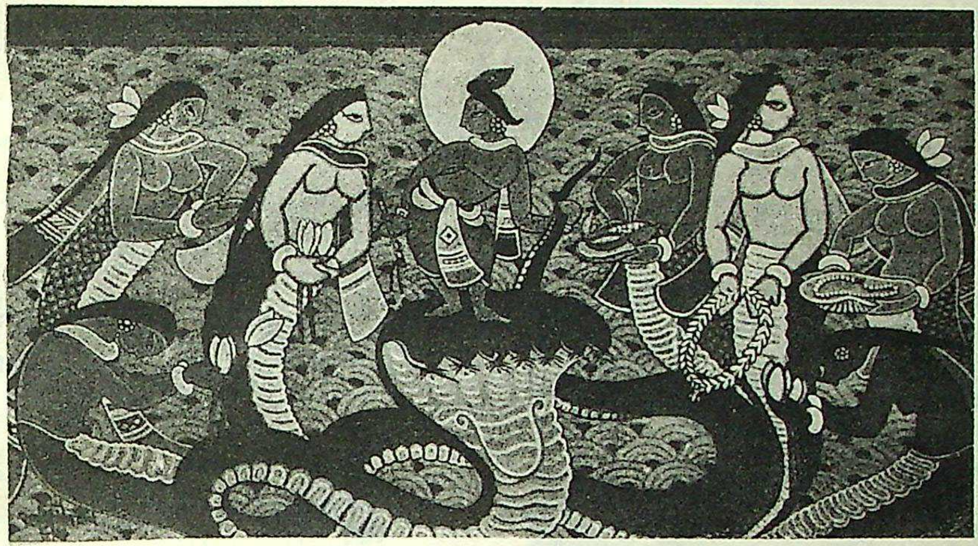

४३

जयपुर में और महत्त्वपूर्ण विद्यार्थी तैयार हुए वे हैं देवकी नन्दन शर्मा। अलवर राज्य के कवि कुल में जन्मे इनके पिता कवीश्वर मोहन लाल जयपुर में ही रहने लगे थे। देवकी नन्दन शर्मा ने १९३१ में महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स में प्रवेश लिया। पं० शिवनन्द एवं बाद में गंगा बक्स मुसव्वर से इन्होंने प्रारम्भिक शिक्षा प्राप्त की। बाद में शैलेन्द्र नाथ डे के प्रिय शिष्यों में से एक हो गये। डिप्लोमा प्राप्त करने के बाद भी शैलेन्द्र बाबू के पास घर पर अध्ययन करते रहे। अगस्त १९३७ से राजस्थान बालिका विद्यालय (अब बनस्थली विद्यापीठ) में शिक्षक पद पर नियुक्त हुए और इस केन्द्र को अन्तर्राष्ट्रीय कला जगत से परिचित करा दिया। और अध्ययन की लालसा ने इन्हें १९४६ में शान्ति निकेतन में नन्द लाल बसु के पास पहुँचा दिया। इसी समय, विनोद बाबू, जो हिन्दी भवन में फ्रेस्को बना रहे थे, के साथ काम में इन्होंने हाथ बँटाया। इनकी प्रतिभा से प्रभावित होकर नन्द लाल बोस ने इन्हें बनस्थली विद्यापीठ में जयपुर फ्रेस्को की तकनीक सिखाने हेतु शिविर प्रारम्भ करने की सलाह दी। यह प्रबन्ध इन्होंने किया भी जिसके लिये आज बनस्थली विद्यापीठ देश विदेश में जाना जाता है।

ललित कला आकादमी से पुरस्कृत एवं सम्बद्ध देवकीनन्दन शर्मा ने बम्बई जहांगीर आर्ट गैलेरी, जयपुर में आकादमी कला दीर्घा तथा १९७८ में आयोजित राष्ट्रीय कला मेला में अपनी एकल प्रदर्शिनियां कीं।

पक्षी चित्रण इनका प्रिय विषय है। १९६३ में लन्दन की ट्रायन कला वीथि के संचालक ट्रायन ने पक्षियों के चित्रों की प्रदर्शिनी की थी। इसमें ८ देशों के कलाकार प्रदर्शित थे। भारत के कलाकारों में इनके चित्र को प्रतिनिधित्व मिला। मोर,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कबूतर और कौवों का इनका विषद अध्ययन है। १९६७ में बम्बई की नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी ने भी इनके चित्रों की प्रदर्शनी आयोजित की। आज कल अपने पद से अवकाश प्राप्त कर चुके हैं व साधना में लीन हैं। फलक ४४।

स्टूडियो : ५ अरविन्द निवास, बनस्थली

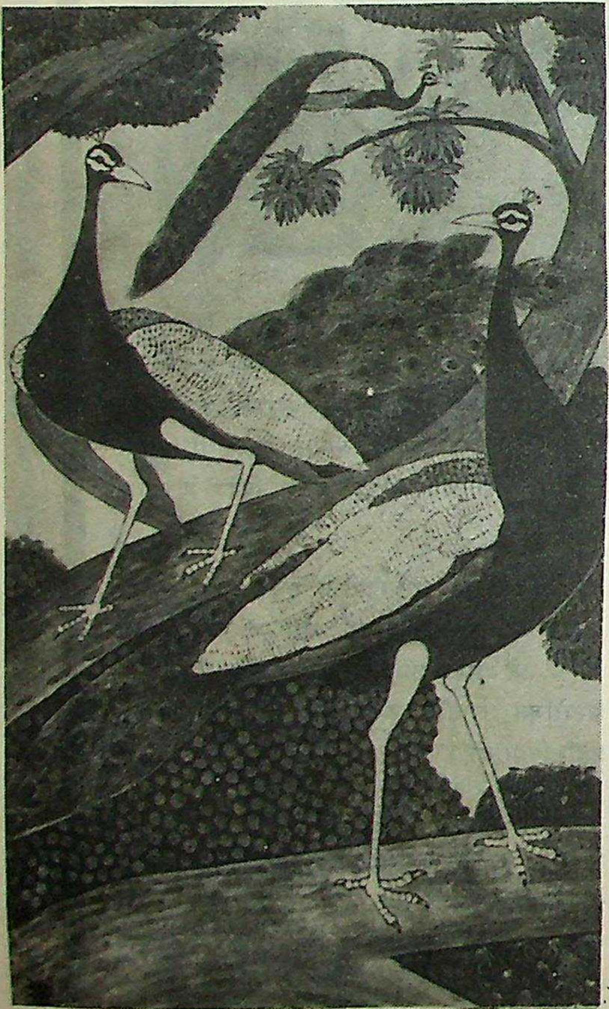

४४

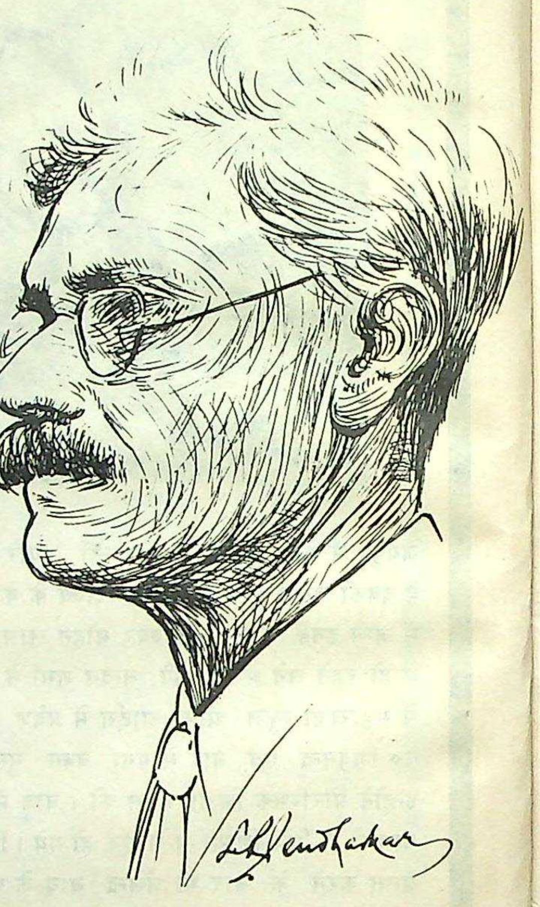

४५

ए० एच० मूलर

राजस्थान के कला इतिहास में मूलर प्रतिष्ठित नाम है। शिष्यों की लम्बी परम्परा तैयार करने वाला यह कलाकार ट्रावनकोर से था। १९१४ में बम्बई आर्ट सोसायटी से स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाला यह सौभाग्य शाली कलाकार १९६० में स्वर्ग

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

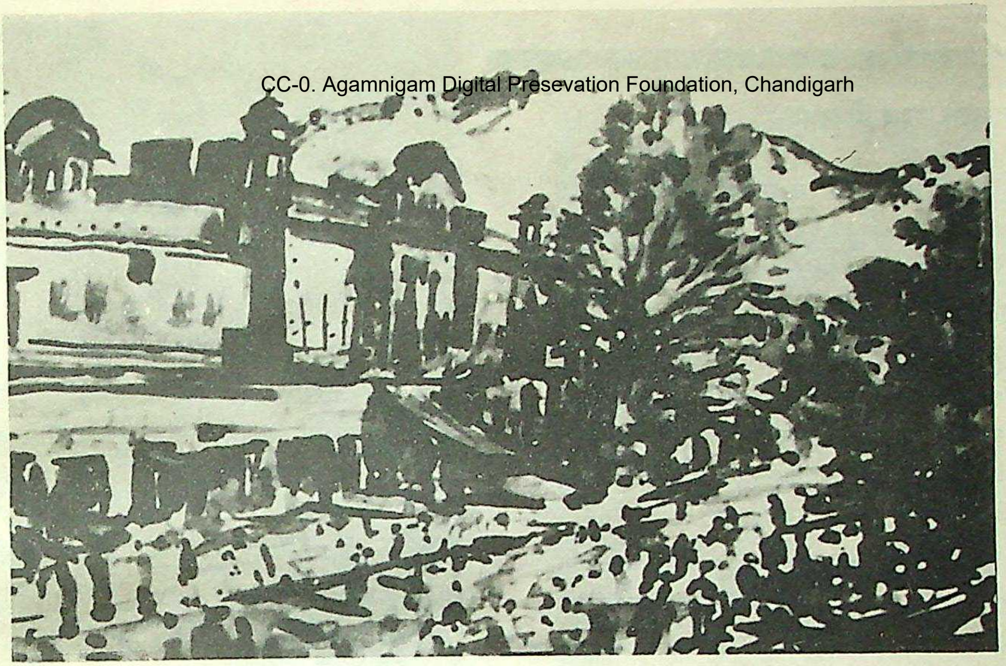

४८

सिधार गया। जोधपुर एवं बीकानेर के राजघराने में इनके खूब चित्र हैं। जयपुर में १९४५ के ग्रास पास ग्राये ग्रौर लगभग पांच सात वर्ष यहां रह, काम किया। राजा रवि वर्मा के बाद यथार्थवादी शैली में भारतीय विषयों को चित्रित करने वाला यह महत्वपूर्ण कलाकार देखा जाय तो पूरे राजस्थान में जीने वाला कलाकार था। फलक ४५।

रघुनन्दन शर्मा

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस् के विद्यार्थी यथार्थवादी शैली में सिद्धहस्त कलाकार रघुनन्दन शर्मा कुछ वर्षों पूर्व ही कला जगत से सदा के लिए दूर हुए हैं। मूर्तिकला में भी समान रूप से प्रवीण उन्होंने स्कूल ऑफ आर्टस् की महत्ता को दिल्ली में स्थापित किया। शिल्प भारती कला संस्था

मोनी सान्याल

१९१२ में राजशाही कलकत्ता में जन्मे। १९४६ से ग्रध्यापन कार्य कर रहे हैं। ग्राईफैक्स १९४९, ५०, ५४ ग्रौर ७६ तथा जहांगीर ग्रार्ट गैलेरी बम्बई में १९६१ ग्रापने ग्रपनी रचनाग्रों की एकल प्रदर्शनी ग्रायोजित की। राजस्थान ललित कला ग्राकादमी से पुरस्कृत इन्होंने १९६३ से राजस्थान विश्वविद्यालय महारानी कालेज में ग्रध्यापन किया ग्रौर कई शिष्य तैयार किये। तैल रंगों फलक ४९ एवं जलरंगों के साथ मूर्तिकला एवं संगीत में भी गति। सेवामुक्त होने के उपरान्त ग्रब उदयपुर में रह रहे हैं।

४६

४७

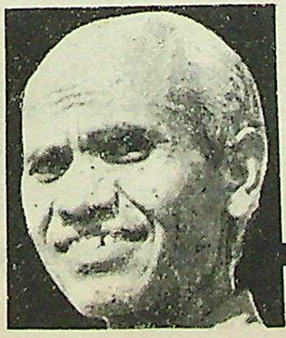

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लक्ष्मण राव पैंढ़ारकर

१ अक्टूबर १९१० में इन्दौर में जन्म। बम्बई से जी० डी० आर्ट १९३३। इतिहास में एम० ए० १९४२। बी० टी० १९४४। आपने १९२८ में पहला स्वर्ण पदक लेने के बाद कई स्वर्णपदक प्राप्त किये हैं। जबलपुर में ललित कला एवं इतिहास विषय के १९४७ से १९५० तक प्राध्यापक रहे। राजस्थान की एक मात्र अंग्रेजी मासिक पत्रिका 'मिसलेनी' के १९५७ से ६५ तक सम्पादक रहे। 'ग्लिम्पसेस् ऑफ रुरल राजस्थान,' १९६८ में प्रकाशित, के चित्रकार एवं सहलेखक एवं 'साउण्ड आफ म्यूजिक' १९७६ के चित्र कार थे। पाठ्य पुस्तक राष्ट्रीयकरण मण्डल के प्रमुख कलाकार, पैंढ़ारकार अब अपने कार्यकक्ष पर ही कार्यरत हैं। फलक ५०, ५३।

४९

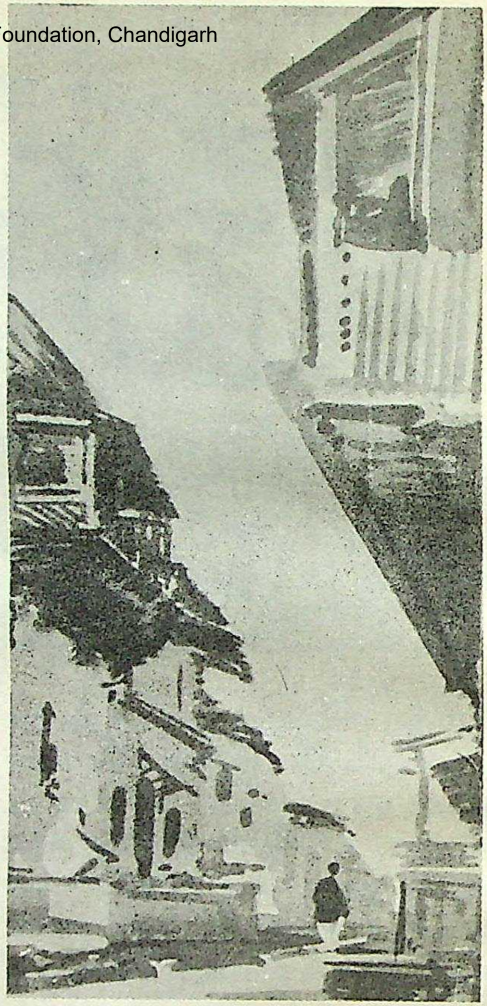

५०

पी० एन० चोयल

आजकल उदयपुर विश्वविद्यालय में रीडर, इनका जन्म कोटा में हुआ था। उल्लेख इसलिये किया जा रहा है कि आपने महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स से कला शिक्षा प्राप्त की थी। विजयवर्गीय शैली में खूब काम किया। कुछ कलाकारों के सम्म-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लित प्रयास से बने राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स के एक कक्ष में बने सीता स्वयंवर के चित्र में इनके भी हस्ताक्षर हैं। अब अमूर्त चित्र फ॰५१ बनाने के साथ भैंसों का आपने खूब अध्ययन किया है।

द्वारका प्रसाद शर्मा

बीकानेर में १९२२ में जन्मे द्वारका प्रसाद की कला शिक्षा उस्त परिवार से प्रारम्भ हुई। १९३५ तक इलाही बक्श उस्ता की शागिर्दी में मिनियेचर तकनीक का अध्ययन कर बीकानेर शैली के अच्छे चित्र बनाने लग गये थे। मूलर जब बीकानेर में रहे तो आपको उनके सानिध्य का लाभ भी मिला। विधिवत शिक्षा लेने की इच्छा से वशीभूत हो बम्बई केतकर कला संस्थान में प्रवेश लिया। पर पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण वापिस बीकानेर आना पड़ा। सिनेमा बैनर बनाने का काम प्रारम्भ कर खूब धन कमाया। राजस्थान ललित कला आकादमी के संस्थापक सदस्यों में से एक, इनकी रचनायें आकादमी द्वारा १९५८, ५९, ६०, ६१ एवं ६७ में पुरस्कृत हुईं। अपने चित्रों की १९६७ में दिल्ली में एकल प्रदर्शनी आयोजित की। चित्र राज भवन

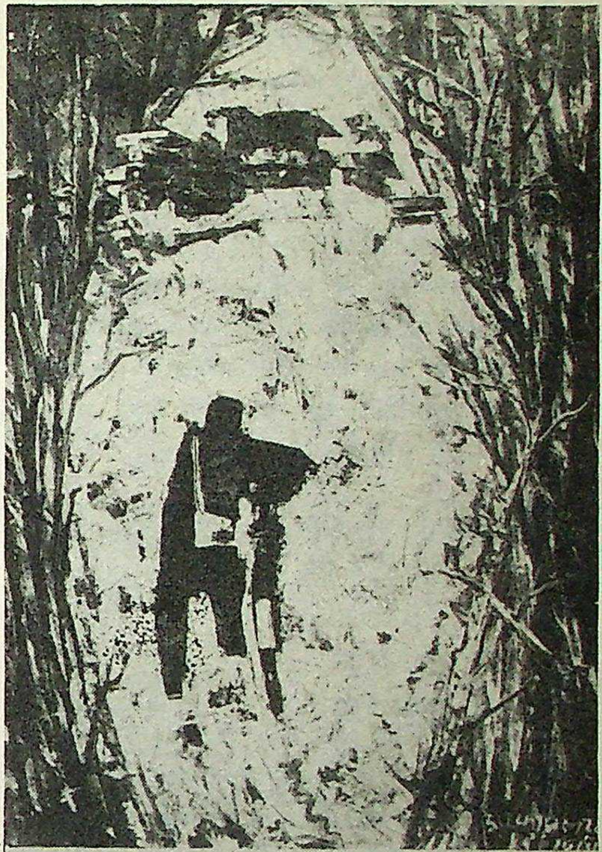

५२

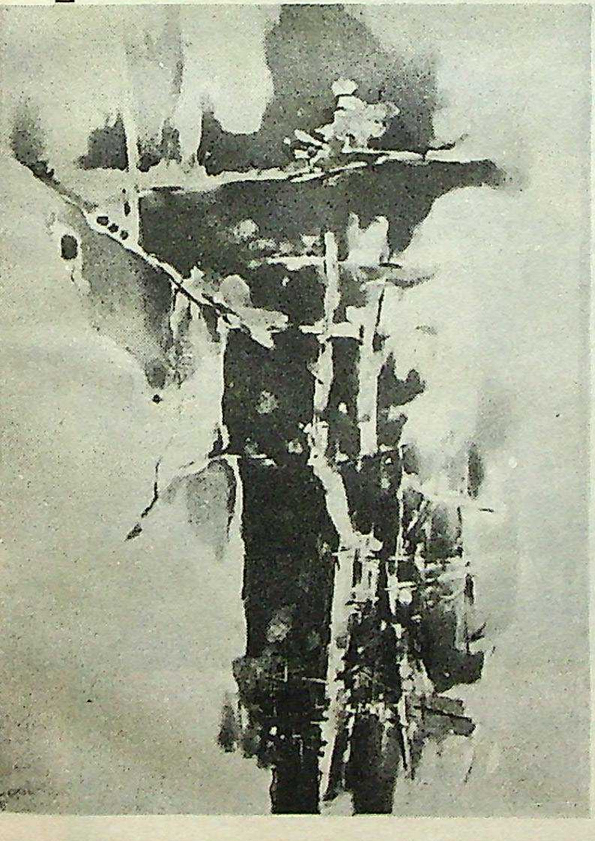

५१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जयपुर, जयपुर म्यूजियम एवं राजस्थान ललित कला आकादमी सहित निजी संग्रहों में भी सुरक्षित हैं। राजस्थान ललित कला आकादमी द्वारा कलाविद् की उपाधि से सम्मानित आकादमी ने इनके जीवन परिचय पर पुस्तक भी प्रकाशित की है। भित्ति चित्रण, जलरंग, तैल रंग, टेम्परा, पेस्टल आदि सभी माध्यमों पर अधिकार रखते हैं। एस० एम० एस० मेडिकल कालेज से सेवा मुक्त होने पर भी इनकी आवश्यकता अनुभव होने के कारण पुनः सेवा में लिया गया। आकादमी के उपाध्यक्ष रह चुके द्वारका प्रसाद शर्मा की रचना क्षमता में अभी भी बड़ा प्रवाह है, गति है। फलक ५२, ५४।

स्टूडियो : नवलगढ़ हाउस का आहाता, संसार चन्द्र रोड़, जयपुर।

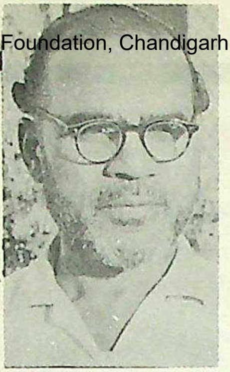

५३

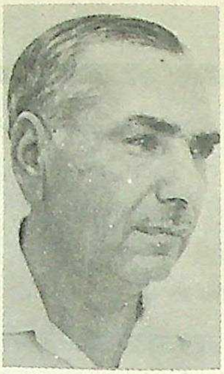

५४

डी. एन. घोष

जयपुर के कला जगत् में श्री घोष का अस्तित्व, बंगाल स्कूल के एक और प्रतिनिधि के रूप में स्वीकार किया जा चुका है। प्रदर्शन प्रचार से बिलकुल दूर इनके पास डिजाइनिंग की अदभुत् क्षमता और कल्पना में काव्यात्मकता दर्शनीय है। प्रेम प्रकाश सिनेमा में बुद्ध के जीवन से सम्बन्धित चित्र एवं मयूर सिनेमा के कैफे में विशाल चित्र इनकी रचनाएँ हैं। इसी प्रकार कई निजी संग्रहों में आपकी रचनाएँ देखी जा सकती हैं संम्प्रति खुल्ला (फ्रीलान्स) ही काम करते हैं। फलक ५५।

स्टूडियो : जे १५०, आदर्श मार्ग, जयपुर।

५५

श्रीमती घोष

कलात्मक वातावरण से सराबोर घर में श्रीमति

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

घोष काल्पनिक चित्रों के साथ यथार्थ जीवन को चित्रित कर उसकी विसंगतियों को बखूबी उभारती हैं। सम्प्रति मेडिकल कालेज में कलाकार के पद पर। फलक ५६।

स्टूडियो : जे १५०, आदर्श मार्ग, जयपुर।

मोहन लाल गुप्ता

जयपुर में ही १९२४ में जन्मे मोहन लाल गुप्ता राम गोपाल विजयवर्गीय के पुत्र हैं। अतः साहित्य एवं कला के प्रति अनुराग विरासत में ही मिला। १९५२ में राजस्थान कला संस्थान एवं फिर १९६१ राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से डिप्लोमा प्राप्त किया।

घर के वातावरण के बाद संग्रहालय सहायक के रूप में पुरातत्वएवं संग्रहालय विभाग में काम करना प्रारम्भ कर अब वहां अधीक्षक एवं शिक्षाधिकारी के पद पर कार्यरत हैं अतः वही वातावरण चारों ओर दिन रात रहता है। यही कारण है कि प्राचीन चित्रोंकी परख में इन्हें विशिष्टता प्राप्त है।

शोध लेख एवं गंवेषणापूर्ण निबन्ध भी खूब लिखे हैं। अब तक इनकी पांच पुस्तकों का प्रकाशन हो चुका है। गुलाबी नगर की गुलाबी यादें पुस्तक प्रकाश्य है।

पुरातत्व एवं संस्कृति से सम्बन्धित पचासों प्रदर्शिनियाँ इनकी देखरेख में आयोजित हुईं। अपने चित्रों की स्वतन्त्र एकल प्रदर्शनी संग्रहालय में आयोजित की जो खूब चर्चित रही।

राजस्थान ललित कला आकादमी की प्रदर्शिनियों में कई बार इनकी रचनाएं प्रदर्शित हुई हैं। आकादमी की विभिन्न समितियों एवं उपसमितियों के माध्यम से लम्बे समय तक सम्बद्ध भी रहे हैं।

अनेकों अन्तर्राष्ट्रीय व्यक्तियों को आपने जयपुर से परिचित कराया है और अब आधुनिक मिश्रित शैली के रूप में अपनी नयी शैली का निर्माण करने में व्यस्त हैं। संग्रहालय के अतिरिक्त आधुनिक कला दीर्घा जयपुर के भी प्रभारी है। फ ५७,५८।

स्टूडियो : विजयवर्गीय आर्ट गैलेरी, चौड़ा रास्ता, जयपुर।

५६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

५७

५८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समसामयिक कलाकार

दस पन्द्रह वर्षों के अल्प काल में ही राजस्थान ने देश के समसामयिक कला जगत में अपनी विशेष जगह बनाई है। जयपुर के कलाकारों का इस आन्दोलन में महत्वपूर्ण स्थान है। आज देश में जयपुर के कलाकार जाने जाते हैं, अपने मौलिक सृजन के लिये पहचाने जाते हैं। इस वर्ग में उन्ही को सम्मिलित किया गया है जिनकी कम से कम एक बार आकादमी की प्रदर्शनी में रचना प्रदर्शित हो चुकी है। यहां उनका संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत है।

कृष्णा शाह

१९२४ में जन्म। कला शिक्षा बम्बई एवं मध्य-प्रदेश में हुई। आकादमी द्वारा पुरस्कृत, जयपुर में आर्टस्टडो सर्किल का संचालन किया।

स्टूडियो गोविन्दराव जी का रास्ता, नई वालों का मकान, जयपुर।

जी० डी० त्यागराज

जन्म१९३०। मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट्स के स्नातक, लम्बे समय तक जयपुर में रहे। मद्रास, कलकत्ता, एवं राजस्थान में कई बार पुरस्कृत। देश के अलावा इनकी रचनाएं रोम और अमरीका में भी प्रदर्शित हुईं।

आनन्दकिशोर अग्निहोत्री

सीधे-साधे 'मास्टरसाब' अग्निहोत्री का चित्रण पैतृक व्यवसाय है। १९३१ में कानपुर में जन्मे थे। प्रारम्भिक शिक्षा करांची, पाकिस्तान में हुई। करांची स्कूल आफ आर्टस एवं मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स लाहौर के बाद कानपुर में कला का अध्ययन किया और कानपुर में ही अध्यापन भी प्रारंभ कर दिया। नूतन कला मन्दिर बम्बई में भी अध्ययन करने के बाद राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से १९६४ में विधिवत डिप्लोमा की परीक्षा पास की। १९६८ में इलाहाबाद बोर्ड से इन्टरमीडियेट की परीक्षा पास की। प्रारंभ में रा० माध्यमिक कन्या विद्यालय चौड़ा रास्ता में शिक्षक नियुक्त हुए। संस्था के अतिरिक्त कला की ट्यूशन भी करते हैं इसी कारण विद्यार्थियों में 'मास्टर साहब' या अग्निहोत्री जी के नाम से सुपरिचित हैं। तैल रंगों से पोर्ट्रेट, वाश

५६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

फ. ५९ में सिद्ध ,काल्पनिक चित्र बनाते हैं । इन्होंने श्रीमती केनेडी का तैल चित्र भारतीय परिधान में रानी एलिजाबेथ का चित्र जलरंगों में तथा पण्डित नेहरु एवं अन्य विशिष्ट व्यक्तियों के तैलचित्र बना चुके हैं । अध्यापन के बाद व्यक्ति चित्र व्यवसाय । संम्प्रति राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में शिक्षक ।

स्टूडियो : सुगन निवास, जगदीश मार्ग, बनीपार्क, जयपुर ।

श्रीमती सावित्री शर्मा

१९३२ में जन्मी सावित्री शर्मा ने १९४४ में आई. जी. डी. एवं राजस्थान कला संस्थान जयपुर से १९५३ में डिप्लोमा पास किया । १९५३ में विशारद की परीक्षा उत्तीर्ण की । जयपुर में आयोजित विभिन्न ग्रुप प्रदर्शिनियों में भाग लिया । सम्प्रति राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में शिक्षिका

स्टूडियो : माउन्ट व्यू , तिलक नगर, जयपुर सी-७१,

रणजीत सिंह

१९३४ में जोधपुर में जन्मे रणजीत सिंह जे० चूडावाला के प्रारम्भिक गुरू सुन्दर लाल जी जांगिड रहे । १२–१३ वर्ष की आयु में उन्होंने इन्हें स्केच करने की प्रेरणा दी । जीवन को देखकर चित्रित करना सिखाया । वहीं से दसवीं कक्षा पास कर,दो वर्ष के लिये कोटा चले गये । कोटा में पी० एन० चोयल ने वाश तकनीक सिखाई । उन्हीं की प्रेरणा से फिर जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट्स से डिप्लोमा प्राप्त किया । अहमदाबाद रहे तो रवि शंकर रावल से सीखा और जयपुर रहे तो राम गोपाल विजयवर्गीय से प्रेरणा लेते रहे । अकादमी से १९६० एवं ६२ में अपनी मौलिक रचना के लिए पुरस्कृत हो चुके हैं । अकादमी ने इनके चित्रों की एकल प्रदर्शनी १९६६ में दिल्ली में की । फ ६०-६१ ।

स्टूडियो : अब्दुल्ला कालोनी, पावर हाउस रोड़, रेल्वे स्टेशन के सामने, जयपुर ।

श्रीमती विमला मिश्रा

आगरा मे १९३५ में जन्म । एम. ए., बी. टी. १९६२ से महारानी कालेज जयपुर में प्राध्यापिका के पद पर कार्यरत इसके चित्रकला विभाग की हैडशिप का कार्यभार भी सफलता पूर्वक संभाला । विश्वविद्यालय की विभिन्न समितियों एवं उपसमितियों से सम्बद्ध आपने ग्रीष्म कालीन कला शिविर भी आयोजित किये । "जयपुर कलम की चित्रित पांडु-

६०

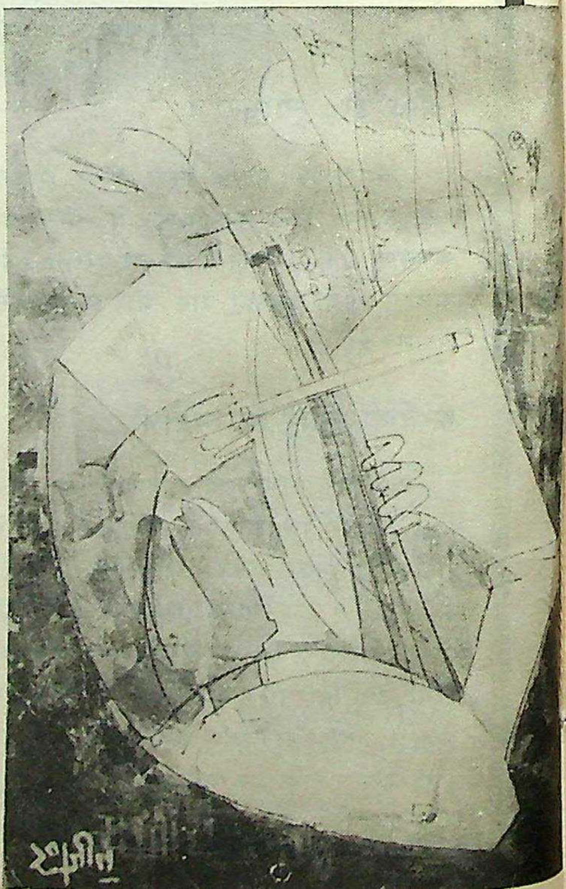

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिपियों" पर इन दिनों शोधकार्य में व्यस्त। फ. ६२

ज्योति स्वरूप

आधुनिक कलाकारों की पंक्ति में अग्रगण्य ज्योति स्वरूप ने दिल्ली एवं बम्बई में एकल प्रदर्शनी कर देश के बाहर फिलेडेफिया की माकलर गैलेरी (अमरीका) में १९६८ में तथा वाशिगटन में १९७१ में एकल प्रदर्शनी आयोजित की। राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी, बम्बई आर्ट फैस्टीवल ६६, समसामयिक भारतीय कला प्रदर्शनी टोकियो, जापान, मनीला एवं फिलीपाइन्स तथा, आज भारतीय कला, चल प्रदर्शनी मेलबोर्न, सिडनी और आस्ट्रेलिया १९६६ के साथ राजस्थान ललित कला आकादमी की प्रदर्शिनियों में इनकी रचनाओं को प्रतिनिधित्व मिला। आकादमी से १९६१, ६३, ६४, ६६, ६७ ६८ और ६९ में पुरस्कृत आपको रवीन्द्र शताब्दी प्रदर्शिनी १९६१, ट्रैफिक पोस्टर प्रतियोगिता १९६२, डिफेन्स पोस्टर प्रतियोगिता १९६२ के साथ राष्ट्रपति द्वारा भी श्रेष्ठ राष्ट्रीय झाँकी बनाने के लिये १९६६ में पुरुस्कृत किया गया। भारत सरकार से १९६१ से ६३ तक छात्र वृत्ति प्राप्त कर चित्र एवं सिरेमिक्स में शोध कार्य किया। चित्र राष्ट्रीय नवकला दीर्घा दिल्ली, जयपुर म्यूजियम तथा देशविदेश के कई संग्रहालयों में सुरक्षित हैं। ई० एस० आई० अस्पताल जयपुर, गांधी भवन अजमेर, १९६१ से ६३ गोलचा एन्टरप्राइज जयपुर, आनन्द थियेटर जोधपुर में आपके सिरेमिक म्यूरल देखे जा सकते हैं। राजस्थान पैवेलियन (इन्टरनेशनल इन्डस्ट्रियल फेयर ७२) व इसी मेले में १९६१ से ६३ तक सिरेमिक म्यूरल बनाते रहे। सम्प्रति अपने कार्यकक्ष पर ही कार्यरत। फ. ६३-६४।

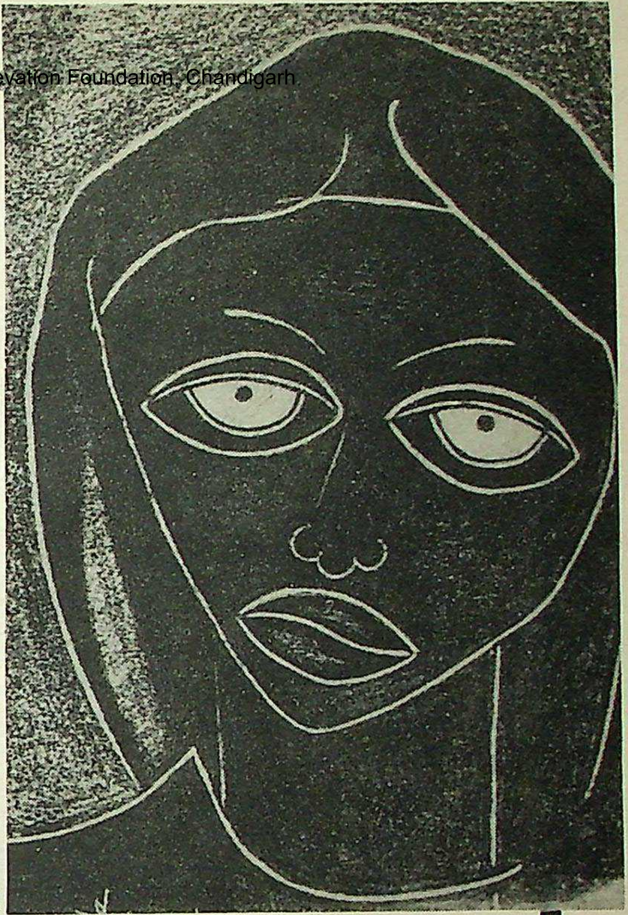

६३

स्टूडियो कछावा भवन, अरविन्द मार्ग, जयपुर।

६१ ६२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सुशील कुमार

जन्म १९३५। चित्रकला विषय में एम० ए० बी० एड०। राजस्थान शिल्प शिक्षालयं परशुराम द्वारा में अध्यापन किया। आकादमी में कई बार रचनाएं प्रदर्शित। संम्प्रति राजस्थान पाठ्य पुस्तक मण्डल से सम्बन्ध।

श्रीमति चन्द्रावती शर्मा

जन्म १९३६। राजस्थान विश्वविद्यालय से चित्रकला में प्रथम श्रेणी से एम० ए०। राजस्थान कला मन्दिर में रामगोपाल विजयवर्गीय के शिष्यत्व में भी अध्ययन किया। राजस्थान ललित कला अकादमी सहित कई समूह प्रदर्शिनियों में प्रदर्शित। १९७८ में शिक्षक दिवस के अवसर पर पुरस्कृत। अढ़ाई शती समारोह में कला संयोजिका मनोनीत, १९७७ में ढूंढ़ार शैली के चित्रों की प्रदर्शनी की भी संयोजिका रहीं। सिरेमिक्स पर अलंकरण का विशेष अनुभव। सम्प्रति १९६२ से महाराजा बालिका उच्च माध्यमिक विद्यालय में कला शिक्षिका। फ. ६५-६६।

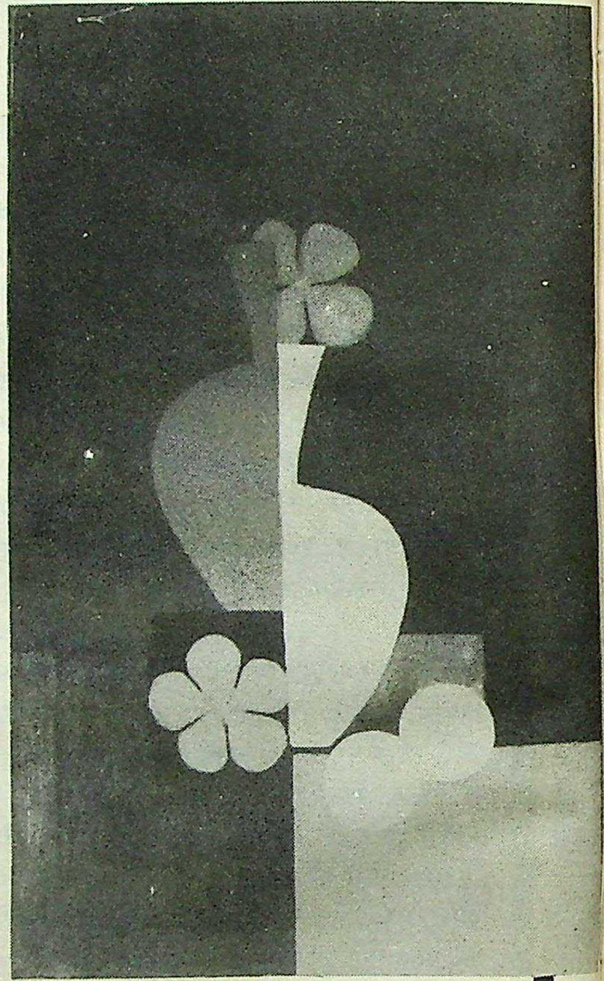

६६

६४ ६५

स्टूडियो सी–७४, सरोजनी मार्ग, सी स्कीम, जयपुर।

डा० राधाकृष्ण वशिष्ठ

उदयपुर के चित्रकार घराने में जन्म। राजस्थान

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विश्वविद्यालय से १९६६ में चित्रकला में एम० ए० प्रथम श्रेणी में प्रथम स्थान। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा १९६९। राजस्थान के प्रथम शोध छात्र, इन्होंने १९७५ में आगरा विश्वविद्यालय से पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। राजस्थान ललित कला अकादमी एवं टखमण २८ की प्रदर्शिनियों में प्रदर्शित, जोधपुर ६६, अजमेर ६६, उदयपुर ६७ एवं अलीगढ़ में ६३ में एकल प्रदर्शिनियां आयोजित कीं। राजस्थान शिक्षक सम्मान समारोह के अवसर पर १९६७ में पुरस्कृत। इनके चित्र देश विदेश के निजि संग्रहालयों में संग्रहीत हैं। राजस्थान ललित कला अकादमी, तूलिका कलाकार परिषद एवं प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप के सदस्य। सम्प्रति राजस्थान विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग में प्राध्यापक। फ. ६७-६८।

स्टूडियो डी० ६२, बापूनगर, जयपुर।

डा० प्रेमचन्द गोस्वामी

बीकानेर में १९३९ में जन्मे गोस्वामी पिछले अठारह वर्षों से जयपुर में हैं। राजस्थान विश्वविद्यालय से हिन्दी में एम० ए० कर 'हिन्दी कहानी में चित्र निर्माण की प्रक्रिया' विषय पर शोध कार्य कर पी० एच० डी० की उपाधि प्राप्त की। विगत १५ वर्षों से बीकानेर, जयपुर, अलवर एवं कोटा आदि स्थानों पर कई एकल प्रदर्शनी कर चुके हैं। राजस्थान ललित कला अकादमी सहित कई समूह प्रदर्शिनियों में भी इनकी रचनाएं प्रदर्शित हो चुकी

६७

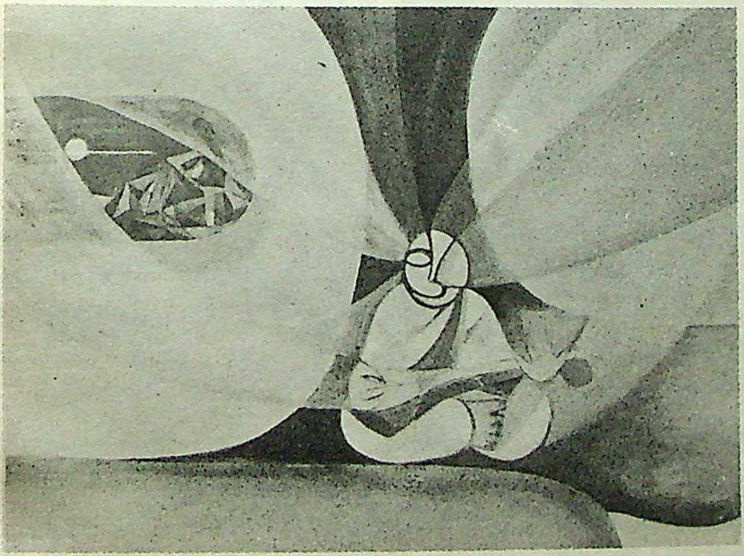

६८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

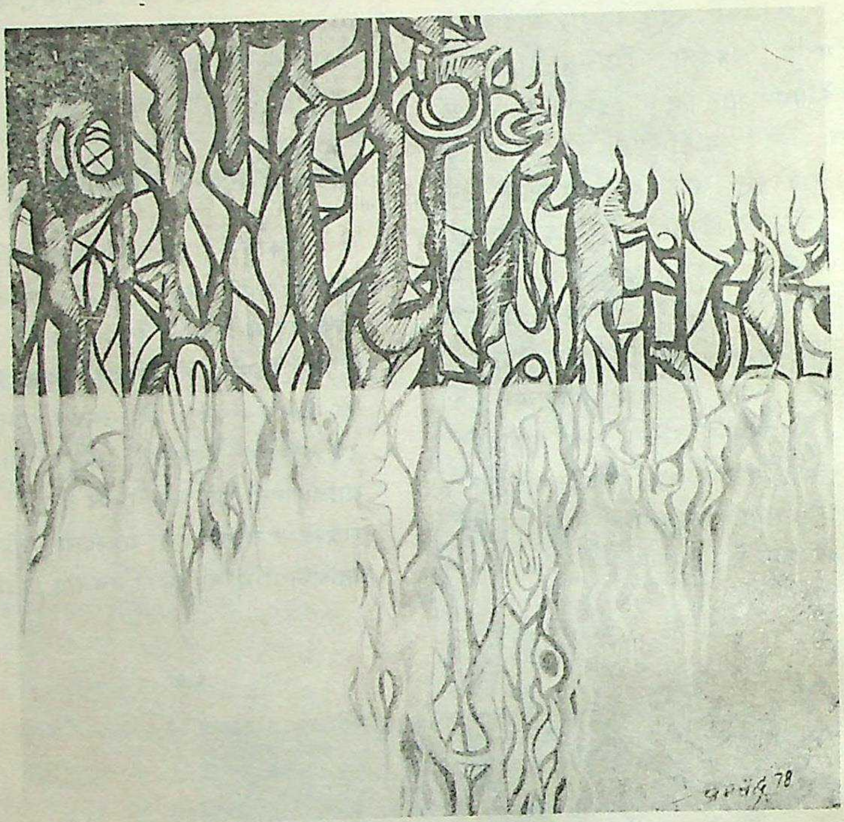

६९

हैं। कला सम्बन्धी पांच पुस्तकें प्रकाशित जिनमें राजस्थान ललित कला अकादमी द्वारा प्रकाशित 'राजस्थान की लघुचित्र शैलियां' का सम्पादन भी आपने किया। साहित्य की अन्य सभी विधाओं पर भी सात पुस्तकें प्रकाशित। कारम पुरुष' एक वृत्त पत्रकारिता के प्रतिमान इनकी महत्वपूर्ण पुस्तकें हैं। अकादमी की पत्रिका 'आकृति' सहित अन्य कई पत्रिकाओं का सम्पादन किया। अकादमी में वर्तमान राज्य सरकार द्वारा मनोनीत सदस्य। इससे पूर्व भी अकादमी से सम्बद्ध रहे हैं। अनेकों पत्र पत्रिकाओं में लेख, वार्ता, प्रसारण, गोष्ठियों का सफल आयोजन कर चुके हैं। सम्प्रति कृषि विभाग में कलाकार। फ. ६९-७१।

स्टूडियो बी–४ जनता कॉलोनी, जयपुर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कृष्णचन्द जोशी

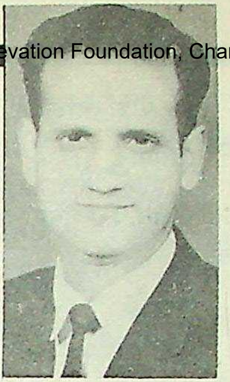

७०

७१

सुप्रसिद्ध कलाकार 'बाबासाहब' गोवर्धनलाल जोशी के पुत्र जोशी ने राजस्थान विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र में एम. ए. १९६० में किया। उदयपुर विश्वविद्यालय से चित्रकला में एम. ए. १९६७ में, राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा १९७८ में किया। वनस्थली में फ्रेस्को का अध्ययन भी किया। जयपुर, जोधपुर, उदयपुर एवं दिल्ली में एकल प्रदर्शिनियां आयोजित कर चुके हैं। ओरीयन्टल आर्ट सोसाइटी कलकत्ता, केरल साहित्य परिषद् त्रिवेन्दरम, राजस्थान ललित कला आकादमी जयपुर, तूलिका कलाकार परिषद उदयपुर, प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप, माउन्ट आबू एवं जहांगीर आर्ट गैलेरी, बम्बई में आयोजित समूह प्रदर्शिनियों में इनकी रचनायें प्रदर्शित हुई। राजस्थान ललित कला आकादमी से सम्बद्ध जोशी आकादमी से पुरस्कृत भी हो चुके हैं। राजस्थान चित्रकला शिक्षक संघ के अध्यक्ष रह। इन्होंने एशिया ७२ के राजस्थान पैवेलियन में भी काम किया और रेल्वे स्टेशन पर बने फ्रेस्को में पिता के साथ सहयोग

७२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिया । सम्प्रति राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में वरिष्ठ शिक्षक । फ. ७०-७२ ।

स्टूडियो : बी. १८९/ए शिवनिकेतन, विश्वविद्यालय मार्ग, जयपुर ।

कुमारी विमल कौल

जन्म १९३६ राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा १९६१ । चित्रकला विषय में एम० ए० ६६ । राजस्थान ललित कला आकादमी से ग्राफिक के लिये १९६६ में पुरस्कार प्राप्त किया। बातिक एवं ब्लूपाटरी में विशेष अनुभव । राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में दो वर्ष तक व्याख्याता के रूप में अध्यापन भी किया । संप्रति मीरा गर्ल्स कालेज उदयपुर में व्याख्याता ।

शब्बीर हसन काज़ी

अजमेर में १९३६ में जन्म । उदयपुर विश्वविद्यालय से १९६९ में चित्रकला में एम० ए० । राज० ल० कला अकादमी से पुरस्कार १९७२, ७४ और ७५ में प्राप्त किये । आइफैक्स पुरस्कार १९७७ एवं अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी, उत्तर प्रदेश ललित कला अकादमी पुरस्कार १९७७ में प्राप्त किया । राजस्थान की समकालीन कला ६९, राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी १९७०, ७२, ७२, ७६ एवं ७७, बम्बई आर्ट सोसाइटी ७१ व ७४, राज० ल० क० आ० ६९ से ७७, एशिया ७२, टखमण २८ प्रदर्शनी ६८ से ७३ एवं ७५, जयपुर ७१ एवं ७४. नई दिल्ली ७१, अखिल भारतीय ड्राइंग प्रतियोगिता लखनऊ ७६ तथा आइफैक्स द्वारा आयोजित अन्तराष्ट्रीय समसामयिक कला प्रदर्शनी १९७७

७३

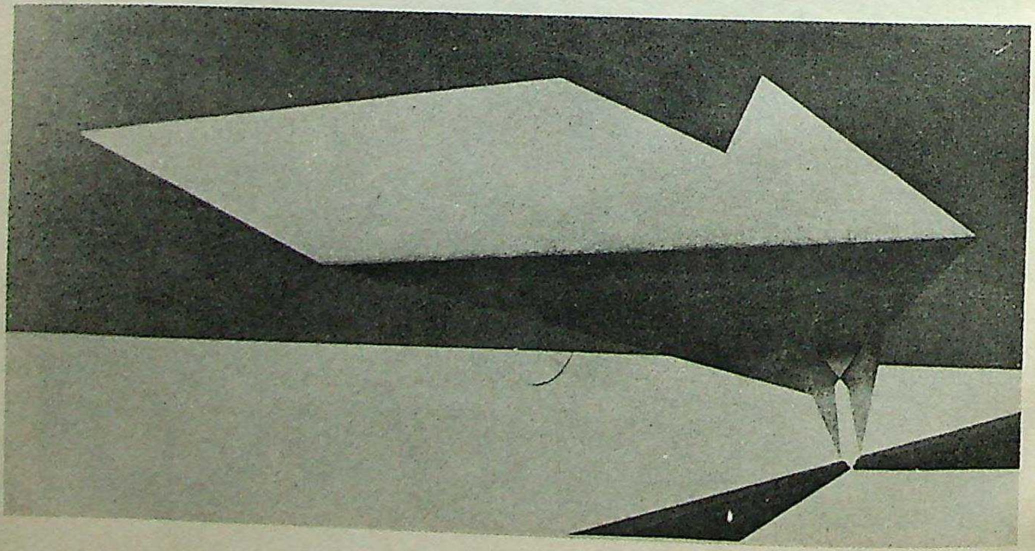

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में इनकी रचनायें प्रदर्शित हो चुकी हैं। राजस्थान ललित कला अकादमी से उसकी विभिन्न समितियों एवं उपसमितियों के माध्यम से सम्बद्ध । सम्प्रति राजस्थान विश्वविद्यालय, महारानी कालेज, जयपुर में चित्रकला विषय में व्याख्याता । फलक ७३ ७५ ।

स्टूडियो ४ ज ३ जवाहर नगर, जयपुर ।

सुरेशचन्द्र राजोरिया

१९३८ में अजमेर में जन्मे राजोरिया ने राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से १९६८ में चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया । १९५६ हाईस्कूल तक शिक्षा प्राप्त कर बी०ए० के समकक्ष हिन्दी साहित्य सुधाकर परीक्षा १९६२ में पास की । शुरू से ही अध्यापन में रहते हुए भी मौलिक सृजन को भुलाया नहीं १९६९, ७०, ७१, ७३ और ७४ में आप दृश्य-चित्रों की एकल प्रदर्शिनियां आयोजित कर चुके हैं।

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से विद्यार्थी काल में ही १९६८ की वार्षिक प्रदर्शनी में स्वर्ण पदक प्राप्त, राजस्थान ललितकला आकादमी से १९७३ ७४ एवं ७५ में पुरस्कृत हो चुके हैं, शिक्षक सम्मान समारोह के अवसर पर १९७६–७७ में भी पुरस्कृत सुरेशचन्द्र राजोरिया, दृश्यांकन में तकनीक व पोत के स्तर पर निरन्तर प्रयोगशील रहे हैं। सम्प्रति राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में अध्यापन कर रहे हैं। फलक ७४ ७६ ।

स्टूडियो : आकड़ों का रास्ता, गणेशीलाल कानूगो की गली, जयपुर ।

७४

श्रीमति शशि जैन

आगरा में १९३९ में जन्म । राजनीति एवं इतिहास में १९५९ व ६१ में एम० ए० किया । १९६१ से जयपुर में रह रही हैं । तूलिका कलाकार

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

परिषद की प्रदर्शिनी एवं महिला चित्र प्रदर्शनी प्रदर्शित में इन्होंने अपनी एकल प्रदर्शिनी १६७४ में राजस्थान ललित कला अकादमी कलादीर्घा में आयोजित की। कलाकार परिषद ने जोधपुर में इनकी प्रदर्शिनी का आयोजन किया। राजस्थान ललित कला अकादमी से उसकी विभिन्न समितियों के माध्यम से सम्बद्ध रही हैं। फलक ७७ ७८।

स्टूडियो ४ बी, गंगवाल पार्क, जयपुर ।

आर० बी० गौतम

बीकानेर में १६४० में जन्मे राधावल्लभ गौतम अमृतसर से जी० डी० आर्ट और जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट से डी० टी० सी० तथा सी० एन० कालेज ऑफ आर्ट्स अहमदाबाद से भी डी० टी० सी० पास किया है। जयपुर व अहमदाबाद में कुल चार एकल प्रदर्शिनियां कीं। इनकी रचनाएं राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की समूह प्रदर्शिनियों में देखी जा

७५

७६

सकती हैं। चित्र के साथ लेखन में भी गति। 'कला की मनोवैज्ञानिक परिभाषा भूमि' इनका शोध ग्रन्थ है। सम्प्रति कृषि विभाग जयपुर में प्रचार सहायक। फलक ७९ ८०

स्टूडियो एफ–८४ गाँधी नगर, जयपुर ।

पारस भंसाली

जन्म १६४० जोधपुर में। जे० जे० स्कूल ऑफ आर्ट से डिप्लोमा। ए० एच० मूलर से भी कला शिक्षा ली। राजस्थान ललित कला आकादमी से

७७

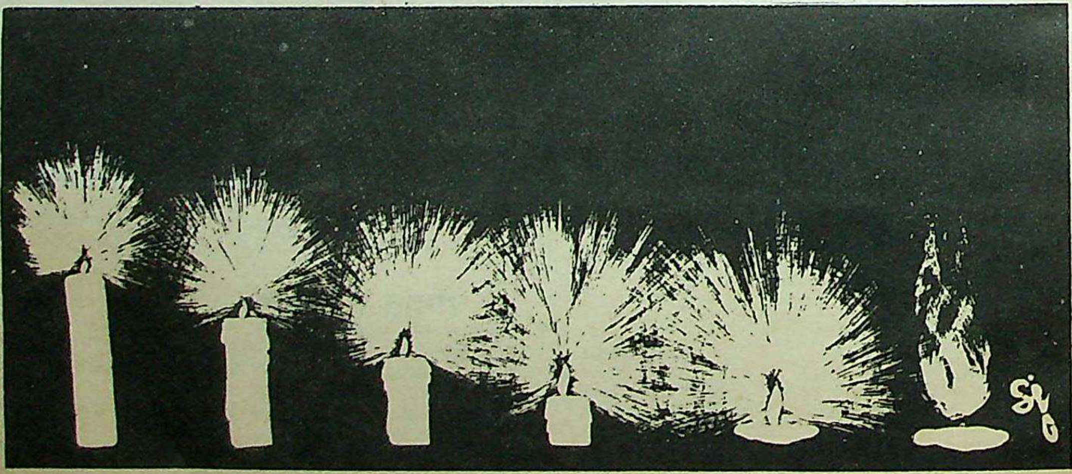

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

△ पारस मंसाली की रचना विवरण पृष्ठ 48 पर।

आत्म चित्र ▷

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

पुरस्कृत । सम्प्रति व्यवसायिक कला में सुपरिचित नाम है ।

स्टूडियो १४०, न्यू कालोनी, जयपुर ।

हरीदत्त कल्ला

१९४० में जोधपुर में जन्मे हरीदत्त कल्ला ने १९५९ में हाईस्कूल पास कर तीन साल तक स्कूल आफ आर्ट्स में कला शिक्षा ग्रहण की । १९६१ में

७८

७९

आई. जी. डी. पास कर १९७१ में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया ।

८०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९६१ से ७० तक कल्ला ने जयपुर के लक्ष्मी नारायण पंवार से संगीत एवं नृत्य में शिक्षा ली और अमेच्योर आर्टिस्ट एसोसियेशन के तत्वावधान में खूब प्रशंसा अर्जित की। इनकी छात्राओं ने भारतीय लोक नृत्य के माध्यम से कैलगिरी, कनाडा, वाशिंगटन, शिकागो एवं अफगानिस्तान में सफल कार्यक्रम दिये और प्रशंसा अर्जित की। १९६२ में स्कूल ऑफ आर्ट्स के विद्यार्थी वर्ग में प्रथम पुरस्कार १९६३ से ६५ तक कालेज के फेस्टीवल में लगातार पुरस्कार प्राप्त किये और १९७८ में शिक्षक सम्मान समारोह के अवसर पर पुरस्कृत हुए। सम्प्रति राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में कला शिक्षक। फ. ८१-८३।

स्टूडियो : १९ क १० ज्योतिनगर, जयपुर।

तिलकराज

अप्रेल १९४१ में जन्मे तिलकराज शर्मा पंजाब के वासी थे जो अब पाकिस्तान में लाहौर के समीप है। १९४७ में विभाजन के समय जयपुर बसे।

शिक्षादीक्षा सब जयपुर में ही हुई। महाराजा कालेज से स्नातक तिलकराज ने १९६३ में राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से डिप्लोमा उतीर्ण किया और १९६३ में बनस्थली से फ्रेस्को की तकनीक

८१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सीखी। भारत सरकार के सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय में १९६४ से ६७ तक सहायक प्रदर्शनी अधिकारी के पद पर कार्य किया और त्याग पत्र देकर प्रदर्शनी एवं प्रचार सम्बन्धी कार्य में लीन हो गये।

एशिया ७२ में राजस्थान पैवेलियन की सज्जा का काम किया जिसमें ४० फुट ऊंचा हवामहल दर्शनीय बना था। १९७७ में एग्री एक्सपो मेले में भी राजस्थान पैवेलियन की पूर्ण सज्जा की जिम्मेदारी इन्होंने संभाली। २६ जनवरी पर होने वाली जयपुर व दिल्ली की झांकियों में कोई न कोई झांकी का निर्माता तिलक राज होता है।

राजस्थान ललित कला अकादमी से इन्हें अपनी मौलिक रचना के लिए लगातार तीन वर्ष तक पुरस्कार मिला। १९६१, ६२ और ६३ में पुरस्कृत होने के बाद इन्होंने स्वेच्छा से ही भाग लेना बंद करने की घोषणा कर दी। फ. ८२-८४।

स्टूडियो : रेखा पब्लिसिटी, नेहरू बाजार, जयपुर।

कुमारी सरला

जन्म १९४१। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से डिप्लोमा। एम० ए० चित्रकला। संस्था एवं त्रिवेणी से पुरस्कृत इनकी रचनाएं आकादमी की वार्षिक प्रदर्शनी में प्रदर्शित हुई हैं।

स्टूडियो फ्रेन्ड्स लॉज, कल्याण जी का रास्ता जयपुर।

८२

कुमारी वीरबाला भावसार

जन्म अहमदाबाद १९४१, मूलतः बांसवाड़ा की निवासी। अहमदाबाद फाइन आर्ट्स कालेज से

८३

८४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

डिप्लोमा १९६६ में एवं वहीं से १९६७ में आर्ट मास्टर परीक्षा उत्तीर्ण की। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन से १९७० में चित्रकला में एम० ए० किया। अहमदाबाद एवं दिल्ली में १९७१, १९७५, अकादमी कला दीर्घा जयपुर तथा कन्टम्परेरी आर्ट गैलेरी अहमदाबाद १९७७ तथा त्रिवेणी कला संगम नई दिल्ली में १९७८ में अपनी एकल प्रदर्शिनी आयोजित की। गुजरात, राजस्थान एवं मध्यप्रदेश राज्य की विभिन्न कला प्रदर्शिनियों में आपके चित्र प्रदर्शित हो चुके हैं। गांधी दर्शन प्रदर्शनी, खादी इन्स्टीट्यूट अहमदाबाद, फाइन आर्ट कालेज अहमदाबाद सहित कई निजि संग्रहों में इनकी रचनाएं संग्रहीत हैं। चित्रण के साथ स्टेज डिजाइन एवं भूति रचना भी करती हैं। सम्प्रति महारानी कालेज जयपुर में चित्रकला में व्याख्याता। फ. ८५-८६।

स्टूडियो ए० ६९, शिवाड़ एरिया, बापूनगर, जयपुर।

सी० एस० मेहता

चित्तौड़गढ़ के पास बड़ी सादड़ी में १९४२ में जन्मे चिन्मय मेहता ने आगरा विश्वविद्यालय से १९६३ में चित्रकला विषय से एम० ए० किया। पहली एकल प्रदर्शिनी आईफैक्स में १९६६ में करने के बाद जयपुर, दिल्ली एवं बम्बई में पांच एकल प्रद-

८५

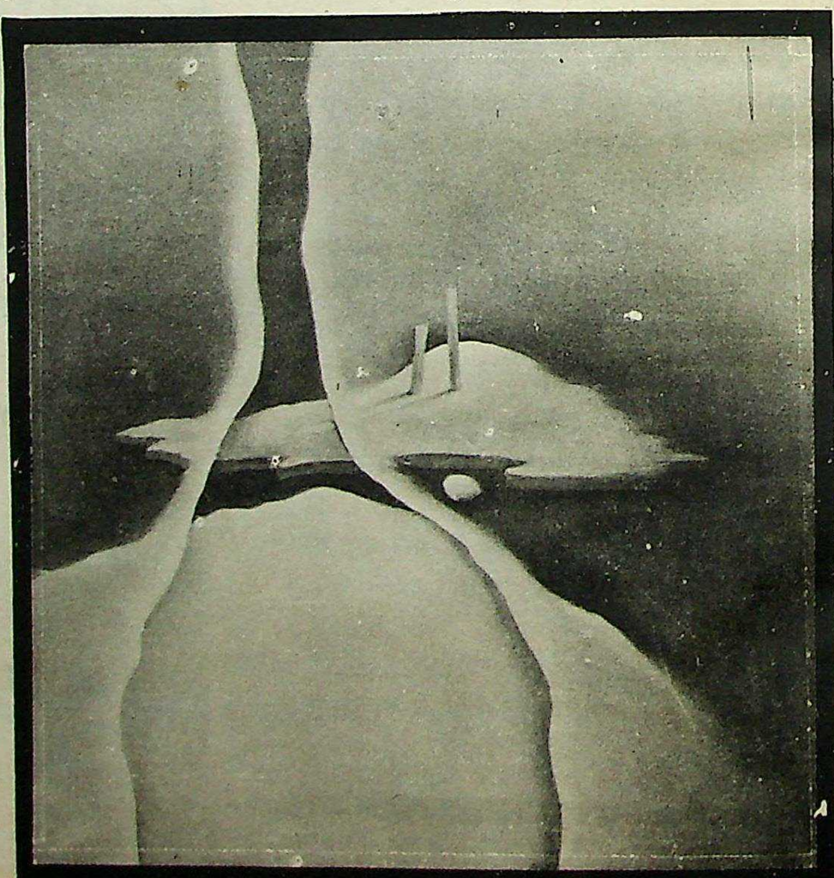

८६

मोहन शर्मा की रचना △ विवरण पृष्ठ 53 पर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

र्शनियां और कर चुके हैं । नाइस (फ्रान्स) में प्रदर्शनी के बाद न्यूयार्क स्टेट यूनिवर्सिटी ने इन्हें प्रदर्शिनी एवं डिमोन्स्ट्रेशन देने हेतु आमन्त्रित किया । पत्नि श्री एवं स्वयं ने मिलकर अमरीका प्रवास के समय लगभग दस प्रदर्शिनियां आयोजित की । बातिक में इनकी उपलब्धियां मानी जाती हैं । तेरह वर्षों तक जयपुर के कानोडिया महिला महाविद्यालय के चित्र-कला विभाग में अध्यक्ष पद पर कार्य करने के उप-रान्त अब राजस्थान विश्वविद्यालय के चित्रकला विभाग में रीडर के पद पर कार्यरत । फ.८७-८८।

स्टूडियो ६ ख २०, जवाहर नगर जयपुर ।

रमेश 'सत्यार्थी'

राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से १९६४ में डिप्लोमा । संस्था के पुनरुत्थान हेतु खूब प्रयास किया । संम्प्रति बून्दी में व्याख्याता ।

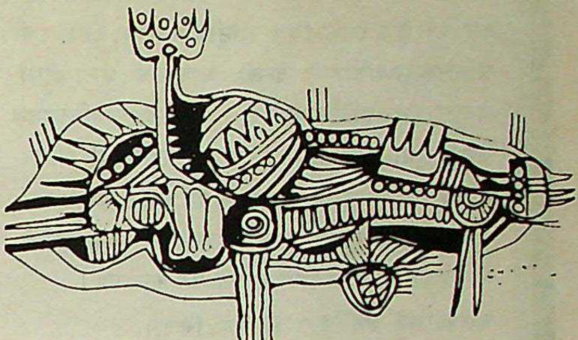

८७

मोहन शर्मा

नाथद्वारा के कलाकार परिवार में १९४२ में जन्म । जे.जे.स्कूल ऑफ आर्ट्स बम्बई से डिप्लोमा एवं ब्रिटिश कौन्सिल से छात्रवृत्ति प्राप्त कर लन्दन विश्वविद्यालय से आर्ट एजूकेशन में डिप्लोमा । राजस्थान ललित कला अकादमी की विभिन्न समितियों से सम्बद्ध, अकादमी से १९६६, ७४ एवं ७५ में पुरस्कृत । आईफैक्स पुरस्कार १९७३, महा-राष्ट्र राज्य पुरस्कार ६५, राजस्थान शिक्षक सम्मान समारोह १९७७ में पुरस्कृत । विभिन्न समूह प्रर्दाशनियों के अतिरिक्त दिल्ली, बम्बई, जयपुर

८८

८९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एवं लन्दन में कुल ग्राठ एकल प्रदर्शिनियां ग्रायोजित कर चुके हैं। इनके चित्र राष्ट्रीय नवकला दीर्घा एवं ललितकला ग्रकादमी दिल्ली, ग्राधुनिक कला दीर्घा जयपुर, एयर इन्डिया बम्बई, राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर, भारतीय टी बोर्ड, लन्दन कला दीर्घा, शासन सचिवालय जयपुर के ग्रतिरिक्त कई निजि संग्रहालयों में संग्रहीत हैं। सम्प्रति राजस्थान स्कूल ग्रॉफ ग्रार्ट्स में १९६८ से व्याख्याता के पद पर कार्यरत।

फलक. ८९ एवं ९० (रंगीन चित्र)।

स्टूडियो १ ज १०, जवाहर नगर, जयपुर।

९१

९२

श्रीमती लोरना सी. डेनियल

जन्म १९४२, राजस्थान कला मन्दिर से १९५७ में एवं राजस्थान स्कूल ग्रॉफ ग्रार्ट्स से ६० में चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त किया। १९५८ में ग्राई. जी. डी. एवं १९६० में रायल ड्राइंग सोसाइटी लन्दन का हायर ड्राइंग सर्टिफिकेट प्राप्त किया। १९६६ में साहित्य सुधाकर की परीक्षा पास की। राज्य की विभिन्न समूह प्रदर्शिनियों

९३

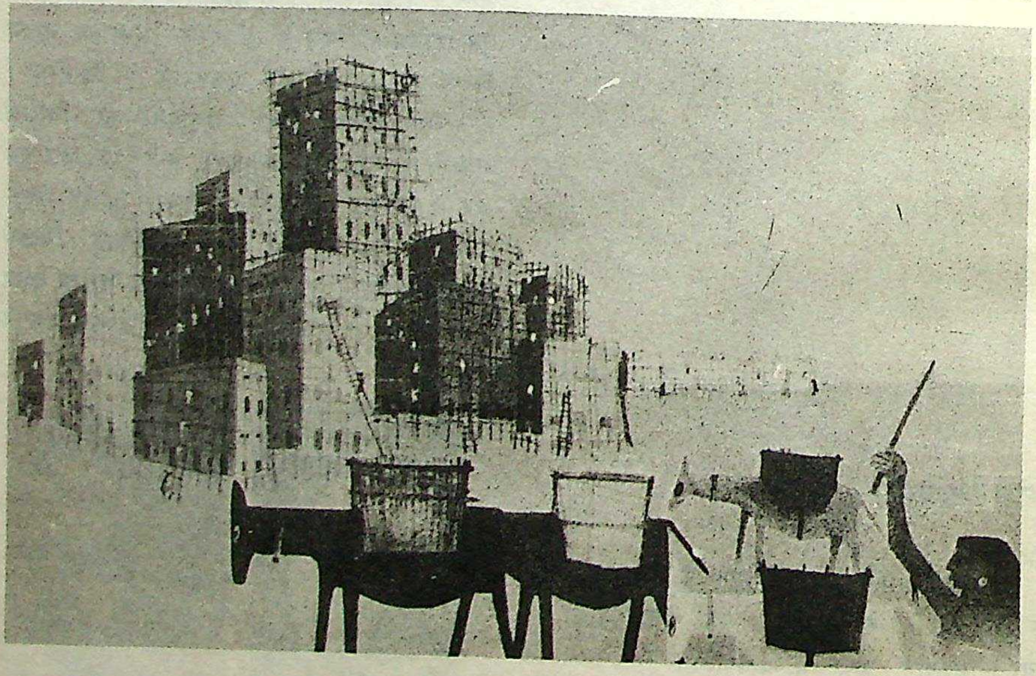

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

के साथ राजस्थान ललितकला अकादमी की वार्षिक प्रदर्शिनियों में भी इनके चित्र प्रदर्शित हुये हैं। राज्य सरकार ने इनके चित्र खरीदे। मिनियेचर में विशेष रुचि। सम्प्रति राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में अध्यापन। फ. ९२-९५।

स्टूडियो : अजमेर रोड़, जयपुर।

द्विजेन्द्र मिश्र

अजमेर में १९५४ में जन्म। देहली विश्वविद्यालय से स्नातक १९७५ में एवं राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से १९७५ में चित्रकला में डिप्लोमा पास किया जिसमें प्रथम श्रेणी और प्रथम स्थान प्राप्त किया। आई० जी० डी० एवं आर०डी०एस० लन्दन की परीक्षाएं भी क्रमशः १९६१ व ६२ में उत्तीर्ण कीं। रोज़ सोसाइटी से १९७५, बिजली बोर्ड द्वारा १९७८ में पुरस्कृत, इन्हें ललित कला अकादमी से भी १९७१ में पुरस्कृत किया गया। जयपुर व अजमेर में १९७१-७२-७३-७५ और ७६ में एकल प्रदर्शिनियां आयोजित कीं। सम्प्रति राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल में ड्राफ्टसमैन।
फ. ९१-९३।

स्टूडियो १८६९ खेजड़े का रास्ता, जयपुर।

नाथू लाल वर्मा

१९४६ में जयपुर में जन्मे नाथूलाल वर्मा ने कृपालसिंह शेखावत के निर्देशन में सवाई रामसिंह शिल्प कला मन्दिर, जयपुर में १९६३ से ६६ तक कला शिक्षा प्राप्त की। बाद में १९७१ तक वहीं

९४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कला शिक्षण किया । राजस्थान विश्व विद्यालय के स्नातक नाथूलाल वर्मा ने राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस से १९७८ में डिप्लोमा प्राप्त किया । आप फ्रेस्को तथा ब्लू पौटरी के कार्य में दक्ष हैं । राजस्थान ललित कला अकादमी से १९७३ में अपनी कृति के लिये पुरस्कृत । अकादमी की वार्षिक प्रदर्शनियों सहित अनेकों अन्य समूह प्रदर्शनियों में रचनायें प्रदर्शित हो चुकी हैं । राजस्थान आधुनिक कला दीर्घा तथा अन्य निजि संग्रहों में इनकी कृतियाँ संग्रहीत हैं । फ.९४ -९६ ।

स्टूडियो खेजड़े का रास्ता, भैरुंजी का चौराहा, भूरजी हालूकान का बाग, जयपुर ।

श्रीमति रेखा भटनागर

जन्म १९४६ । उदयपुर विश्वविद्यालय से चित्रकला में एम० ए० । वनस्थली फ्रेस्को केम्प में अध्ययन १९६८ । ललित कला आकादमी में कई बार प्रदर्शित इनकी रचना को १९६८ में आकादमी से पुरस्कार प्राप्त हुआ । सम्प्रति कानोडिया महिला महाविद्यालय में व्याख्याता ।

स्टूडियो : सी ७९ यशपथ, तिलकनगर, जयपुर ।

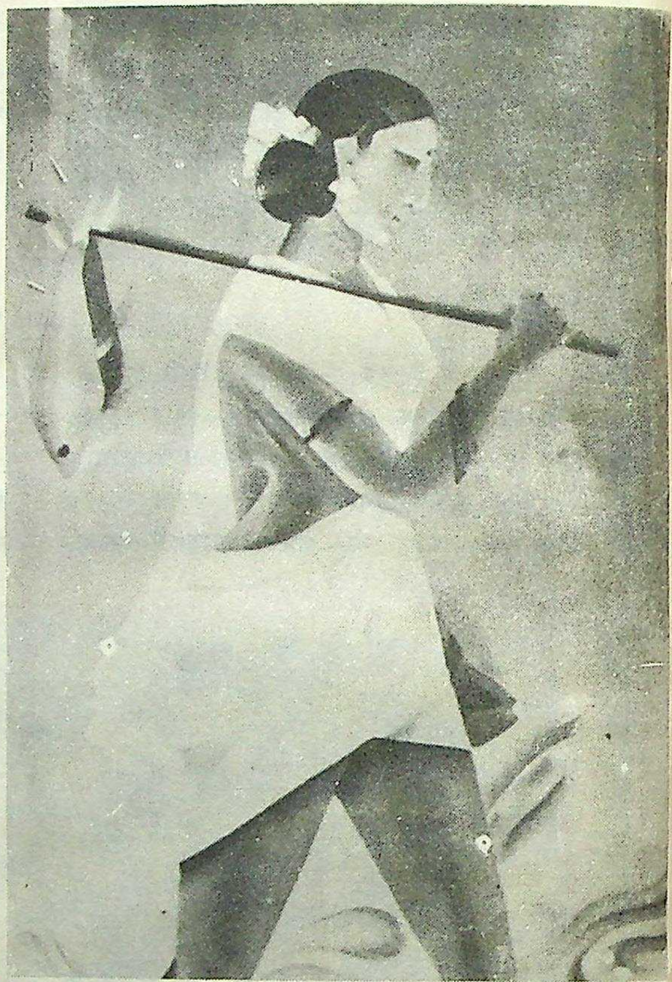

अब्दुल करीम ९५

जन्म १९४८ । राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा १९७३ । जयपुर में ७५ और ७६ तथा दिल्ली में ७८ में एकल प्रदर्शनी आयोजित की। राष्ट्रीय प्रदर्शनी ७६ और ७८ आइफैक्स ७७, राजस्थान ल० क० आकादमी ७५, ७६, ७७, टखमण २८ की प्रदर्शनी ७६, अकादमी ऑफ फाइन आर्ट्स, कलकत्ता ७७ में रचनायें प्रदर्शित । इनकी रचनायें आधुनिक कला दीर्घा जयपुर, आफीसर्स इन्स्टीट्यूट जयपुर, एस० एम० एस० अस्पताल एवं राजस्थान विश्वविद्यालय के अतिरिक्त विभिन्न निजी संग्रहों में संग्रहीत हैं । राजस्थान कला अकादमी से १९७८ में पुरस्कृत । सम्प्रति राजस्थान विश्ववद्यालय पुस्तकालय में कलाकार के पद पर कार्यरत । फ. ९७ -९८ ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्टूडियो ४ ठ १४ नाहरी का नाका, जयपुर।

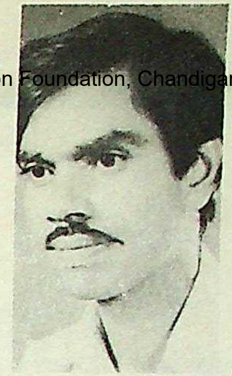

९६

९७

महेष ओझा 'पुरुषार्थी'

बून्दी में १९४८ में जन्मे पुरुषार्थी ने १९७० में उदयपुर विश्वविद्यालय से चित्रकला में एम० ए० किया। १९७१ में वनस्थली से फ्रेस्को का शिक्षरण लिया, टखमरण २८ की प्रदर्शिनी १९६८ एवं ७०, चित्रकला विभाग, उदयपुर विश्वविद्यालय प्रदर्शिनी १९७०, राजस्थान ललितकला अकादमी प्रदर्शिनी १९६९ एवं ७२ में प्रदर्शित इनकी रचनाओं की एकल प्रदर्शनी १९७० में आयोजित हुई। द्वितीय प्रदर्शनी का आयोजन श्री धराणी कला वीथि दिल्ली में १९७१ में हुआ। चित्र रचना के साथ कला सम्बन्धी लेख, विभिन्न पत्र पत्रिकाओं सहित अकादमी की त्रैमासिक पत्रिका 'आकृति' में भी प्रकाशित हुए हैं। सम्प्रति केन्द्रीय विद्यालय जयपुर में कला शिक्षक। फ. १०० - १०२।

स्टूडियो अरुणालय, बाबा हरिश्चन्द्र मार्ग, जयपुर।

९८

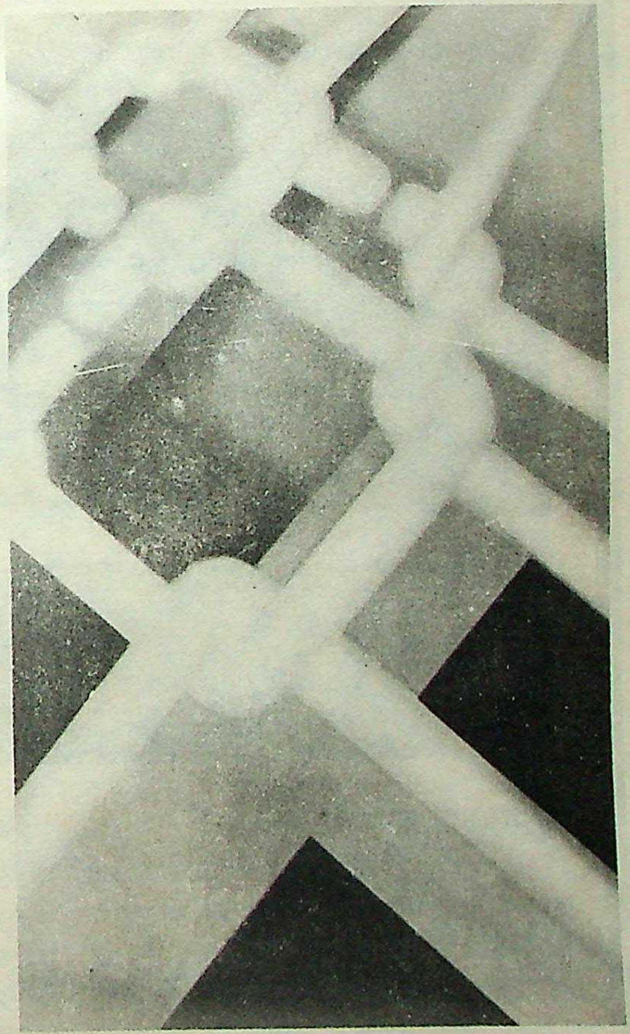

कुमारी मोहिन्द्रा

१९४८ में जन्म। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा। आकादमी में इनकी रचनाएं प्रदर्शित हो चुकी हैं। केन्द्रीय विद्यालय जयपुर में अध्यापन कार्य भी किया।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

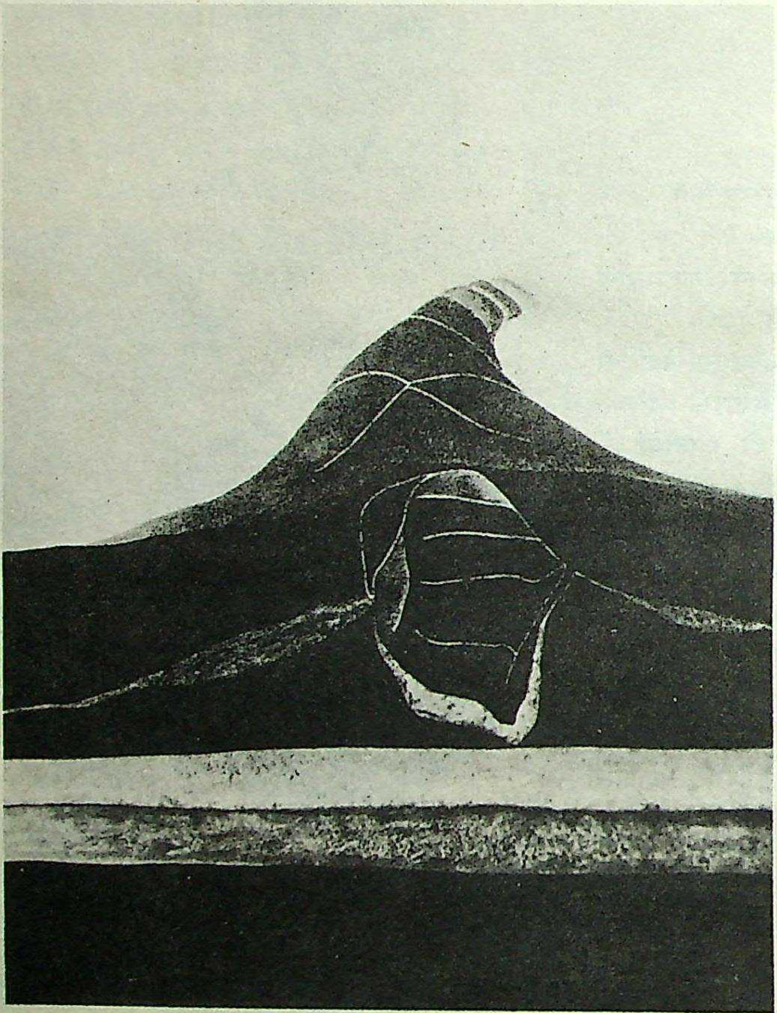

१००

९९ १०१

विद्यासागर उपाध्याय

बांसवाड़ा के परतापुरा गांव में १९४८ में जन्मे विद्यासागर उपाध्याय ने उदयपुर विश्वविद्यालय से १९७० में एम. ए. चित्रकला, उत्तीर्ण करने से पूर्व ही १९६८ बांसवाडा में अपनी एकल प्रदर्शनी लगा दी थी। जयपुर में १९७०, उदयपुर में १९७१, आईफेक्स दिल्ली में १९७२ फिर उदयपुर में १९७४ श्री धराणी कलादीर्घा दिल्ली में १९७५ तथा आकादमी कला दीर्घा में १९७६ में अपनी एकल प्रदर्शिनियां लगा चुके हैं। समूह प्रदर्शिनियों में

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

तृतीय त्रिनाले १९७५ सप्तम अन्तर्राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी आइफेक्स १९७७ राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी ७२, ७४ व ७५ एवं ७७, बम्बई आर्ट सोसाइटी ७२ आइफेक्स ७२, ७३, ७५, ७७ अखिल भारतीय रेखांकन प्रदर्शनी लखनऊ १९७६ तथा राजस्थान ललितकला आकादमी की वार्षिक प्रदर्शिनी में ६९ से ७७ तक इनकी रचनायें प्रदर्शित हुईं। सृजन शील कलाकारों की संस्था टखमरण २८ की, उदयपुर ६९ से ७७ जयपुर ७२, ७४, दिल्ली ७२ ७६, कलकत्ता ७७ एवं बंबई ७७ की प्रदर्शिनियों में भी कलाकार का प्रतिनिधित्व रहा।

राजस्थान ललितकला आकादमी से ६९, ७२ ७६ में पुरस्कृत विद्यासागर उपाध्याय लेखन में भी अधिकार रखते हैं। आकादमी द्वारा प्रकाशित 'आकृति' त्रैमासिक का इन्होंने १९७५ से ७६ तक सम्पादन किया। आकादमी द्वारा ही प्रकाशित द्वारका प्रसाद शर्मा पर मोनोग्राफ भी लिखा। भारतीय चित्रकला का इतिहास पुस्तक भी इन्होंने लिखी जिसका प्रकाशन स्टूडेन्टस बुक कम्पनी ने किया है। राजस्थान ललितकला आकादमी से उसकी विभिन्न समितियों एवं उपसमितियों के माध्यम से १९७० से ७८ तक सम्बद्ध रहे हैं। इनके चित्र एवं रेखांकन विभिन्न निजि एवं राजकीय संग्रहालयों राष्ट्रीय ललितकला आकादमी राजस्थान ललित कला आकादमी आधुनिक कला दीर्घा जयपुर के साथ साथ विदेशों में भी निजि संग्रहों में देखे जा सकते हैं। कलाकार प्रारंभ में रेखांकन और अब तेल रंगों में चित्रण कर रहे हैं। काले रंग का इनका विशेष अध्ययन है। फ. ९९-१०१।

स्टूडियो : विजय कुंज, गोपाल जी का रास्ता, जयपुर।

चन्दू लाल चौहान

१९४९ में जन्मे चौहान ने राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा उत्तीर्ण

१०२

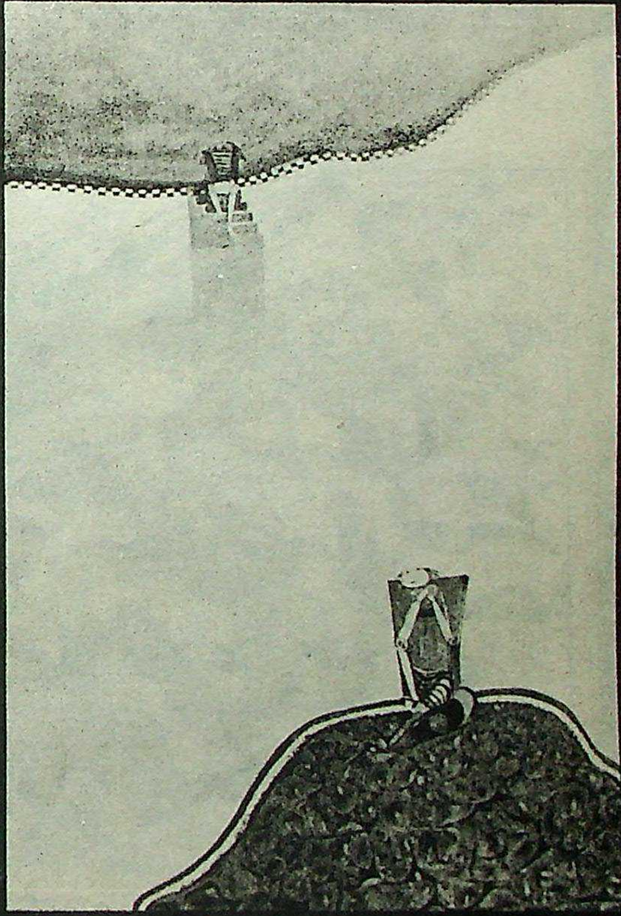

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया था। अकादमी द्वारा १९६६ में पुरस्कृत हुई इनकी रचनायें समूह प्रदर्शनियों में प्रदर्शित हो चुकी हैं। व्यावसाइक प्रतिष्ठानों एवं निजि संग्रहों में इनके खूब चित्र संग्रहीत हैं। सम्प्रति स्वतन्त्र रूप से अपने कार्य कक्ष पर ही कार्यरत॥परम्परागत शैली के चित्र विशेषकर पर्शियन चित्रों के मास्टर आर्टिस्ट। फ. १०३-१०४।

स्टूडियो ४१ कंडेल भवन, रामनगर कालोनी, सिन्धीकैम्प के सामने, जयपुर।

दुश्यन्त सिंह

जन्म १९४९। एम.एस. विश्वविद्यालय, बड़ोदा से फाइन आर्ट्स में स्नातक १९७२ में। यहीं से ग्राफिक में अधिस्नातक १९७३-७४, मेयो कालेज ललित कला परिषद से लिथोप्रिन्ट एवं तैलचित्र के लिये १९६५–६६ एवं ६७ में, अजमेर मेयो कालेज से ६७, गुजरात ललित कला आकादमी १९७० एवं ७१ राजस्थान ललित कला आकादमी १९७२ तथा द्वितीय ऑल इण्डिया आर्ट्स प्रदर्शनी १९७५ में पुरस्कृत हो चुके हैं। राज्य एवं दूसरे राज्यों में विभिन्न कला प्रदर्शनियों में इनकी लिथो प्रिन्ट्स,

१०३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

लिथोग्राफ, एचिंग एवं तैलचित्र प्रदर्शित हो चुके हैं। फ. १०५-१०६।

स्टूडियो नायला हाउस, एम० डी० रोड, जयपुर।

डा० मनोज

वनस्पति विज्ञान के विद्यार्थी कलाकार हृदय डा. मनोज कुमार शर्मा पच्चीस अक्टूबर १९४९ में जन्मे हैं जो एकाएक ही जब राजस्थान ललितकला आकादमी से १९७७ में पुरस्कृत हुए तब ही कला जगत ने इन्हें जाना था। आधुनिक जीवन की श्लांत क्लाँत फिसलन, कुंठा, वितृष्णा को डा० मनोज ने कोलाज के माध्यम से व्यक्त किया। सूचना केन्द्र एवं मेडिकल कालेज समूह प्रदर्शनी में इनके चित्र प्रदर्शित हो चुके हैं। आकादमी कला दीर्घा में इनकी एकल प्रदर्शनी भी आयोजित हुई। संप्रति राजस्थान विश्वविद्यालय के वनस्पति विभाग में व्याख्याता। फ़. १०७-१०८।

१०४

१०५

१०६

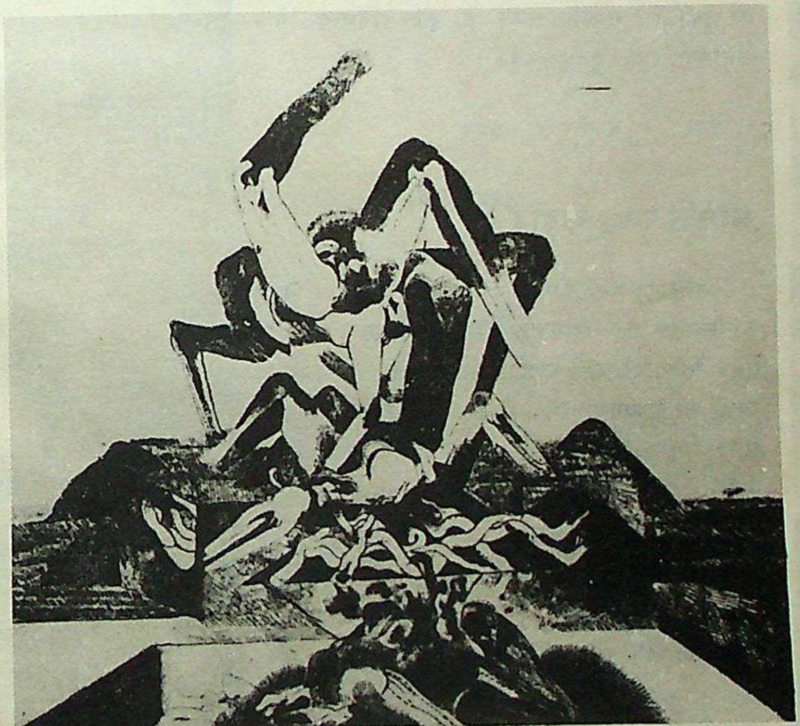

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्टूडियो : ३२०६ कल्याण जी का रास्ता, रामकिशोर खवास का चौक, चांदपोल बाजार, जयपुर।

१०७

लालचन्द मारोठिया

१०८

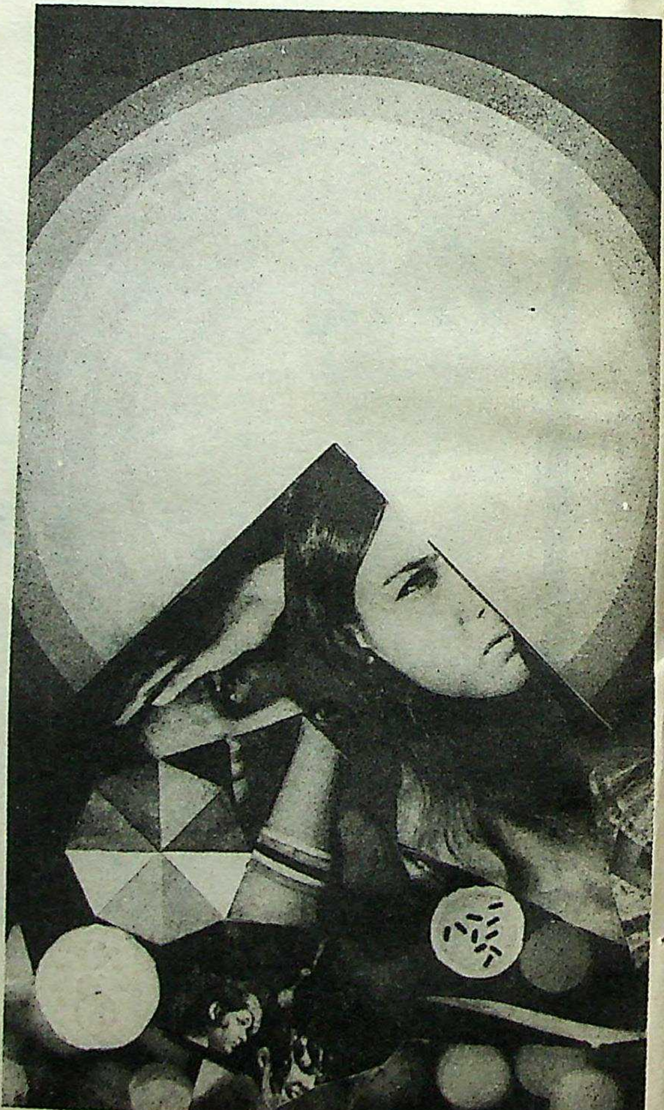

जयपुर में जन्म १९४९। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा। राजस्थान ललित कला अकादमी सहित जयपुर, जोधपुर एवं इन्दोर तथा आर्ट्स एण्ड क्राफ्ट्स की राष्ट्रीय कला प्रदर्शिनी में प्रदर्शित इनकी रचनाएं राजस्थान आर्टिस्टस एण्ड फोटोग्राफर्स एसोसिएशन द्वारा पुरस्कृत हो चुकी हैं। सम्प्रति राज्य के कृषि विभाग में कलाकार। फ. १०९-११०।

स्टूडियो खातीपुरा, जयपुर।

श्रीमति ऊषा राठौड़

जन्म १९५०, कोचीन में प्रारम्भिक अध्ययन कर स्नातक तक अध्ययन मद्रास में किया। एम० एस० विश्वविद्यालय में प्रो० सुब्रहमण्यम से लियोग्राफी का अध्ययन १९७१ से ७४ तक किया। अर्नाकलम में स्थित 'चित्रकूटम' में लिथोग्राफ्स की एकल प्रदर्शिनी आयोजित की। वर्ल्ड प्रिन्ट कम्पीटीशन ७३ सेन फ्रान्सिस्को, कैलीफोर्निया १९७३ में भी रचनायें प्रदर्शित। द्वितीय ऑल इण्डिया आर्ट्स एग्जीबीशन में योग्यता प्रमाण पत्र प्राप्त किया। बैडमिण्टन में रुचि के साथ विद्यार्थी जीवन में सम्पादन कार्य भी किया। फ. १११-११३।

स्टूडियो नायला हाउस, एम० डी० रोड, जयपुर।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारी कृष्णा बैराठी

१६५० में जन्मी कुमारी बैराठी चित्रकला स एम० ए० करने के बाद अभी 'राजस्थानी चित्रकला में प्रकृति चित्रण' विषय पर शोध कार्य कर रहीं हैं। महारानी कालेज में पोट्रेट कम्पीटीशन में प्रथम पुरस्कार और इसी कालेज में ग्राफिक प्रतियोगिता में भी प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। रवीन्द्र मंच एवं सूचना केन्द्र में आयोजित विभिन्न समूह प्रदर्शनियों में भाग लिया। राजस्थान ललित कला अकादमी की वार्षिक प्रदर्शनी १६७७ में भी इनकी रचनाएं प्रदर्शित हो चुकी हैं। सम्प्रति कानोडिया महिला महाविद्यालय में चित्रकला में व्याख्याता। फ. ११२।

स्टूडियो बी०१७६, मंगल मार्ग बापू नगर, जयपुर।

कुमारी श्रुति भटनागर

जन्म १६५१। एम० ए० कला। रचनाएं १६७१ में अकादमी में प्रदर्शित हुईं।

नरेन्द्र कुमार शर्मा

जन्म जयपुर १६५१। बी० एस० सी०। स्कूल आफ आर्ट्स से डिप्लोमा। अकादमी की प्रदर्शनियों में पुरस्कृत।

१०६

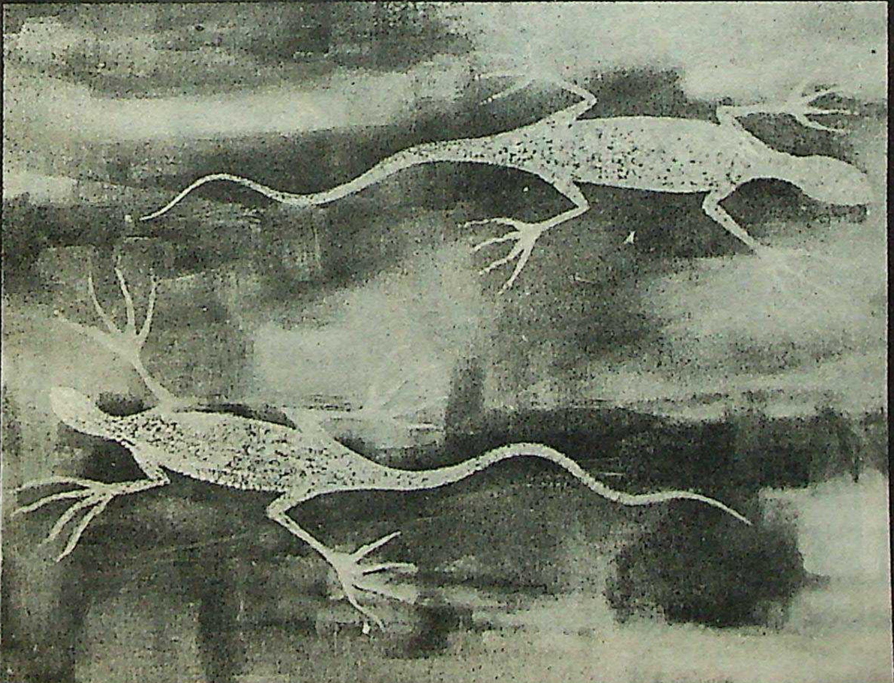

११०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

चन्द्र प्रकाश चौधरी

कांकरोली में १९५१ में जन्म। उदयपुर विश्व-विद्यालय से चित्रकला विषय में एम. ए. १९७७। महाकौशल कला परिषद् ७७ एवं राजस्थान ललितकला अकादमी में एकाधिक बार रचनाएं प्रदर्शित। उदयपुर विश्वविद्यालय यूथ फैस्टीवल में प्रमाण पत्र प्राप्त किया। टखमण २८ के सक्रिय सदस्य, इसके पदाधिकारी भी रह चुके हैं। सम्प्रति एस. एस. जी. पारीक सैकेन्डरी स्कूल में कला-शिक्षक। फ. ११६ - १२२।

१११

११२

११३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

समदर सिंह खंगारोत "सागर"

जयपुर जिले के खंडेला ग्राम में १९५१ में जन्म । राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा १९७१ । संस्था की छात्र संसद से अब तक संबद्ध वहां क्लेमाडलिंग में अध्ययन कर रहे हैं। राजस्थान ललित कला आकादमी द्वारा १९७५ में पुरस्कृत,इसी वर्ष कलावृत्त द्वारा भी पुरस्कृत हुए । आईफैक्स की प्रथम परम्परागत कला प्रतियोगिता में प्रशस्ति पत्र प्राप्त किया । पांच वर्ष तक अध्यापन करके अब स्टूडियो पर ही परम्परागत शैली में साधनारत । फलक ११४-११७।

स्टूडियो २२५ तौकियों का रास्ता, जयपुर ।

सुभाष मेहता

नाथद्वारा में १९५१ में जन्म । उदयपुर विश्व-विद्यालय से १९७३ में चित्रकला विषय में एम. ए. किया एवं उसमें प्रथम स्थान प्राप्त किया । टखमण २८ की उदयपुर प्रदर्शनी ७१, ७८ जयपुर ७१, ७२ दिल्ली ७६, बम्बई और कलकत्ता ७७ में रचनाएँ प्रदर्शित । एशिया ७२ में राजस्थान मण्डप में भित्तिचित्र बनाने व आन्तरिक सज्जा का काम किया । राजस्थान ललित कला आकादमी में एका-धिक बार रचनाएँ प्रदर्शित.वहीं १९७६ में अपने चित्रों की एकल प्रदर्शनी भी आयोजित की । सम्प्रति आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग में कलाकार के पद पर कार्यरत । फलक १२३-१२७ ।

स्टूडियो : १ क ४५ ज्योतिनगर, जयपुर ।

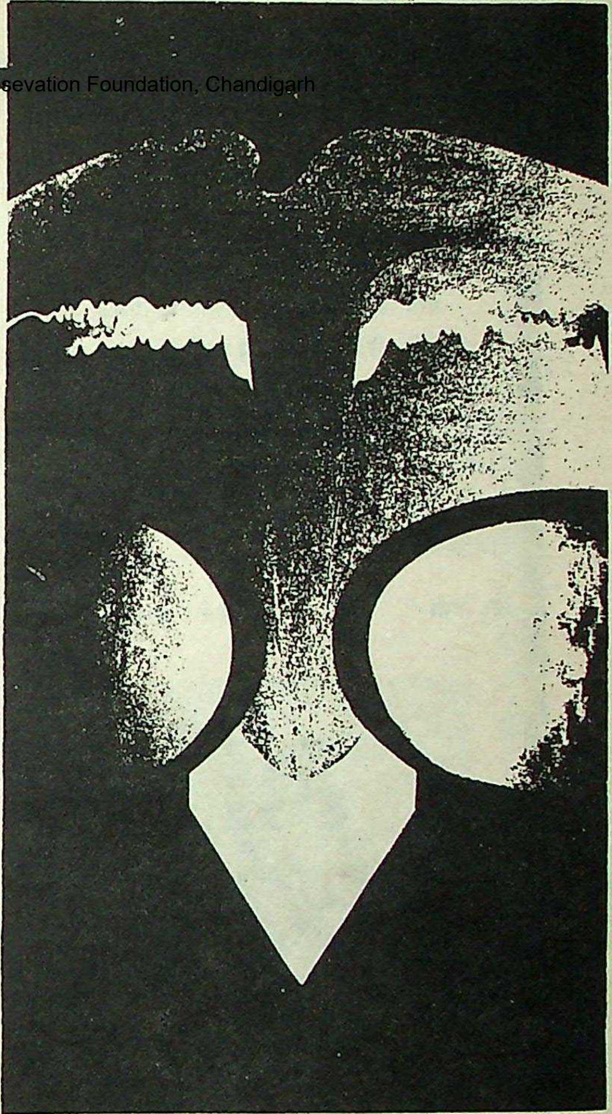

१२१

१२२

१२३

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्टूडियो : तिवाड़ी जी का नोहरा, महाजन का बाड़ा, गोविन्द जी का रास्ता, पुरानी बस्ती, जयपुर ।

श्रीमति रीता प्रताप

जन्म १९५२। चित्रकला में एम० ए० । आकादमी की प्रदर्शिनियों में प्रदर्शित इनकी रचनाएं महिला कलाकार प्रदर्शनी कलावृत्त प्रदर्शनी आदि में भी प्रदर्शित हो चुकी हैं। वनस्थली ७२, आइफैक्स दिल्ली १९७३ एवं आकादमी कला दीर्घा में एकल प्रदर्शिनियां आयोजित कीं । सम्प्रति जयपुर के भित्तिचित्रों पर शोधरत।

स्टूडियो वैश्य निवास, कबीर मार्ग, बनीपार्क, जयपर ।

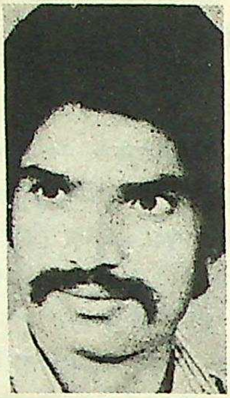

११४

११५

११६

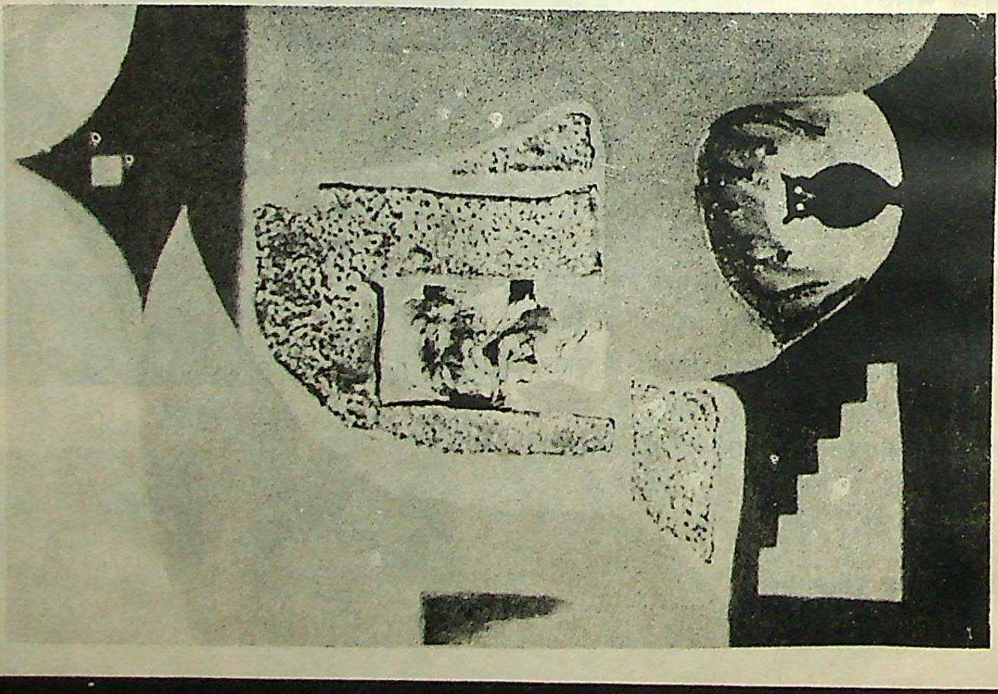

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

हेमन्त शेष

जन्म १९५२। एम. ए. समाजशास्त्र। रवीन्द्र मंच कला दीर्घा में १९७६ में एकल प्रदर्शनी आयोजित की। अकादमी में रचनाएँ प्रदर्शित। लेखन के क्षेत्र में एक परिचित नाम। "नारी इतिहास के विरुद्ध" पुस्तक प्रकाशित। राजस्थान पत्रिका के कला समीक्षक के रूप में चार वर्ष तक लिखा। सम्प्रति लघु उद्योग विभाग में अधिकारी।

फ. ११५-११८।

स्टूडियो : सी ८, मंजु निकुञ्ज, सी-स्कीम, जयपुर।

नारायण लाल शर्मा

स्कूल ऑफ आर्ट्स जयपुर से डिप्लोमा। रचनाएं आकादमी में प्रदर्शित हो चुकी हैं। कांग्रेस अधिवेशन में पुरस्कृत। सम्प्रति अपने कार्य कक्ष पर ही कार्यरत हैं।

११७

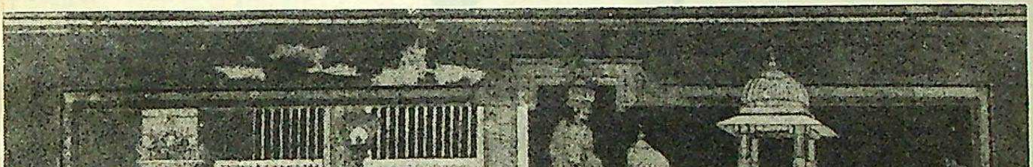

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

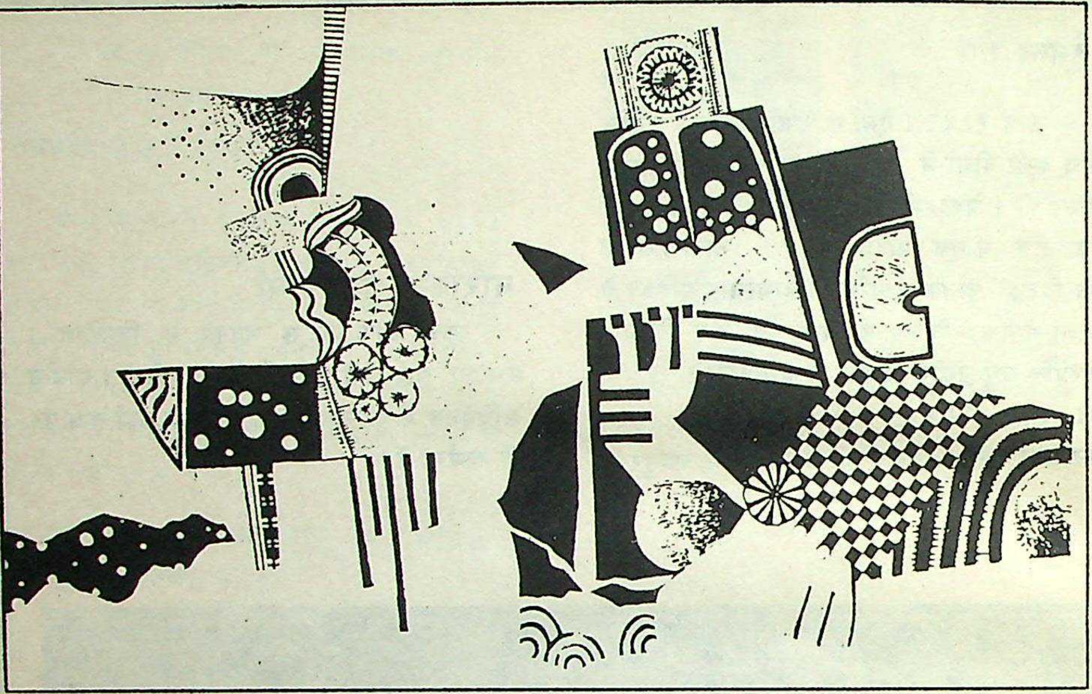

११८

राजेन्द्र कुमार अग्रवाल

१९६६ में मेट्रिक करने के बाद १९७१ में आर.जी.डी. करके राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से १९७५ में डिप्लोमा प्राप्त किया। कलावृत १९७८ दीपशिखा की चतुर्थ प्रदर्शनी, विद्युत विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी में पुरस्कृत इनकी रचनायें आकादमी की वार्षिक प्रदर्शनी १९७८ में भी प्रदर्शित हो चुकी हैं। सम्प्रति राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल में ट्रेसर के पद पर कार्यरत।

फ. ११९ - १२४।

स्टूडियो : २०, बास्को हाउस, गंगापोल, जयपुर।

११९

१२०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारी अनिता कोठारी

जयपुर में १९५४ में जन्म। राजस्थान विश्वविद्यालय से १९७६ में एम० ए० चित्रकला प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण की। १९७४ में फ्रेस्को कैम्प में भाग लिया। महिला प्रदर्शिनी १९७५, एकल प्रदर्शनी १९७६, दीपशिखा व अरुणोदय १९७६, कलावृत्त १९७८ में प्रदर्शित होने के साथ इनकी रचनाओं को राजस्थान ललित कला अकादमी की प्रदर्शिनी १९७६ में भी प्रतिनिधित्व मिला। फ.१२०-१२१।

स्टूडियो १२७६, गोपालजी का रास्ता, जयपुर।

श्रीमती मीनाक्षी काजी

जयपुर में १९५४ में जन्म। आगरा विश्वविद्यालय से चित्रकला में एम० ए० १९७६। जयपुर में एकल प्रदर्शनी १९७६। राष्ट्रीय कला प्रदर्शनी ७६ और ७८, आइफैक्स ७७, राजस्थान ललित कला आकादमी से १९७८ में पुरस्कृत किया फलक १२५।

कुमारी शशि शाह

जयपुर में जन्मी शशि शाह के माता पिता मूलत: शेखावाटी के हैं और अब इनका व्यवसाय केरल में है। अध्ययन से ज्यादा इनकी रुचि कला में रही और मोहनलाल गुप्ता के शिष्यत्व में कला साधना प्रारम्भ कर दी। १९७३ में राजस्थान कला केन्द्र के तत्वाधान में इनकी पहली प्रदर्शनी सूचना केन्द्र में आयोजित हुई। १९७४ में राजस्थान ललितकला आकादमी ने इनकी दूसरी एकल प्रदर्शनी का आयोजन किया। लायन्स क्लब ने इनकी प्रदर्शनी का आयोजन १९७६ में किया।

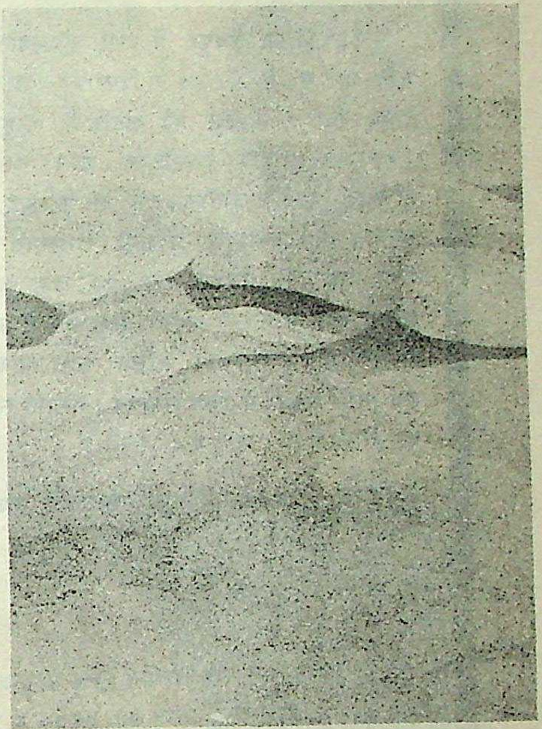

१.२४

इनके अतिरिक्त ललितकला आकादमी एवं अन्य समूह प्रदर्शिनियों में भी इनके चित्र प्रदर्शित हो चुके हैं। फलक १२६।

स्टूडियो ५ छ २० जवाहरनगर, जयपुर।

१२५

१२६

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारी आशा शर्मा

१९५६ में जयपुर में जन्म, राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स से १९७७ में डिप्लोमा। राजस्थान राज्य विद्युत मण्डल की प्रदर्शिनी में पुरस्कृत, १९७८ में पोद्दार इन्स्टीट्यूट द्वारा आयोजित स्टूडेन्टस् आर्ट एग्जीबीशन में भी पुरस्कृत. इनकी रचनायें चतुर्थ कलावृत्त प्रदर्शनी राजस्थान ललित कला अकादमी १९७६ एवं ७७ तथा राष्ट्रीय ललित कला अकादमी अहमदाबाद ७८ में प्रदर्शित हो चुकी हैं। राजस्थान ललित कला आकादमी एवं निजि संग्रहों में चित्र संग्रहीत। सम्प्रति स्टूडियो पर ही कार्यरत। फ. १२८-१३२।

स्टूडियो २१५ सौक्रियों का रास्ता, जयपुर।

१२७

कुमारी मीनाक्षी शर्मा

१९५६ में जन्म। राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स से १९७५ में डिप्लोमा प्राप्त कर १९७७ में राजस्थान विश्वविद्यालय से चित्रकला में एम० ए० जिसमें योग्यता क्रम में प्रथम स्थान प्राप्त किया। १९७८ में पहली एकल प्रदर्शनी अकादमी कला दीर्घा में आयोजित की। महारानी कालेज, मेडिकल कालेज, राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स, यूथ आर्टिस्ट एसोसिएशन एवं पोद्दार इन्स्टीट्यूट आफ मैनेजमेन्ट द्वारा आयोजित स्टूडेन्ट्स आर्ट एग्जीबीशन के साथ राजस्थान ललित कला अकादमी की उन्नीसवीं वार्षिक प्रदर्शनी में भी इनके चित्र प्रदर्शित हुए। सम्प्रति रिजर्व बैंक आफ इन्डिया में सेवारत। फ. १३०-१३३।

स्टूडियो ९९८, बगरु ठाकुर का रास्ता, जयपुर।

१२८

१२९

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

एस० बी० गान्धी

बिजनस मैनेजमेन्ट का अध्ययन कर रहे इन्होंने अपनी प्रारम्भिक कला शिक्षा राजस्थान विश्वविद्यालय हॉबी वर्कशाप से ली। आकादमी तथा कलावृत्त एवं हॉबी वर्कशाप प्रदर्शनी में रचनायें प्रदर्शित। फ. १२६।

स्टूडियो सी–३, शिवाजी मार्ग, तिलक नगर, जयपुर।

१३०

१३१

दिलीप दवे

गुजरात में आनन्द स्थान पर १९५८ में जन्मे

१३२

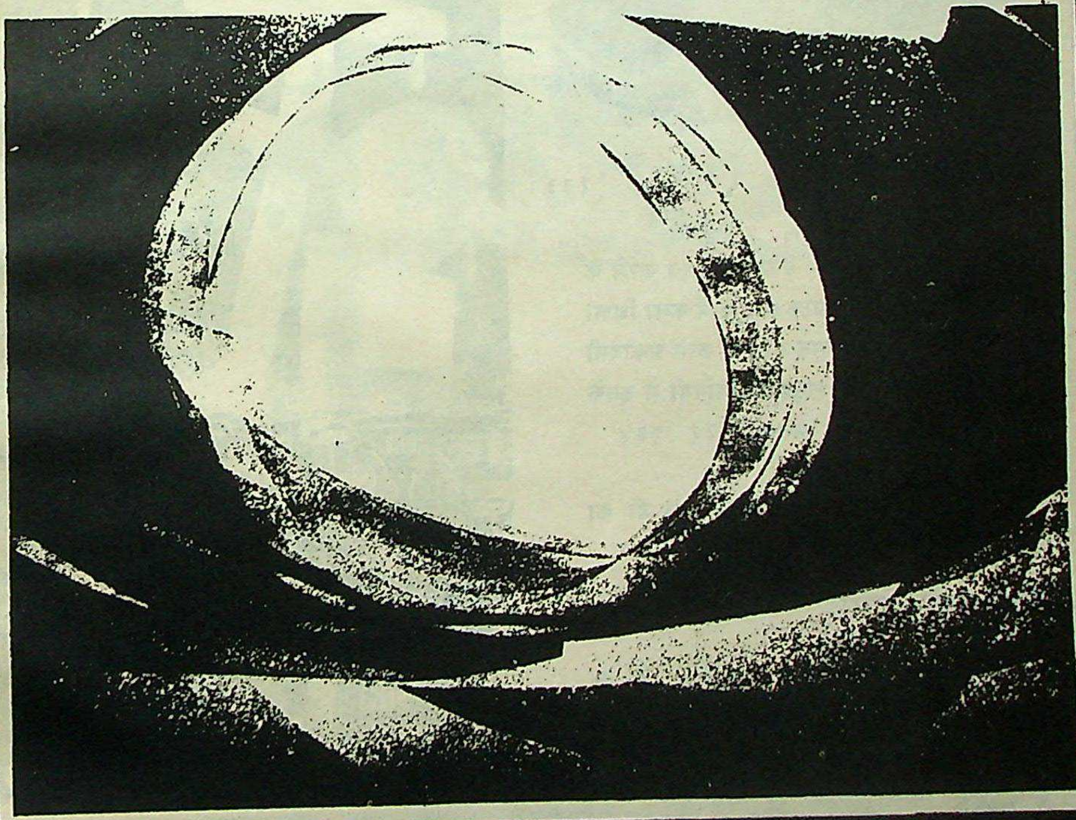

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्टूडियो चितरंजन मार्ग, ब्रजभूषण कश्यप का मकान, सी स्कीम, जयपुर।

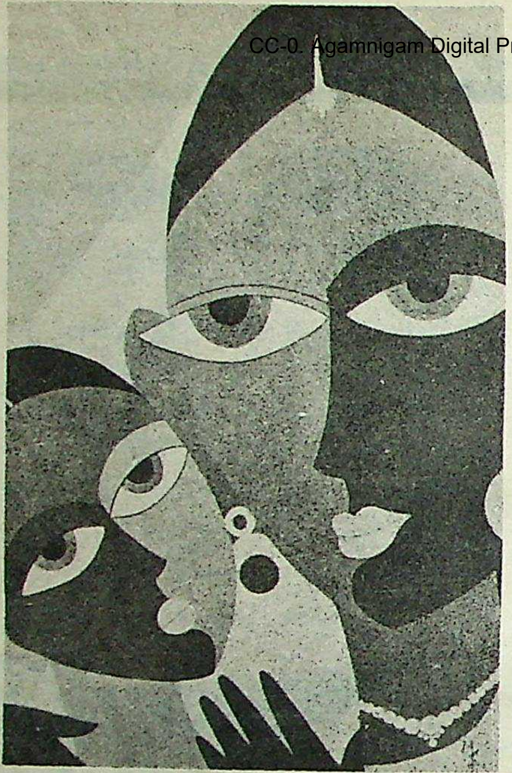

१३३

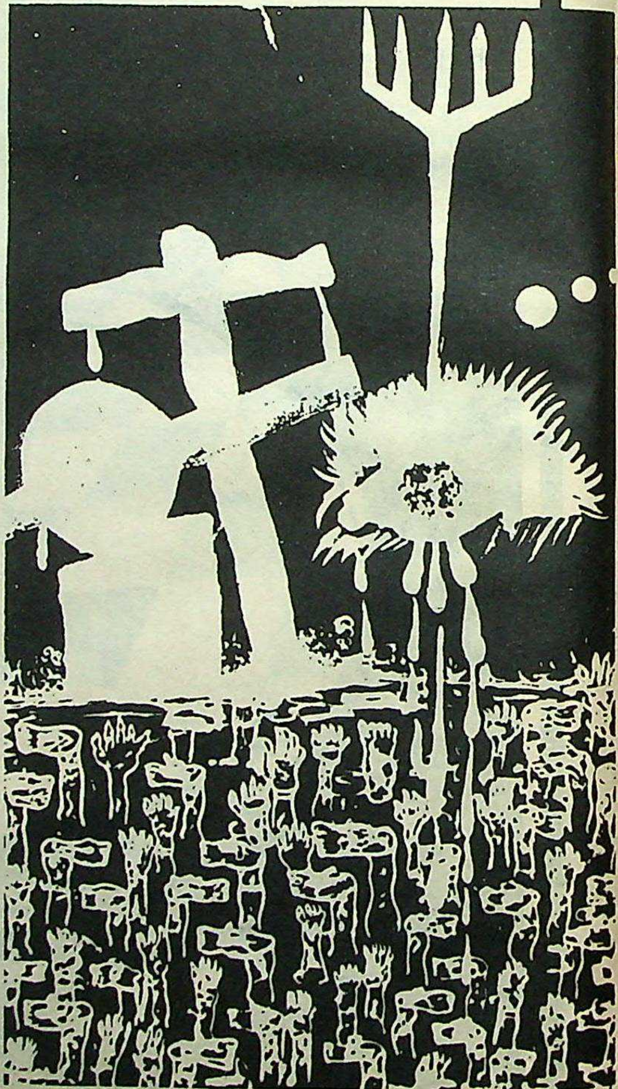

१३४

दिलीप १९७५ में हायर सैकेण्डरी पास करने के उपरान्त राजस्थान स्कूल ग्राफ ग्रार्ट्स में कला शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। राजस्थान ललित कला ग्रकादमी एवं कलावृत्त सहित कई समूह प्रदर्शनियों में इनके चित्र प्रदर्शित हो चुके हैं। फलक १३१ १३४

स्टूडियो 'मातृछाया', ५ बी० पुरोहित जी का बाग, जयपुर।

देवेन्द्र कुमार वर्मा

रामनिवास वर्मा के पुत्र बचपन में ही राजस्थान ललित कला ग्रकादमी से ग्रपनी ग्राफिक रचनाग्रों के लिये पुरस्कृत हो चुके हैं।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

नये उभरते प्रयोगशील कलाकार

कुछ कलाकार जो अपनी जगह बना रहे हैं उन्हें भुला कर उनकी प्रतिभा को नकारा नहीं जा सकता । इस वर्ग में कलाकारों की संख्या अपेक्षाकृत ज्यादा है । समय रहते जितनी सूचनाएं मिल सकीं वे प्रस्तुत हैं :

१३५

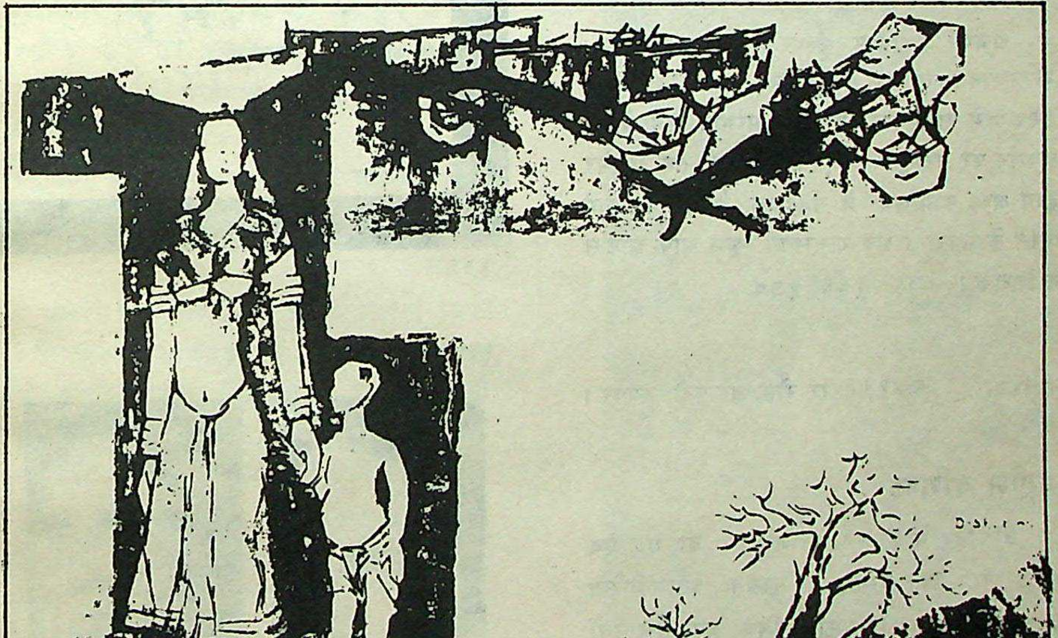

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

दिनेश चन्द्र शर्मा

जन्म १९३१ में नाथद्वारा के कलाकार परिवार मे। १९५१ में आई० जी० डी० पास कर १९६४ में रायल ड्राइंग सोसाइटी लन्दन में हाईपर ड्राइंग सर्टिफिकेट आनर्स से पास, १९७१ में सी० एन० कला महाविद्यालय अहमदाबाद से डिप्लोमा।

फलक १३५ १३७

स्टूडियो जी–११, मेजर शैतानसिंह कॉलोनी, शास्त्रीनगर, जयपुर।

गोपाल वर्मन

अजमेर के समीप पुष्कर में १९३६ में जन्म। राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स से १९७५ में डिप्लोमा। १९७८ में राजस्थान शिक्षक सम्मान समारोह के अवसर पर पुरस्कृत। १९५८ से ६९ तक अजमेर दृश्य श्रव्य कार्यालय में निदेशक के पद पर कार्य करने के उपरान्त अब राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स में शिक्षक। फलक १३६ १३८

स्टूडियो २४१, गैटोर रोड, ब्रह्मपुरी, जयपुर।

गणेश वशिष्ठ

बीकानेर में १९४० मे जन्म। बी. ए. एवं आइ. जी. डी. बम्बई। मुख्यतः आत्मदीक्षित कलाकार प्रयोगवादी रुझान लिये हुए तैल रंगों में काम करते हैं। प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप सहित कई समूह प्रदर्शनियों में रचनाएँ प्रदर्शित। सम्प्रति आर्थिक एवं सांख्यिकी विभाग में अधिकारी।

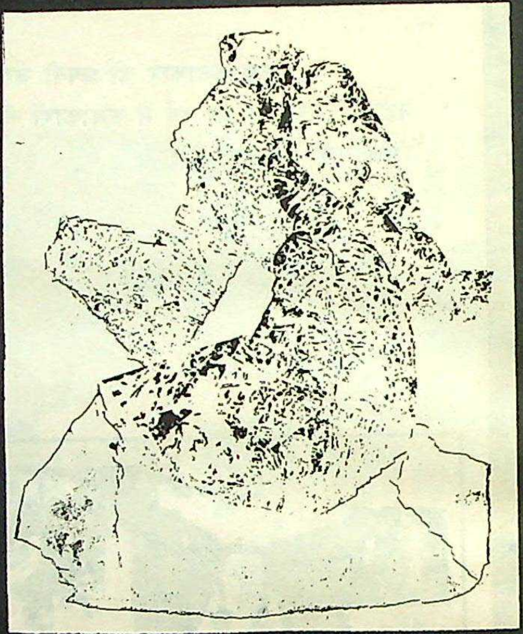

१३६

१३७

१३८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

भंवर सुजान गढ़ी

जन्म जयपुर १९४५। राजस्थान स्कूल ग्राफ ग्रार्ट्स में चतुर्थ वर्ष तक कला ग्रध्ययन किया। सूचना केन्द्र जयपुर में एकल प्रदर्शनी ग्रायोजित कर चुके सुजानगढ़ी रेखांकन में पोर्ट्रेट के लिये कला जगत में परिचित हैं सम्प्रति पुराना रथखाना मिडिल स्कूल में कला ग्रध्यापन।

विनोद भारद्वाज

देहरादून में १९४६ में जन्म, ग्रलीगढ़ एवं दिल्ली में शिक्षा प्राप्त की। पिछले डेढ़ दशक से कला जगत से सम्बद्ध दिल्ली एवं ग्रलीगढ़ में तीन एकल प्रदर्शिनियाँ ग्रायोजित कर चुके हैं। ग्रंग्रेजी मासिक 'फोटो का' के सम्पादक, सम्प्रति स्वयं का व्यवसायिक कला कार्यकक्ष स्थापित किये हुए हैं।

फलक १४० १४४

स्टूडियो बी–४३ जनता कॉलोनी, जयपुर।

शौकत ग्रली

ग्रजमेर में १९४६ में जन्मे शौकत ग्रली ने १९७१ में चित्रकला विषय में एम. ए. किया। ग्राधुनिक चित्र बनाने के साथ मिनियेचर में दक्ष, ग्रली के प्रयासों से इनकी संस्था को रोटरी क्लब द्वारा ग्रायोजित बालचित्रकला प्रतियोगिता में लगातार तीन वर्ष तक ट्राफी मिली। कलावृत्त सहित कई प्रदर्शिनियों में रचनाएँ प्रदर्शित। संम्प्रति राजस्थान विद्यालय बजाज नगर में कला शिक्षक।

फलक १३९ १४१

स्टूडियो : द्वारा/गुलाम हुसैन हाजी मकबूल हुसैन
कायमखानी मोहल्ला, चांदपोल बाजार,
जयपुर।

१३९

१४०

१४१

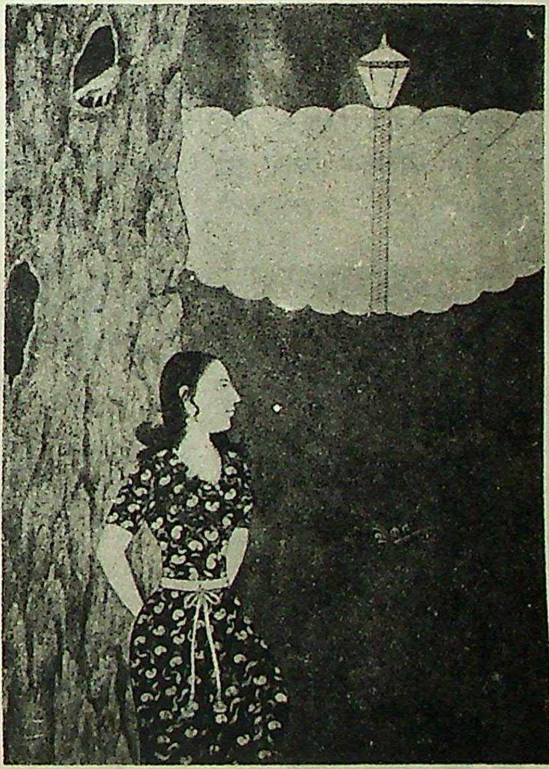

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सत्यनारायण कुमावत

जन्म १९४७। जयपुर व जोधपुर में अपनी एकल प्रदर्शिनियां आयोजित कीं। कुमावत आर्ट-ग्रुप के पदाधिकारी, ग्रुप की वार्षिक प्रदर्शनी में पुरस्कृत भी हो चुके हैं। परम्परागत चित्रण पद्धति में अच्छी गति है। सम्प्रति अपने कार्यकक्ष पर ही साधनारत। फ १४२

स्टूडियो : कृष्ण कुंज, शिल्प कालोनी, झोटवाड़ा, जयपुर–१२

जी० एस० श्रीवास्तव

१९४८ में जयपुर में जन्मे श्रीवास्तव प्रथम श्रेणी में ड्राफ्टसमैन की परीक्षा १९६५ में उत्तीर्ण करने के बाद १९७७ में राजस्थान विश्वविद्यालय से अतिरिक्त विषय ड्राइंग एण्ड पेन्टिंग सहित स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण की। १९७८ में राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा प्राप्त। इनकी रचनाएं लाल बहादुर शास्त्री कालेज कला प्रदर्शिनी १९७४ में, दीपशिखा द्वारा आयोजित प्रदर्शनी १९७५ में, राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स की १९७८ की प्रदर्शनी एवं भारतीय भू वैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग द्वारा आयोजित प्रदर्शनी पुरस्कृत होने के साथ कलावृत्त की चतुर्थ अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी एवं युवा कलाकारों की समूह प्रदर्शनी में प्रदर्शित हो चुकी हैं। सम्प्रति भारतीय भूवैज्ञानिक सर्वेक्षण विभाग में कार्यरत।

फ १४३ १४५ १४४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्टूडियो आर-४६, गोविन्द नगर (पच्छिम) कृष्ण कपूर गलीचा फैक्ट्री के पीछे आमेर रोड, जयपुर ।

मनमोहन शर्मा

१६४६ मे जयपुर में जन्म । राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स मे लम्बे समय तक लिपिक पद पर कार्य करते ग्राफिक में प्रयोग हेतु प्रवृत्त हुए और काफी काम किया । रचना कलावृत्त की चतुर्थ अखिल भारतीय कला प्रदर्शिनी एवं राजस्थान ललित कला अकादमी में प्रदर्शित ।

फ १५६ १६४

स्टूडियो बाबा हरिश्चन्द्र मार्ग, म. नं. ६६४, जयपुर ।

कुमारी आलोकमयी मिश्रा

इटावा में जन्म १६५० । राजस्थान विश्वविद्यालय से चित्रकला में एम० ए० स्वर्ण पदक प्राप्त किया । अनेक सामहिक प्रदर्शिनियों में प्रदर्शित शिक्षक संघ द्वारा आयोजित प्रदर्शनी १६७४ में श्रेष्ठ दृश्य चित्र के लिये पुरस्कृत लेखन में भी रूचि । सम्प्रति रा० उच्च माध्यमिक बालिका विद्यालय गान्धी नगर में कला शिक्षिका । फ १४६

स्टूडियो सी-२७६, भाभा मार्ग, तिलक नगर, जयपुर ।

बृज मोहन

पिलानी में १६५१ में जन्म । स्व० श्री भूर-

१४५

१४६

१४७

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

सिंह शेखावत के शिष्य। राजस्थान स्कूल ग्राफ ग्रार्ट्स से चित्रकला में डिप्लोमा १९७५ में प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण किया। कालेज में अध्ययन करते समय राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर पर कई बार पुरस्कृत। लोक जीवन के चितेरे रहे हैं। सम्प्रति स्टूडियो पर ही कार्यरत। फ १४७ १६२

स्टूडियो : द्वारा/काश्मीर एण्ड राजस्थान हैण्डीक्राफ्ट्स, ग्रामेर।

कुमारी कुक्कू माथुर

जन्म जयपुर। १९७२ में राजस्थान विश्व-

१४८

१५९

१५०

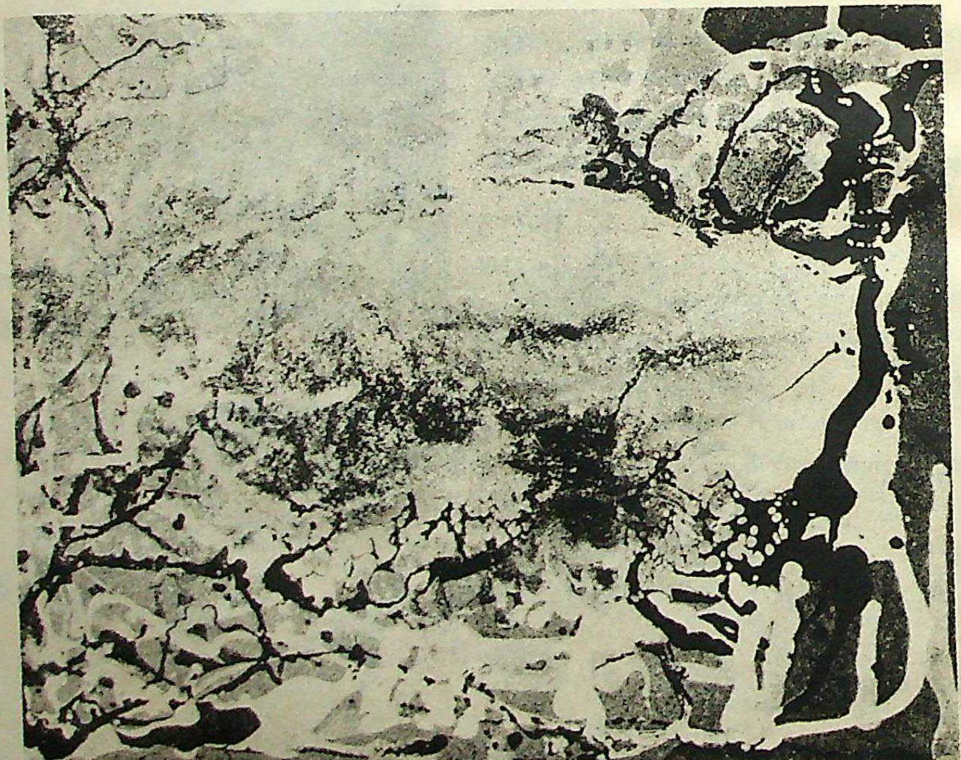

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

विद्यालय से चित्रकला विषय में एम० ए० प्रथम श्रेणी से उत्तीर्ण। कलवृत्त की तृतीय प्रदर्शनी में पुरस्कृत संम्प्रति १९७६ से महाराजा राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में कला शिक्षिका।

फ १४८ १५०

स्टूडियो चन्द्र निवास, सुभाष मार्ग, सी स्कीम, जयपुर।

गोपाल लाल माथुर

१९५२ मे जयपुर में जन्म। राजस्थान स्कूल ग्राफ ग्रार्टस के पंचम वर्ष के विद्यार्थी संस्था द्वारा ग्रायोजित समूह प्रदर्शिनियों में रचनाएँ प्रदर्शित कर चुके हैं। विद्यार्थी कला प्रदर्शनी १९७८ में पुरस्कृत ग्रकादमी कला दीर्घा मे ग्रपनी एकल प्रदर्शनी ग्रायोजित कर चुके हैं। रचना ललितकला ग्रकादमी एवं विभिन्न निजि संग्रहों में संग्रहीत।

फ १५९ १६३

१५१ १५२

१५३

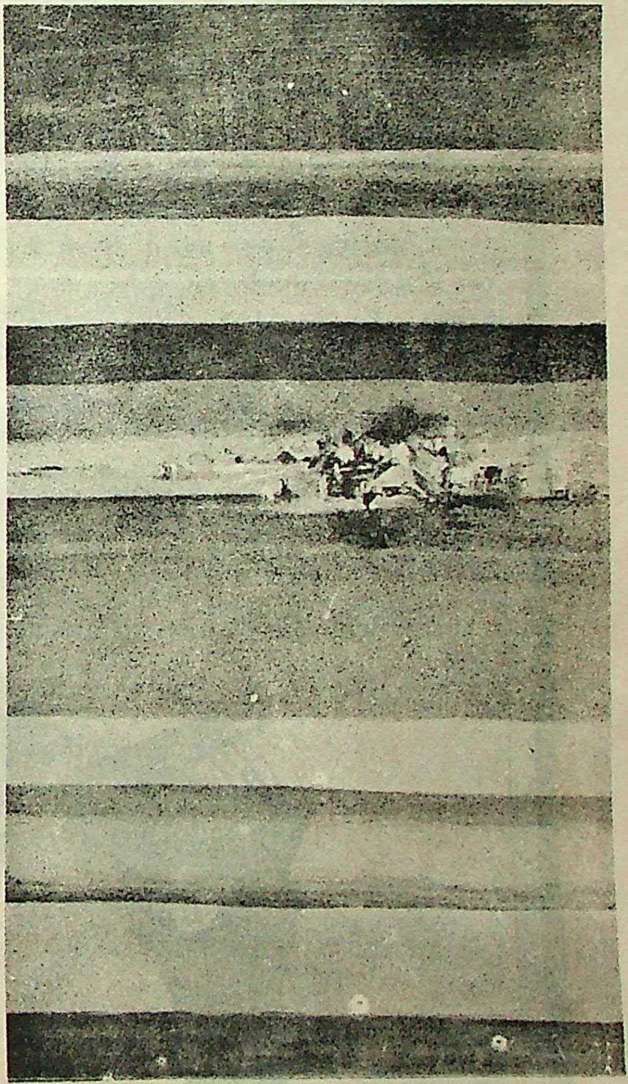

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारी किरण मदान

लखनऊ में १९५३ में जन्म । एम. ए. तक अध्ययन किया । विश्वविद्यालय हॉबी वर्क शॉप प्रदर्शनी रचनाएँ प्रदर्शित । विद्यार्थी कला प्रदर्शनी १९७८ में रचना पुरस्कृत । संगीत में भी रुचि । फ १५१ १६८

कुमारी स्वरन मदान

बरेली में १९५५ में जन्म । बी. ए. तक अध्ययन किया । सी. सी. एफ. ए. द्वारा आयोजित प्रदर्शनी एवं विद्यार्थी कला प्रदर्शनी १९७८ में रचनाएँ प्रदर्शित । सौन्दर्य सज्जा, संगीत आदि में भी रुचि । फ १५२ १६१

१५४

१५५

१५६

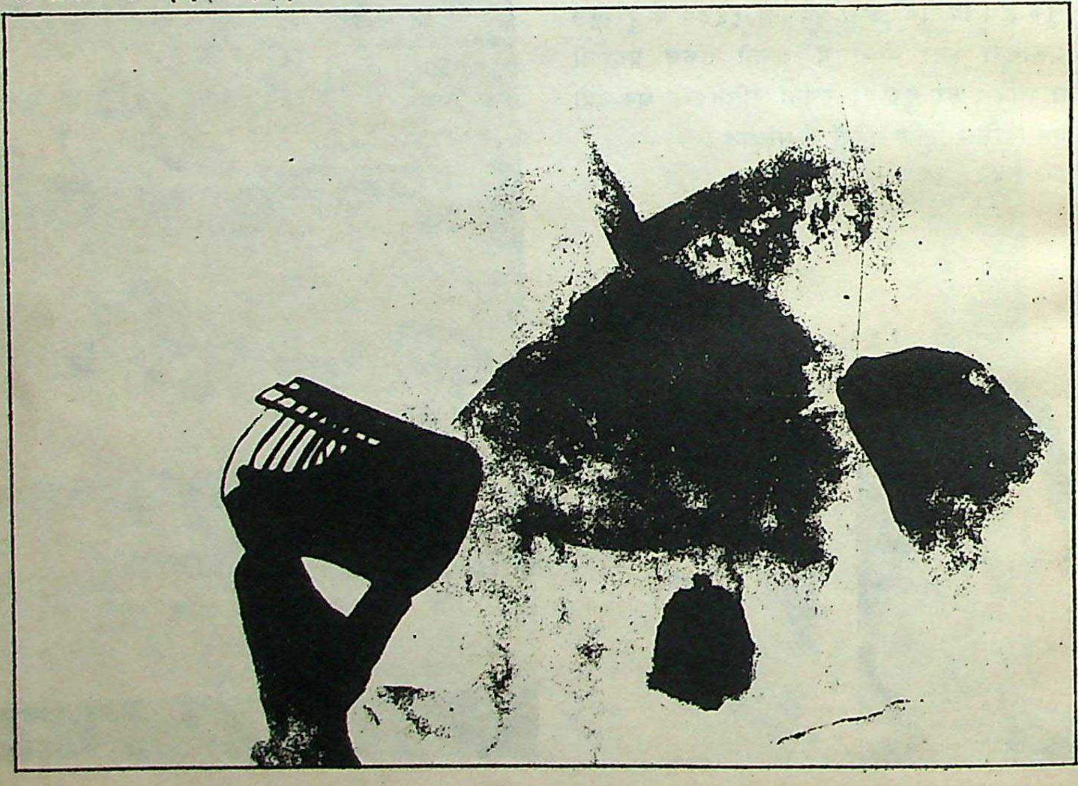

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारी सुरभि मैनी

जन्म १९५५ । राजस्थान विश्वविद्यालय से एम. ए. चित्रकला में स्वर्णपदक प्राप्त किया । राजस्थान विश्वविद्यालय के कलाकार, अरुणोदय एवं प्रोग्रेसिव आर्टिस्ट ग्रुप जयपुर की प्रदर्शनियों में भाग लेने के साथ-साथ, आइफैक्स, दिल्ली द्वारा आयोजित कलामेला में भी रचना प्रदर्शित । सम्प्रति बनस्थली विद्यापीठ में चित्रकला में प्राध्यापिका । फ १५४ १६५

स्टूडियो : ८१७ राजापार्क, जयपुर ।

१५७

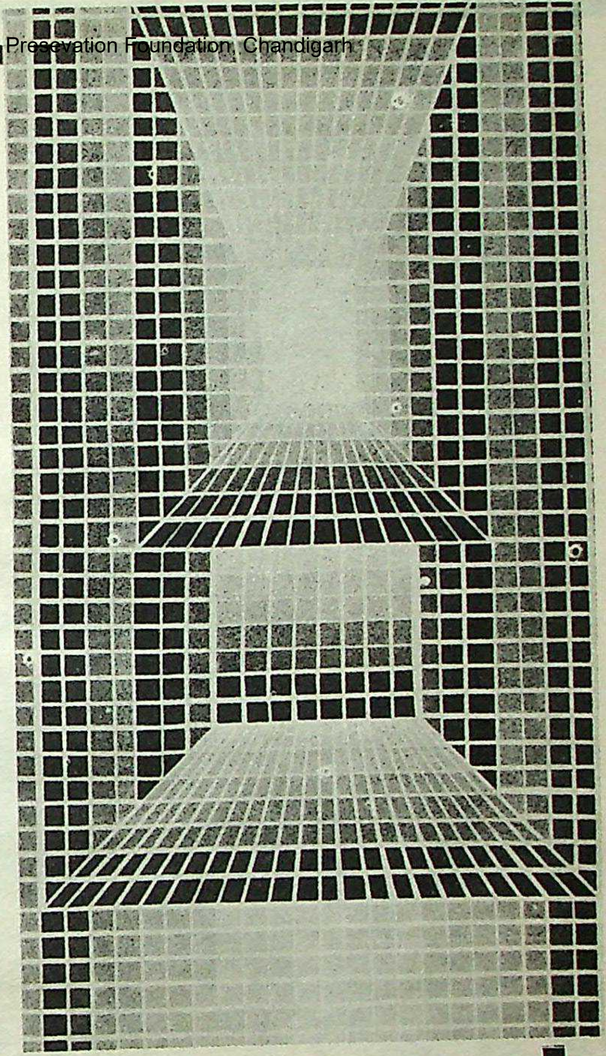

१५८

१५९ १६०

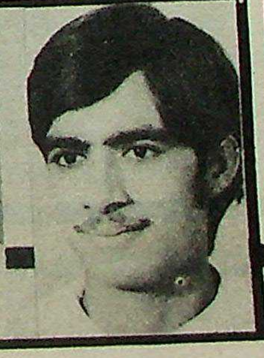

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

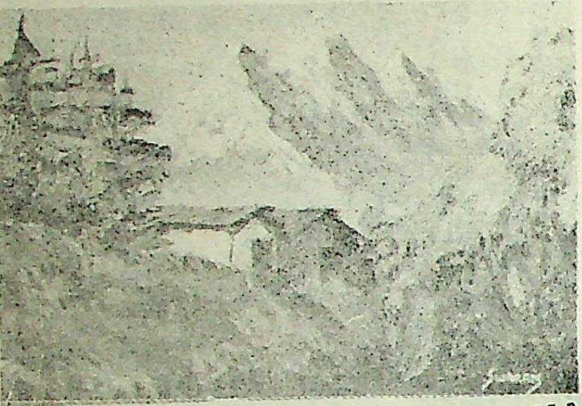

१६१

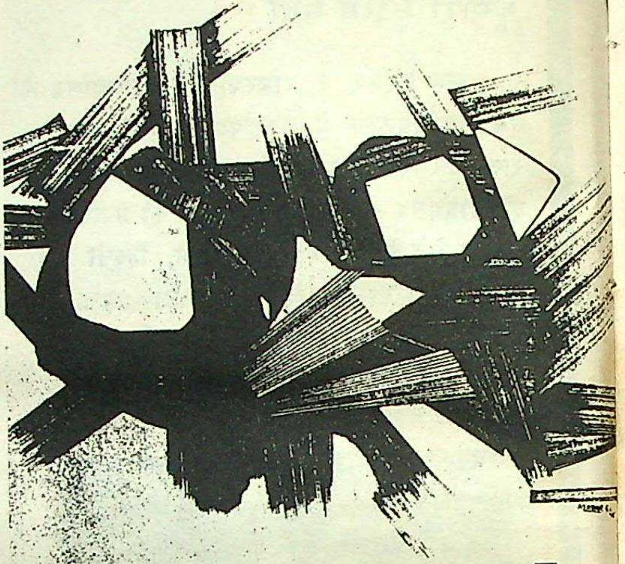

१६३

१६२

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

कुमारी अंजली डागा

जन्म जयपुर। राजस्थान विश्वविद्यालय के चित्रकला विषय सहित स्नातक एवं एम० ए० दर्शन शास्त्र। कलावृत्त की तृतीय प्रदर्शनी १९७८ में पुरस्कृत। संम्प्रति स्वनिवास पर ही रचनाशील।

फ १५३ १५५

स्टूडियो २६ तख्तेशाही रोड, जयपुर।

आर० ए० सोनी

१९५६ में जयपुर में जन्म। बी० ए० के छात्र आजकल राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स में अध्ययन कर रहे हैं। १९७८ में आकादमी कला दीर्घा में एकल प्रदर्शनी आयोजित की। फ १५८ १६६

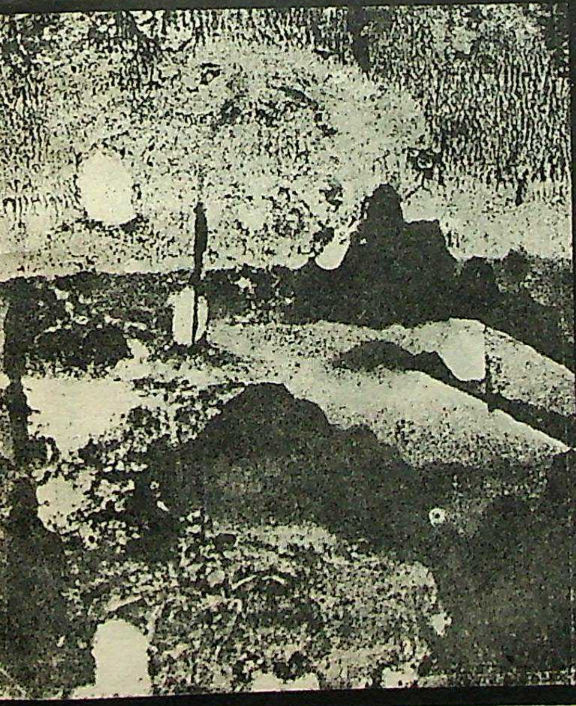

१६४

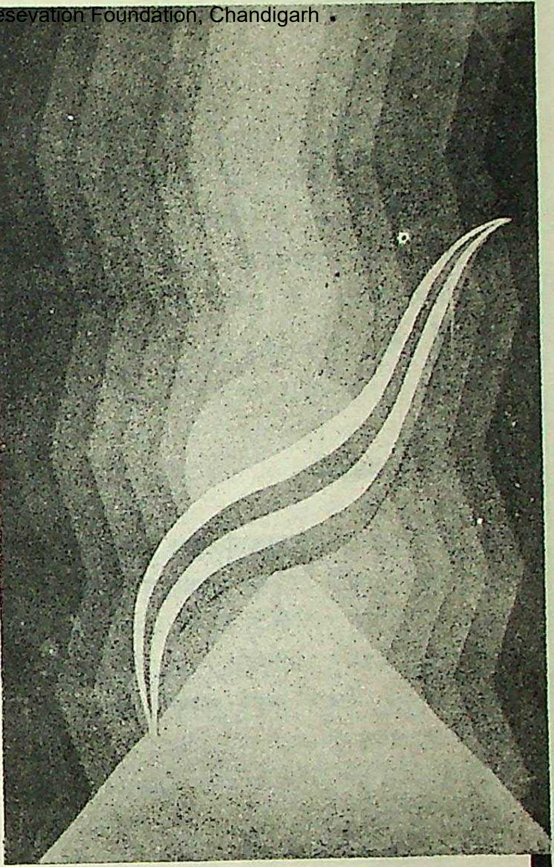

१६५

कुमारी रजनी सक्सेना

जन्म १९५६, जयपुर। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस से १९७८ में चित्रकला में डिप्लोमा। संस्था की प्रदर्शिनियों, युवा कलाकार प्रदर्शिनी एवं कलावृत्त की चतुर्थ अखिल भारतीय कला प्रदर्शनी में रचनाएं प्रदर्शित। विद्यार्थी कला प्रदर्शनी ७८ में पुरस्कृत। फ १५६

स्टूडियो १०३५ राम भवन दरीबापान, जयपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुरुप कुमार

जयपुर में १९५७ में जन्म। राजस्थान ललित कला अकादमी कलादीर्घा में अपने ग्राफिक्स की एकल प्रदर्शनी १९७८ में आयोजित की। परम्परागत शैली में भी साधनारत। सम्प्रति राजस्थान स्कूल ऑफ आर्टस में तृतीय वर्ष चित्रकला के विद्यार्थी। फ १५७ १६७

स्टूडियो डी–१२१, बापूनगर, जयपुर।

महावीर स्वामी

जन्म १९५९। राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स जयपुर से १९७८ में चित्रकला विषय में डिप्लोमा। संस्था की वार्षिक प्रदर्शनी में १९७६ प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त मीरा चित्र प्रतियोगिता ७८ एवं रीव्ज कलर कम्पनी प्रतियोगिता ७८ में भी प्रथम पुरस्कार प्राप्त किया। सम्प्रति अपने कार्यकक्ष पर ही परम्परागत शैली चित्रण में साधना कर रहे हैं। फ १६०

स्टूडियो : द्वारा/कालूराम शर्मा, जयलाल मुन्शी का रास्ता, पांचवा चौराहा, जयपुर।

१६६ १६७

नई प्रतिभाओं की सृजनात्मक क्षमता का आकलन सहज ही नहीं किया जा सकता। कोई आश्चर्य नहीं जिसे हम प्रतिभावान समझते हैं वह कल ही इस क्षेत्र से पलायन कर जाय। यह भी आवश्यक नहीं कि जो आज अपनी दशा दिशा नहीं खोज सका है वह इसी तरह भटकता रहेगा। निश्चित रूप से चिन्तन और लगन मौलिक सृजन का कारण बनती है। यह व्यक्ति की क्षमता पर निर्भर है कि वह कब तक हिम्मत नहीं हारता। इनमें से कई चमक भी सकते हैं बुझ भी सकते हैं लेकिन महत्वपूर्ण यह है कि अब तक कला से किसी न किसी प्रकार जुड़े हुए हैं। इनके अतिरिक्त भी प्रतिभाओं की कमी नहीं। उन्हें भुलाने का विचार नहीं था समय रहते जितनी सूचनाएं उपलब्ध हो सकीं वही प्रस्तुत की जा सकी हैं।

१६८

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

गुलाबी और सफेद संगमरमर की मूर्तियां जयपुर की विशिष्टता हैं । आज मूर्ति मोहल्ला अपने आप में दर्शनीय स्थान है । पत्थरों में प्राण प्रतिष्ठा करते हजारों कलाकार अपनी साधना में निमग्न केवल कला ही के लिये समर्पित हैं । इनमें से कुछ कलाकारों ने अपने माध्यम को चिन्तन दे, समसामयिक कला जगत में जगह बनाई है । प्रस्तुत है, उनका परिचय ।

जयपुर, मूर्तिकला के लिये विश्व प्रसिद्ध है यह कहने की आवश्यकता नहीं । परम्परागत शैली में काम कर रहे कलाकारों की आज भी लम्बी सूची है और यह परम्परा लम्बे समय से चली आ रही है। इसमें हम महत्वपूर्ण कलाकारों का ही उल्लेख कर रहे हैं । मूर्तिकला के क्षेत्र में कलाकारों की संख्या निश्चित रूप से ज्यादा है । इनके नाम ढूंढ पाना तो इसलिए कठिन है कि मूर्ति शिल्प पर रचनाकार हस्ताक्षर करता ही कहां है । फिर भी इसमें सर्व प्रथम उस्ताद माली राम जी का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है । माली राम जी को अपने समय का माइकेल एन्जेलो कह दिया जाय तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी । इनका निधन १९४६ में हुआ । महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफट्स में आप शिक्षक भी रहे । बिलकुल देशी ठाठ, में मालीराम जी यथार्थवादी शैली में अच्छे यूरोपीय मूर्तिकारों के टक्कर की रचनाएं बनाने में सक्षम थे । गुलाब चन्द जी शर्मा, दूसरा नाम है । आप भी स्कूल आफ आर्टस में शिक्षक थे ।

टी० पी० मित्रा ने जयपुर की मूर्तिकला के क्षेत्र में माडलिंग की कमी को पूरा किया । इनके कई शिष्य आज अच्छे मूर्तिकार हैं । कलकत्ता के राजरहाट में १९१३ में जन्मे श्री मित्रा जी की कला शिक्षा लाहौर में हुई १९३७ में भवेश चन्द्र सान्याल के साथ लाहौर में ही काम सीखा । समरेन्द्र नाथ गुप्ता की सहमति से के० के० मुकर्जी इन्हें १९३५ में जयपुर ले आये तब से आप महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स में शिक्षण कार्य करते रहे । मूर्तिकला के अतिरिक्त चर्मकला, कुट्टी मिट्टी वाशपेन्टिग ही नहीं रविन्द्र संगीत और नाटकों के निर्देशन में भी आप कुशल माने जाते थे । १९६८ में स्कूल ऑफ आर्ट्स से सेवा निवृत्त हुए । उनकी कृतियां खोज पाना बहुत ही कठिन कार्य है क्योंकि उन्होंने सब काम तो औरों के लिये किया था । उनकी कृतियां

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

खोजनी है तो शिष्यों से मिलना होगा।
फलक १६६।

नारायण लाल जैमिनी अन्य कामों के साथ अपने हाथी के लिये विशेष रूप से प्रसिद्ध हैं। सवालाख का हाथी बनाने के बाद आपका स्वर्गवास हो गया था। जयपुर की मूर्तिकला के क्षेत्र में इनका महत्व-पूर्ण स्थान है। इसी प्रकार पं० हीरालाल शर्मा यथार्थवादी शैली के साथ देवी देवताओं की मूर्ति गढ़ने, जैन मूर्तियों एवं मन्दिरों के निर्माण आदि में भी दक्ष थे। ८१ वर्ष की अवस्था में १६७४ में निधन हुआ।

रामरतन मिश्रा, मिश्रा परिवार के मेधावी कलाकार थे। जे०जे० स्कूल ऑफ आर्ट्स से अध्ययन किया। युवावस्था में ही अपनी साधना से कला जगत को वंचित रखे, स्वर्गवासी हो गये।

आज इस विस्तृत व्यवसाय में कुछ कलाकार ऐसे भी हैं जो अपनी प्रतिभा के कारण सुपरिचित हैं उनका अलग अलग परिचय प्रस्तुत है

गोपी चन्द मिश्र

जन्म जयपुर। राजस्थान ललित कला अकादमी से चार बार पुरस्कृत हो चुके हैं। मूर्ति कला पैतृक व्यवसाय। सुपुत्र एवं पौत्र भी परम्परागत तथा आधुनिक दोनों ही शैलियों में ख्याति अर्जित कर रहे हैं। आकादमी से सम्बद्ध कई प्रदर्शिनियों में निर्णायक रहे। १६७८ से आकादमी का सर्वोच्च सम्मान "कलाविद्" से सम्मानित। सम्प्रति अपने कार्यकक्ष पर ही साधना कर रहे हैं।

फलक १७०-१७२।

स्टूडियो सनातन धर्म मूर्ति आर्ट, भिण्डों का रास्ता, जयपुर।

सोहन लाल अत्री

अलवर के भिरी ग्राम में १६२१ में जन्म। १६५६ में ललितकला आकादमी की प्रदर्शिनी में भाग लिया। जयपुर एवं अहमदाबाद में आपकी रचनाएं, देखी जा सकती हैं। यथार्थवादी बस्ट एवं स्टेच्यू में प्रवीण। संप्रति अपने कार्यकक्ष पर ही साधना। फ. १७१।

स्टूडियो रामकिशोर मूर्ति आर्ट, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर।

लल्लू नारायण शर्मा

कलाकार घराने में जन्म १६२४, जयपुर। पिता सुन्दरलाल शर्मा गुलाबचन्द जी के भाई थे। उस्ताद मालीराम जी इनके बाबा। १६३६ में डिप्लोमा मूर्तिकला एवं १६४६ में डिप्लोमा क्लेमाडलिंग महाराजा स्कूल ऑफ आर्ट्स एण्ड क्राफट्स से किया। साथ ही चित्रकला में भी डिप्लोमा प्राप्त किया। राजस्थान ललित कला आकादमी की प्रथम प्रदर्शनी में पुरस्कृत होने के बाद तीन बार फिर पुरस्कृत हुए। इनकी रचनाएं बापू व कस्तूरबा की

१७०

१७१

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

आदमकद मूर्तियां बनारस में, नवलगढ़ में पोद्दार कालेज के बाहर मदन मोहन मालवीय की आठ फुट ऊंची प्रतिमा हरिद्वार में मदन मोहन मालवीय की कथावाचक के रूप में गंगा सभा कार्यालय में, इटावा में लालबहादुर शास्त्री की प्रतिमा आगरा में विक्टोरिया पार्क में, मोतीलाल नेहरू की १३ फुट ऊंची प्रतिमा, के साथ अन्य भी कई स्थानों पर लगी हुई हैं। संप्रति १९४८ से राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में मूर्तिकला शिक्षण। फ. १७३-१७५।

स्टूडियो राजेन्द्र स्कल्पचर आर्ट स्टूडियो, भिण्डों का रास्ता, जयपुर।

महेन्द्र कुमार दास

'दास बाबू' के नाम से सुपरिचित इनकी प्रारम्भिक कला शिक्षा कलकत्ता में सुधीन्द्र चन्द्र पाल के पास हुई। १९५६ से जयपुर में हैं। सर्वप्रथम स्व० नारायण लाल जैमिनी के साथ काम प्रारम्भ किया। भूटान की महारानी का काम पिलानी सरस्वती मन्दिर के काम में सहयोग किया। वहां से १९६० में श्री देवीशंकर तिवाड़ी के यहां रहना और साधना करना प्रारम्भ किया। यहां पर रह कर जान कैनेडी, रूजवेल्ट आदि पोर्ट्रेटों के अतिरिक्त जयपुर के स्टेच्यू सर्किल पर जयसिंह II की बारह फुट ऊंची प्रतिमा का निर्माण किया। अब लगभग ५० वर्ष के इस युवक में काम करने के मामले में गजब की तेजी है। सम्प्रति मोहन मिकेन में विशाल दुर्गा मन्दिर बनाने के काम में व्यस्त हैं।

श्रीमती उषारानी हूजा

दिल्ली विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में एम०

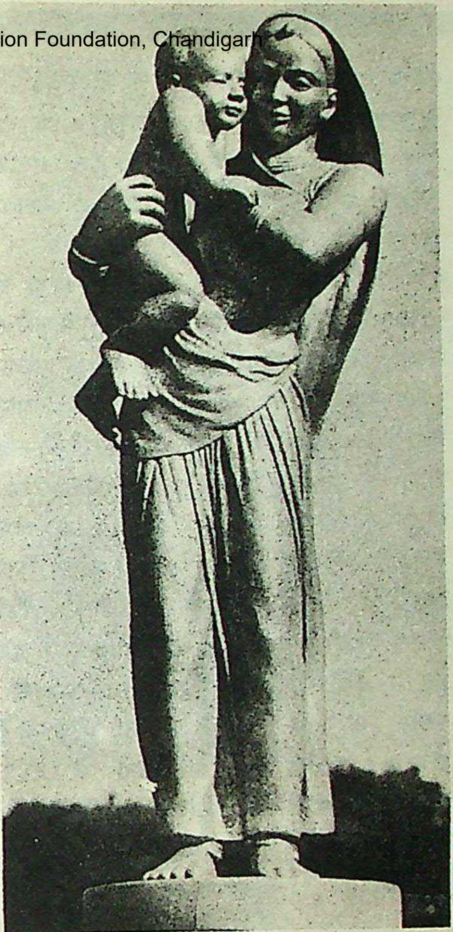

१७२

१७३

१७४

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ए० करने के बाद मूर्ति निर्माण की प्रक्रिया, रीजेन्ट स्ट्रीट पोलीटेकनीक लन्दन में सीखी। जयपुर का पुलिस मैमोरियल आपकी रचना है। संतोकबा दुर्लभजी अस्पताल एवं सवाई मानसिंह अस्पताल, बिहारी बाजार में १७ फुट ऊँचे मूर्ति संयोजन के साथ अन्य कई स्थानों पर भी आपकी रचनाएं देखी जा सकती है। जयपुर एवं दिल्ली में अपनी तीन एकल प्रदर्शनियां आयोजित करने के साथ स्कलपटर्स फोरम आफ इण्डिया १९७५, ७६ एवं ७७, राष्ट्रीय कला मेला दिल्ली, १९७७, अन्तराष्ट्रीय महिला कलाकार प्रदर्शनी दिल्ली १९७५ एवं भारत की महिला कलाकार प्रदर्शिनी १९५५ में आपकी रचनाएं प्रदर्शित हो चुकी हैं। बाहर दिल्ली, चितौड़गढ़, भीलवाड़ा, स्वीडन, वाशिंगटन, फिलिपाइन्स, फिजी, बम्बई, कोटा एवं जोधपुर में इनकी रचनाएं देखी जा सकती हैं। विभिन्न संस्थाओं से सम्बद्ध आप अंग्रेजी में कविता भी करती हैं। राजस्थान ललित कला आकादमी से १९६३ में पुरस्कृत। संप्रति अपने स्टूडियो पर ही कार्यरत। फ. १७४-१७८।

स्टूडियो ११, उनियारा बाग, जयपुर।

१७५

बृज मोहन शर्मा

जयपुर में १९३२ में जन्म। स्कूल ऑफ आर्ट्स जयपुर से चित्रकला में मूर्तिकला एवं मिट्टी कला में डिप्लोमा प्राप्त किया। स्कूल ऑफ आर्ट्स जयपुर से तीन बार, साहित्य समिति जयपुर एवं अन्तर्राष्ट्रीय खिलौना प्रदर्शनी में पुरस्कृत इन्हें आकादमी से भी १९६३ में पुरस्कार प्राप्त हुआ है। संप्रति उदयपुर मेडिकल कालेज में माडलर।

अ. य्याज मुहम्मद

जयपुर में १९३६ में जन्म। राजस्थान स्कूल

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

ऑफ आर्ट्स से क्लेमोडलिंग में डिप्लोमा। आकादमी से १९५९ और ६० में पुरस्कृत। लाख के काम के लिये राष्ट्रपति पुरस्कार। सम्प्रति अपने कार्य कक्ष पर ही साधना।

स्टूडियो मनिहारों का रास्ता, जयपुर।

आनन्दी लाल वर्मा

जयपुर में १९३६ में जन्म। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से क्लेमोडलिंग में डिप्लोमा आकादमी से १९६५ एवं ६६ में पुरस्कृत। सम्प्रति मेडिकल विभाग में सेवा। फ. १७६-१८१।

स्टूडियो ३०७४ कल्याण जी रास्ता, जयपुर।

१७६

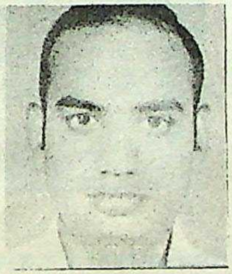

१७७

१७८

गंगाराम वर्मा

जन्म १९३७। स्कूल ऑफ आर्ट्स, जयपुर से माडलिंग में डिप्लोमा १९५१। राज्य ललित कला आकादमी से पुरस्कार १९६४ एवं ६६ सम्प्रति मेडिकल कालेज में माडलर।

गोरधन सिंह पंवार

जन्म १९३८। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स में क्ले मार्डलिंग एवं ब्लू पॉटरी का अध्ययन किया। जयपुर में स्थित डिजाइन सेन्टर में डिजाइनर के पद पर कार्य किया। आजकल गोवा में।

अब्दुल गफूर भाटी

जन्म मकराना १९४२। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से मार्डलिंग में डिप्लोमा। ललित कला आकादमी में रचनाएं प्रदर्शित। सम्प्रति मेडिकल कालेज अजमेर में मांडलर।

मुकुट बिहारी नाठा

जन्म १९५०, जयपुर। हाईस्कूल। राजस्थान स्कूल आफ आर्टस से क्लेमार्डलिंग में डिप्लोमा। राजस्थान ललित कला आकादमी से १९६२, ६४ और ७३ में पुरस्कृत, १९७८ में वेटर्न अवार्ड प्राप्त

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

किया। राजस्थान स्माल स्केल इन्डस्ट्री से अच्छी ब्लूपाटरी के लिये एक हजार रुपये का पुरस्कार प्राप्त किया। एशिया ७२ में भी रचना प्रदर्शित। सम्प्रति अपने स्टूडियो पर ही कार्यरत।
फ. १७७-१८४।

स्टूडियो नाठा मूर्ति म्यूजियम, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर।

बृज मोहन अत्री

जयपुर में १९४२ में जन्म, चित्रकार और मूर्तिकार। सोहनलाल अत्री के पुत्र। इनकी रचनाएं ललितकला आकादमी की प्रदर्शनीं में प्रदर्शित हो चुकी है। युवा मूर्तिकार संस्थान के १९७६-७७ में अध्यक्ष रहे। उत्तर प्रदेश राज्यपाल और अहमदाबाद म्यूनिसिपल कारपोरेशन के मेयर द्वारा अपनी रचना के लिये पुरस्कृत। सम्प्रति अपने कार्यकक्ष पर ही साधना रत। फ १७९

स्टूडियो रामकिशोर मूर्ति आर्ट, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर।

ओम प्रकाश नाठा

जयपुर में १९४४ में जन्म। मध्यप्रदेश में कला

१७९ १८०

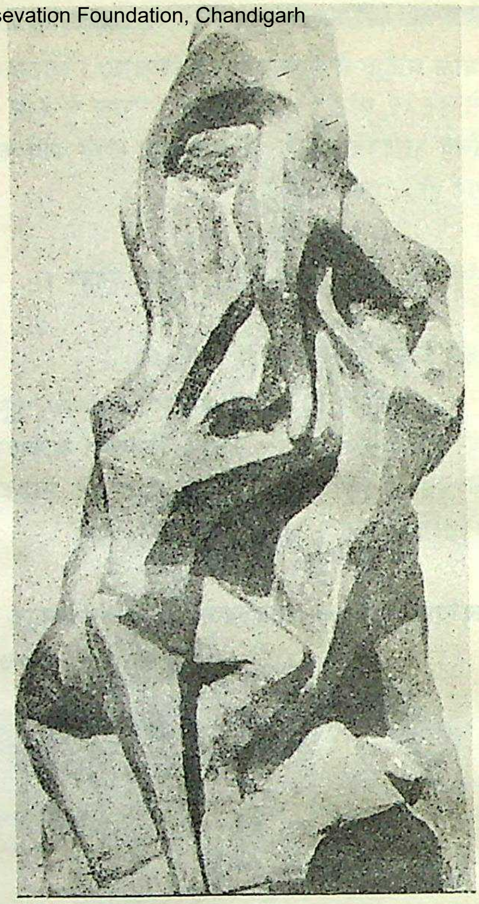

१८१

अध्ययन किया। राजस्थान स्कूल ऑफ आर्ट्स से क्लेमोडलिंग व स्कलपचर में डिप्लोमा इसी संस्था में चित्रकला में चतुर्थ वर्ष तक अध्ययन किया। आकादमी द्वारा दो बार उत्कृष्ट मूर्ति रचना के लिये पुरस्कृत। सम्प्रति अपने कार्य कक्ष पर ही साधना।
फ. १८०

स्टूडियो नाठा मूर्ति म्यूजियम, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर।

कमल प्रसाद मिश्र

जन्म १९४४—जयपुर। हायर सैकण्डरी। राज-

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

स्थान स्कूल ग्राफ ग्रार्टस से १६७१ में मूर्तिकला में डिप्लोमा। राजस्थान स्कूल ग्राफ ग्रार्टस, कलावृत्त एवं राजस्थान ललित कला ग्राकादमी की प्रदर्शिनियों में रचनाएं प्रदर्शित। ग्राकादमी से १६७२ में पुरस्कृत। कलावृत्त के कोषाध्यक्ष। सम्प्रति ग्रपने कार्यकक्ष पर ही कार्यरत। फ. १८२-१८५।

स्टूडियो भारत मूर्ति स्टोर, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर।

जवाहर लाल मिश्र

जयपुर में १६४६ में जन्म, बडोदा फेकल्टी ग्रॉफ फाइन ग्रार्ट्स में ग्रध्ययन किया। ग्राकादमी की ग्यारहवीं एवं बारहवीं प्रदर्शनी में पुरस्कृत। संम्प्रति ग्रपने कार्यकक्ष पर ही साधनारत।

स्टूडियो मिश्र निकुञ्ज, भिण्डों का रास्ता, जयपुर।

छगन लाल शर्मा

जन्म १६४६। राजस्थान ललित कला ग्राकादमी से १६७४ में पुरस्कृत। कलावृत्त की वार्षिक प्रदर्शिनियों में रचनायें प्रदर्शित। सम्प्रति ग्रपने कार्यकक्ष पर ही कार्यरत। फ. १८३-१८६।

स्टूडियो भारत मूर्ति स्टोर, खजाने वालों का रास्ता, जयपुर।

पुरूषोत्तम शर्मा

जयपुर में १६५० में जन्म। १६५६ में राजस्थान स्कूल ग्रॉफ ग्रार्ट्स से क्लेमाडलिंग में डिप्लोमा १६७१ में राजस्थान ललित कला ग्राकादमी द्वारा पुरस्कृत। कलावृत्त की द्वितीय तृतीय एवं चतुर्थ

१८२

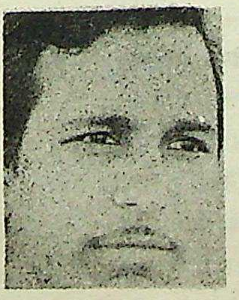

१८३

१८४

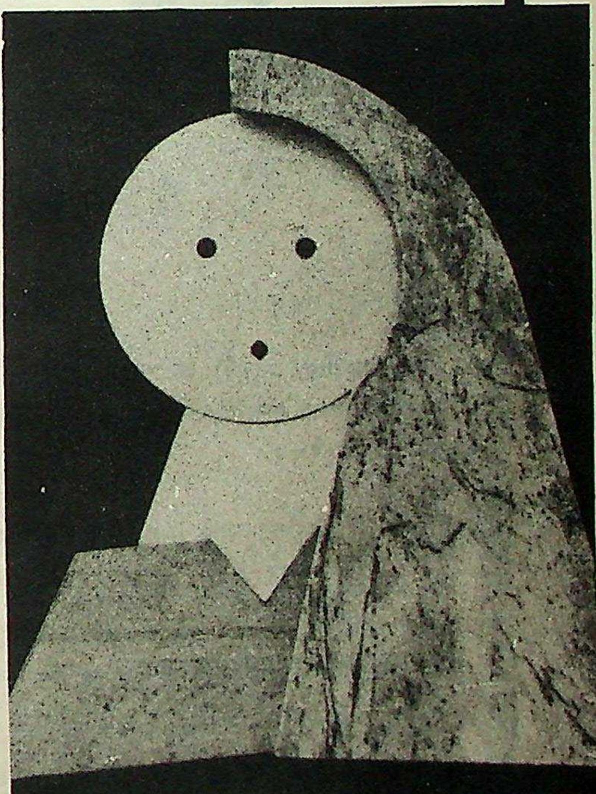

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

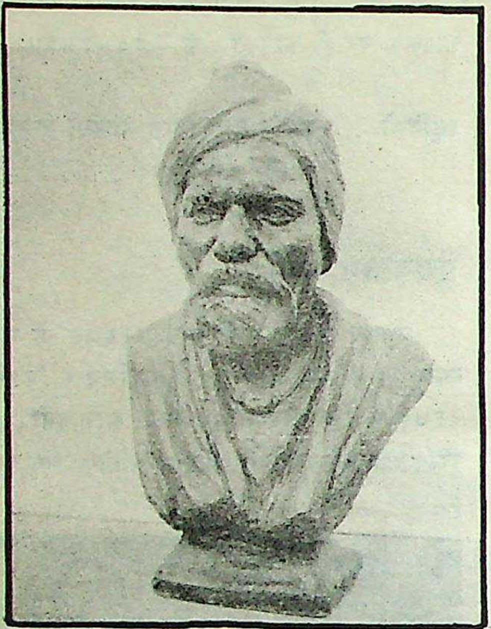

१८५

अखिल भारतीय प्रदर्शनी में रचनाएं प्रदर्शित। कलावृत्त के सदस्य, सम्प्रति अपने कार्यकक्ष पर ही कार्यरत। फ. १८६।

स्टूडियो हीरालाल एण्ड सन्स, मूर्ति मोहल्ला, जयपुर ।

राजेन्द्रकुमार शर्मा "गौतम"

जयपुर में १९५० में जन्म। इन्टरमीडियेट। राजस्थान स्कूल आफ आर्टस से १९७४ में क्लेमाडलिंग में डिप्लोमा। राजस्थान ललितकला आकादमी से १९६९ में पुरस्कृत। राजस्थान स्कूल आफ आर्टस से १९७४ में पुरस्कृत। कला वृत्त १९७३ एवं युवा मूर्तिकार संघ १९७७ की प्रदर्शिनियों में रचनायें प्रदर्शित। सम्प्रति अपने कार्यकक्ष पर ही साधना। फ. १९०।

स्टूडियो राजेन्द्र स्कल्पचर आर्ट स्टूडियो, भिण्डों का रास्ता, जयपुर ।

विष्णु प्रकाश शर्मा

जयपुर में १९५४ में जन्म। राजस्थान स्कूल आफ आर्टस से १९७० में क्लेमाडलिग में सर्टिफिकेट प्राप्त। राजस्थान ललित कला आकादमी से १९७१ में पुरस्कृत, फिलम एण्ड टेलीविजन इन्स्टीट्यूट से एक्टिंग में डिप्लोमा। सम्प्रति अपने स्टूडियो पर ही पैतृक व्यवसाय। फ. १८७।

स्टूडियो राजेन्द्र स्कल्पचर आर्ट स्टूडियो, भिण्डों का रास्ता, जयपुर ।

राजेन्द्र आर, मिश्र

मूर्तिकार घराने में १९५५ में जन्मे राजेन्द्र स्व. रामरतन के पुत्र हैं। राजस्थान स्कूल आफ आर्टस से माडलिंग में डिप्लोमा प्राप्त इनकी रचनायें राजस्थान ललितकला आकादमी ६८ से ७७ तक केन्द्रीय ललितकला आकादमी एवं स्कूल आफआर्ट १९६८, ७८ की प्रदर्शिनियों में प्रदर्शित हो चुकी हैं। आकादमी की कलादीर्घा में १९७६ में एकल प्रदर्शनी। स्कूल आफ आर्टस से १९६८ और ७०

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

में पुरस्कृत राजेन्द्र मिश्र १९६९, ७० और ७५ में पुरस्कृत होने के बाद १९७७ में विशिष्ट पुरस्कार प्राप्त करने का गौरव प्राप्त कर चुके हैं। पत्थर और मिट्टी दोनों ही माध्यमों से काम करते हैं। फ. १८८ - १९३।

स्टूडियो मिश्र निकुञ्ज, भिण्डों का रास्ता, जयपुर।

देवेन्द्र आर० मिश्र

जन्म १९५५। राजस्थान ललित कला आकादमी १९७५-७८ एवं छात्र कला प्रदर्शनी १९७८ में इनकी रचनायें प्रदर्शित। राजस्थान ललित कला आकादमी से १९७५ से पुरस्कृत इनकी रचना को विश्वविद्यालय छात्र कला प्रदर्शनी १९७८ में पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। सम्प्रति अपने कार्य कक्ष पर ही साधना। फ. १९४।

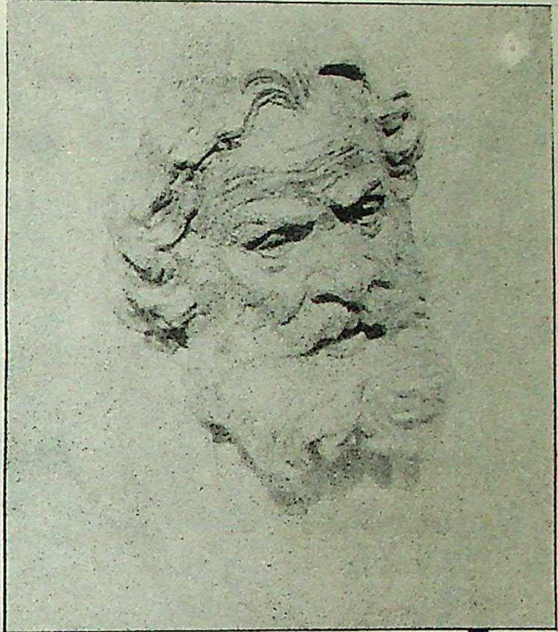

१८६

१८७

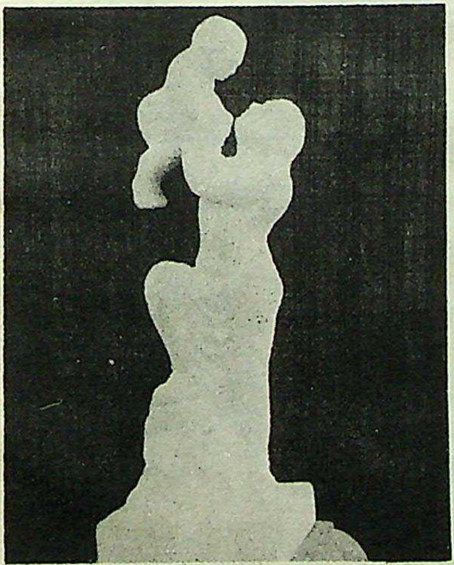

स्टूडियो सनातन धर्म मूर्ति आर्ट, भिण्डों का रास्ता, जयपुर।

वीरेन्द्र कुमार शर्मा

जन्म जयपुर १९५६। पिता श्री गोविन्द नारायण स्वयं कलाकार थे पर बचपन में ही उनका साया उठ जाने से कला शिक्षा स्व० बाबू लाल जी से ली। राजस्थान स्कूल आर्टस से चित्रकला में डिप्लोमा १९६६, क्ले-मॉडलिंग डिप्लोमा १९७२ एवं स्कल्पचर में डिप्लोमा १९७५ में प्राप्त किया। राजस्थान ललित कला अकादमी से १९७१ में अपने मूर्तिशिल्प के लिये पुरस्कृत, कलावृत्त सहित

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१८९   १९०

१९१

१८८

कई प्रदर्शिनियों में भाग ले चुके हैं । कलावृत्त के संस्थापक सदस्य अब इसके उप सचिव हैं। मिनि-येचर में विशेष दक्ष मूलतः चित्रकार अब अपने स्टूडियों पर ही साधनारत । फ. १९१-१९५ ।

स्टूडियो १३८०, खेजड़े का रास्ता, जयपुर ।

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

१९३

१९४

वस्तुतः मूर्तिकार जिन्हें अकादमी जानती है या जिनसे राजस्थान का कला जगत परिचित है उनके साथ साथ और कलाकार जो मूक साधना में लगे हैं और प्रचार की दौड़ धूप से दूर रहते हैं, के बिना तो यह विवरण पूरा नहीं माना जा सकता। विवशता यह है कि उन सब पर लिखना हो तो ऐसी दो पुस्तकें और लिखनी होंगी। जिनका उल्लेख न हो पाया है वे यह न समझें कि उनकी प्रतिभा को स्वीकारा नहीं गया है। हम आश्वस्त हैं कि वे अपने व्यवसाय से कुछ अलग हटकर समसामयिक कला प्रवाह से जुड़ने का प्रयास करेंगे और इस धारा में अपना अमूल्य योगदान देंगे।

१९५

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

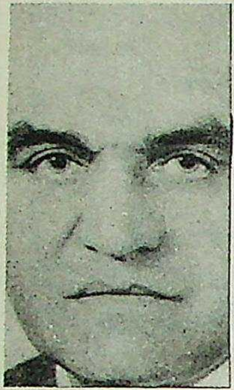

कुँवर संग्रामसिंह

जन्म 1927, एम. ए. एल. एल. बी. चित्रकला में डिप्लोमा तथा एल. एस. जी, इलाहबाद विश्व-विद्यालय से छायाचित्रण में भी योग्यता प्रमाण पत्र प्राप्त किया । राजस्थान ललित कला अकादमी एवं केन्द्रीय ललित कला अकादमी के सदस्य रह चुके हैं । महाराजा जयपुर म्यूजियम (सिटी पैलेस) के ग्यारह वर्ष तक निर्देशक रह चुके हैं । 1962 में हैग (जर्मनी) में आयोजित संग्राहालयों की अन्तर्राष्ट्रीय समिति में भारत का प्रतिनिधित्व किया । अपने विख्यात संग्रह के लिये प्रसिद्ध आपने-अपने संकलन की सैकड़ों प्रदर्शिनियाँ आयोजित कीं । कई विद्यार्थी शोध हेतु मार्गदर्शन प्राप्त कर चुके हैं । एक पुस्तक एवं कई लेख लिख चुके हैं ।

पता :—नवलगढ़ हाउस, संसार चन्द्र रोड़
जयपुर,

रामचरण शर्मा 'व्याकुल'

जन्म, 1930 'व्याकुल' के नाम से सुपरिचित इनका अपना निजि संग्रालय है । शिक्षक थे और आज भी विद्यार्थियों को भारतीय कला एवं साहित्य की शिक्षा दे रहे हैं । 'शुनः शेष' प्रथम कविता संकलन है । इसके साथ कई लेख वार्ताएँ आदि लिख चुके हैं । इनके नाम से इन्ही द्वारा स्थापित राम-चरण प्राच्य विद्या संग्रहालय, संकलन एवं व्यवस्था के कारण दर्शनीय है । संग्रह के साथ कविता और इसके बाद चित्रण भी करते हैं ।

पता :—नीलाम्बरा, 24 गंगवाल पार्क,
जयपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

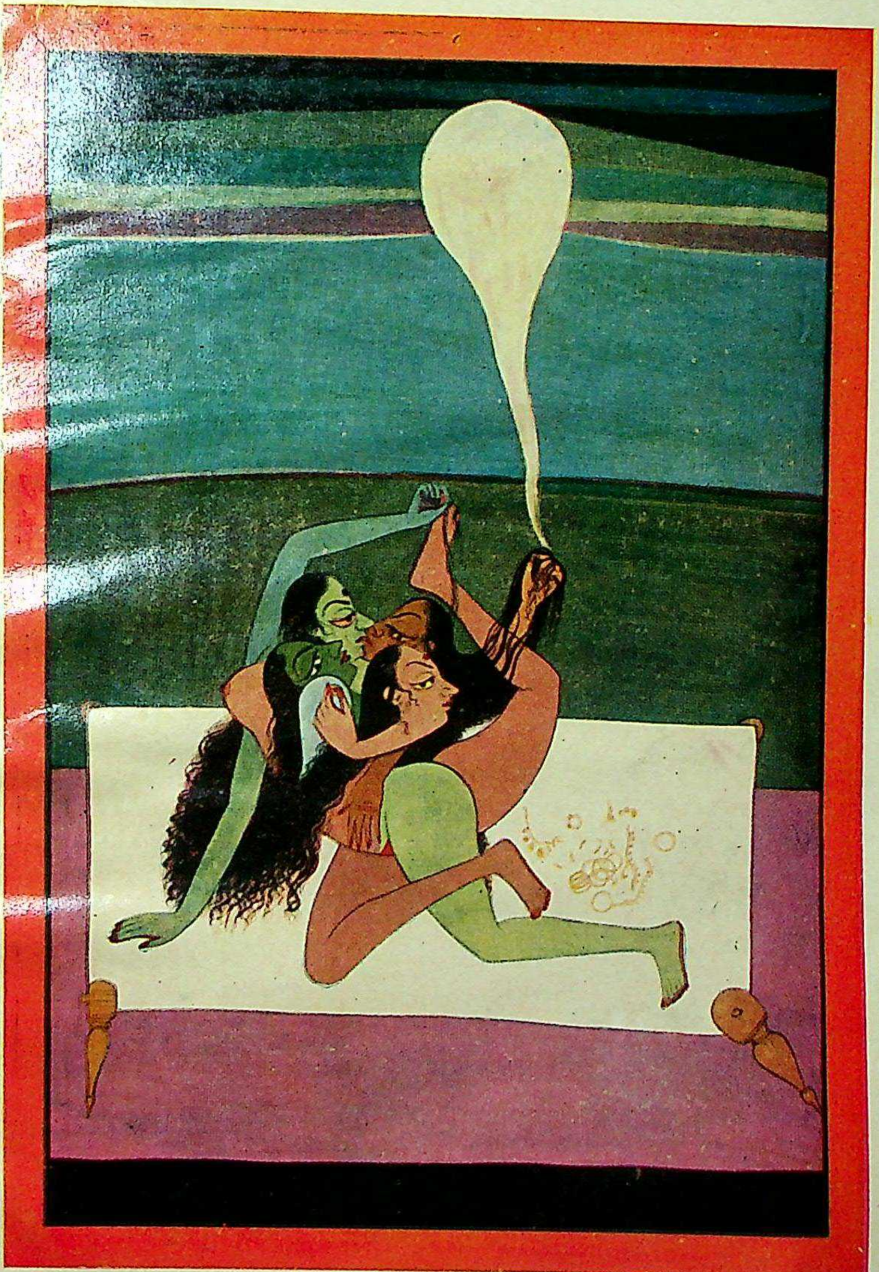

△ सुमहेन्द्र की रचना
विवरण पृष्ठ 97 पर

स्वचित्र △

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

"सुमहेन्द्र" महेन्द्र कुमार शर्मा,

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

जयपुर जिले के ग्राम नायन (अमरसर) में ४३ में जन्म। राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स से डिप्लोमा पेन्टिंग १६६४ एवं क्लेमाडलिंग ६७। १६६८ में वनस्थली फ्रेस्को केम्प में भाग लिया। एम० ए० चित्रकला १६७० स्वर्ण पदक प्राप्त। आकादमी सहित विभिन्न राज्य एवं राष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शिनियों में रचनाएं प्रदर्शित। १६६६ से ७६ के बीच जयपुर, दिल्ली, बम्बई, अहमद नगर, लखनऊ, बनारस, अलवर आदि स्थानों पर लगभग बीस एकल प्रदर्शिनियां आयोजित। राजस्थान ललित कला आकादमी से १६६८ व राष्ट्रीय ललित कला आकादमी से १६७२ में पुरस्कृत। केन्द्रीय ललित कला आकादमी दिल्ली के लिये मोजमाबाद दतिया, ओरछा, देवगढ़, कोटा एवं बून्दी के भित्ति चित्रों की अनुकृति। चित्र राजस्थान विश्वविद्यालय ललित कला आकादमी जयपुर एवं दिल्ली कालेज आफ आर्ट नई दिल्ली, कला भवन, बनारस आदि सहित देश एवं विदेश के निजी संग्रहालयों में संग्रहित। कलावृत्त, युवा सर्जक मंच का संस्थापक जिसकी चार वार्षिक प्रदर्शिनियां हुई तथा एक कलावृत्त वार्षिकी ७५ प्रकाशित हुई। परम्परागत शैली में विशेष अनुभव सभी शैलियों का गहन अध्ययन। राजस्थान के रागमाला चित्र पर शोधरत। मूलतः राजस्थान स्कूल आफ आर्ट्स में मूर्तिकला में व्याख्याता। संम्प्रति प्रतिनियुक्ति पर राजस्थान ललित कला आकादमी के सचिव पद पर कार्यरत।

स्टूडियो : २ ट ८, जवाहर नगर, जयपुर

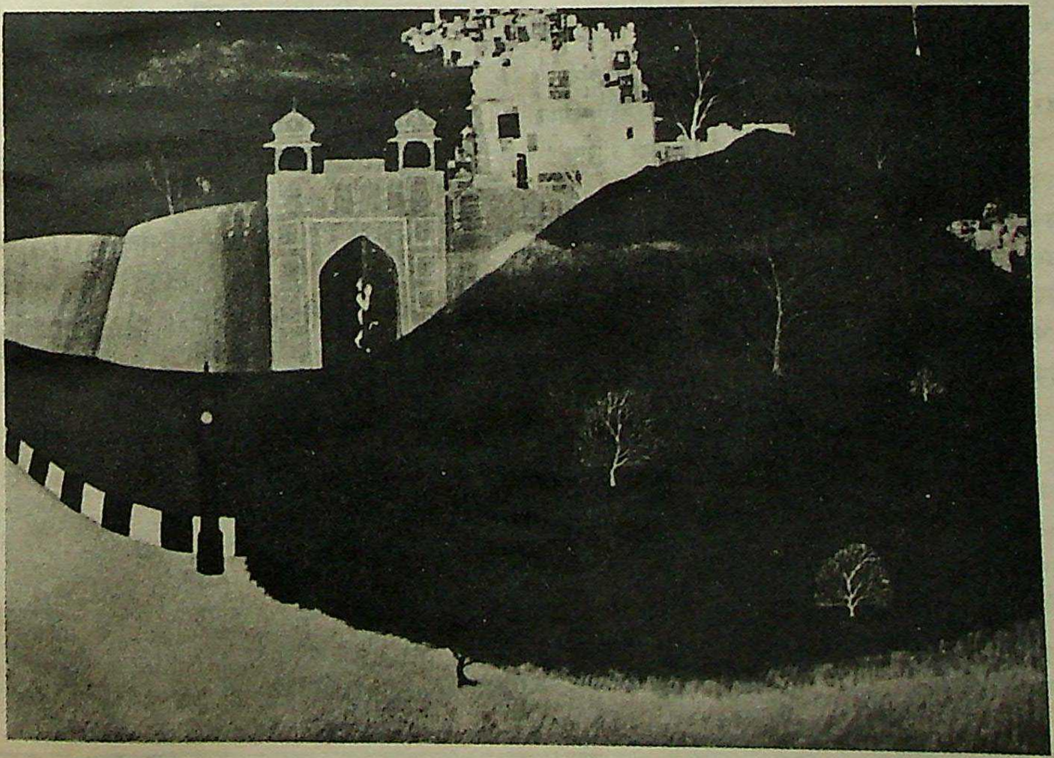

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

अनिता कोठारी (कु.) 69
अनुरूप कुमार 84
असितकुमार हल्दार 10, 27
अब्दुल करीम 56
अब्दुल गफूर भाटी 89
अय्याज मुहम्मद 88
आनन्दीलाल वर्मा 89
आनन्द किशोर अग्निहोत्री 40
आर. ए. सोनी 83
आर. बी. गौतम 48
आलोकमयी मिश्रा (कु.) 77
आशा शर्मा (कु.) 70
अंजलि डागा (कु.) 83
इकराम 26
इरशाद 26
इलाहीबक्श उस्ता 35
उदय 7
उपेन्द्र बाबू 10
उस्तालाल 7
उस्मान 26
उषारानी हूजा (श्रीमति) 87
उषा राठोड़ (श्रीमति) 62
एस. बी. गांधी 71
ए. एच. मूलर 32
कल्याण सहाय शर्मा 21
कालूराम 26
कालूराम 17
कालूराम डेरोलिया 17
कालूराम 11
किरण मदान (कु.) 80
कुक्कू माथुर (कु.) 78
कुशल 6
कुशल पुत्र सेवा 7
के. के. मुकर्जी 10, 27
केसा 9
कौशल किशोर 23
कृपालसिंह शेखावत 18, 29
कृष्णचन्द्र जोशी 44
कृष्णा 26
कृष्णा बैराठी (कु.) 63
कृष्णा शाह (श्रीमति) 39
खाजूराम 13
गणेश 19
गणेशजी 'मर्द' 16
गणेशजी फेडवाल 13
गणेश वशिष्ठ 74
गुमना 7, 8
गुलाबचन्द माली 86
गुलाबचन्द शर्मा 85
गेन्दीलाल काला 13
गोपाल 7
गोपाललाल माथुर 79
गोपाल वर्मन 74
गोवर्धनसिंह पंवार 89
गोपी 7
गोपीचन्द्र मिश्र 96
गोपीनाथ पुत्र वंशीनाथ 11
गोपीनाथ पुत्र बालगोविन्द 11
गोपीनाथ पुत्र रामचन्द्र 11, 13
गोपीनाथ पुत्र लक्ष्मीनारायण 11, 13
गोपीराम 11
गोविन्द 6
गोविन्द 7
गोविन्द नारायण शर्मा 93
गोविन्द नारायण फोटोग्राफर 18
गोविन्दराम 7
गंगाबक्श 24, 31
गंगाबक्श 11
गंगाबक्श 9
गंगाबक्श पुत्र गोविन्द 11
गंगाबक्श पुत्र लक्ष्मीनारायण 11, 13
गंगाराम वर्मा 89
घासी 7
घासी पुत्र दयाराम 7
घासी पुत्र सीताराम 7
घासीराम 19
घोष (श्रीमती) 36
चन्द्रावती शर्मा (श्रीमति) 42
चन्दूलाल चौहान 59
चिमन 7
छगनलाल शर्मा 99
छाजूराम 13
छाजूराम पुत्र रामचन्द्र 11
छुट्टनजी बारू 15
छुट्टनलाल 23
ज्योति स्वरूप 41
जगदीश प्रसाद 26
जगन्नाथ शर्मा 24
जगन्नाथ 11
जवाहरलाल मिश्र 91

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

जी. एस. श्रीवास्तव	76
जी. डी. त्यागराजन	39
जीवन	7
टी. पी. मिश्रा	85
डी. एन. घोष	36
तिलक राज	50
तोताराम पांचाल	26
दयाराम	7
द्वारका प्रसाद शर्मा	35
दिनेशचन्द्र शर्मा	74
दिलीप दवे	71
द्विजेन्द्र मिश्र	55
दुष्यंत सिंह	60
देवकीनन्दन शर्मा	30
देवेन्द्र आर. मिश्र	93
देवेन्द्र कुमार वर्मा	71
नन्दराम	11
नरबदीलाल शर्मा	22
नरसी चितेरा	7
नरेन्द्रकुमार शर्मा	63
नवलकिशोर	23
नाथू	19
नाथूलाल	16
नाथूलाल	13
नाथूलाल माली	15
नाथूलाल वर्मा	55
नाथूलाल शर्मा	21
नारायणजी पटेल	18
नारायण लाल कुमावत	14
नारायण लाल जैमिनी	86
नारायण लाल शर्मा	67
निरंजन	7
पन्नालाल	7, 8
पन्नालाल पुत्र लक्ष्मीनारायण	11
पारस भंसाली	48
पी.एन. चोयल	34
पुरुषोत्तम शर्मा	91
प्रकाशचन्द्र चौधरी	64
प्रेमचन्द्र गोस्वामी (डा०)	43
फकीरा	9
फैंजुल्ला	7
बख्ता	9
बद्रीजी बारू	15
बाबूलाल	23
बाबूलाल	93
बाबूलाल शर्मा	26
बुद्धकरण शर्मा	13
बृजमोहन	77
बृजमोहन शर्मा	88
ब्रह्मानन्द शर्मा	24
भानू	26
भूरसिंह शेखावत	29
भौंरीलाल	13
भौंरीलालजी डाडाबाज	15
भंवर सुजानगढ़ी	75
मनमोहन शर्मा	77
मनोज (डा०)	61
महावीर स्वामी	84
महिपाल	12, 24
महेश ओझा 'पुरुषार्थी'	57
महेन्द्र कुमार दास	87
महेन्द्र कुमार शर्मा	26
महेन्द्रसिंह शेखावत	26
माधोलाल	9
माधोजी खोवाल	14
मालीराम	85
मीनाक्षी काजी (श्रीमति)	69
मीनाक्षी शर्मा (कु.)	70
मुकुट बिहारी नाठा	89
मुकुल डे	27
मुन्नालाल	23
मुरली	18
मुरली	11
मोहम्मद शाह	6
मोनी सान्याल	33
मोहनदास	6
मोहनजी बारू	15
मोहनलाल	9
मोहनलाल गुप्ता	37
मोहनलाल शर्मा	11
मोहनलाल शर्मा	25
मोहनलाल शर्मा	18
मोहन शर्मा	53
मोहिन्द्रा (कु.)	57
मंगल	9
मंगल	7
यजेन्द्रप्रकाश शर्मा	13, 21
रघुनन्दन शर्मा	33
रघुनाथ पंवार	15
रघुनाथ पुत्र रामचन्द्र	11

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

अनुक्रमणिका

रघुनाथजी (रघुनाथ बाबा	14, 24	रामसहाय कुदाल	17	शौकत अली	75
रणजीतसिंह	40	राम सेवक	7	शंकरदयाल सक्सेना	10
रमेश	26	रीता प्रताप (श्रीमति)	66	स्वर्ण मदान	80
रमेश ग्रामीण	26	रेखा भटनागर (श्रीमति)	54	समदरसिंह	65
रमेश सत्यार्थी	53	लच्छीराम साधू	8	सत्यनारायण कुमावत	76
रमेशचन्द्र शर्मा	26	लछमन	7	सरला (कु.)	51
राजाराम	7	लछमीनारायण चोयल	16	सावित्री शर्मा (श्रीमति)	40
राजू	7	लल्लूनारायण शर्मा	86	सालिगराम	7
राजेन्द्र आर. मिश्र	92	लालचन्द चितेरा	6	सालिगराम बड़ा	7
राजेन्द्रकुमार अग्रवाल	68	लालचन्द मारोठिया	62	साहिबराम	6, 7
राजेन्द्रकुमार शर्मा 'गौतम	92	लालाजी दिल्ली वाले	16	सी.एस. मेहता	52
राधाकिसन	7	लक्ष्मणराव पेंढारकर	34	सी.एस. वेलेन्टाइन	9
राधाकृष्ण 'वशिष्ठ'	42	लोरना सी डेनियल (श्रीमति)	54	सुरेश कुमार	26
राधेश्याम 'अनाड़ी'	26	विनोद भारद्वाज	85	सुन्दरलाल शर्मा	23, 25, 86
राधेश्याम शर्मा	25	विमलकुमारी कौल (कु.)	35	सुभाष मेहता	65
रामकिसन	7	विमला मिश्र (श्रीमति)	41	सुमहेन्द्र	97
रामचन्द्र	9	विद्यासागर उपाध्याय	58	सुरभि मैनी (कु.)	81
रामचन्द्र मुसव्वर	12, 13	विरेन्द्रकुमार शर्मा	26, 93	सुरेश	26
रामचन्द्र पेन्टर	12	विशन	14	सुरेशचन्द्र राजोरिया	46
रामचन्द्र फेड़वाल	17	विष्णुप्रकाश शर्मा	92	सुशील कुमार	42
रामचरण	26	वीरबाला भावसार (कु.)	35	सोहनलाल अत्री	86
रामचरण शर्मा 'व्याकुल'	96	वेदपाल शर्मा 'बन्नू'	24	संग्रामसिंह (कुंवर)	96
रामगोपाल विजयवर्गीय	10, 27	श्यामलाल	14	हजारीलाल कड़वाणिया	16
रामजी	9	शंकरलाल	26	हरिदत्त कल्ला	49
रामदेवा	29	शब्बीर हसन काजी	45	हरिनारायण	18
रामजीदास	6, 7	शशि जैन (श्रीमति)	47	हरिनारायण	7
रामनिवास वर्मा	30	शशि शाह (कु.)	69	हीरा नन्द	7
रामप्रताप	19	शिवनन्द	31	हीरालाल शर्मा	86
रामप्रसाद	14	शिवनारायण (चौगानजी)	18	हुक्मा	7
रामरतन मिश्र	86, 92	शिवराम	7	हेमन्त शेष	67
रामलाल	9	शैलेन्द्र नाथ डे	10, 27, 31	त्रिलोक	7

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

शुद्धि-पत्र

बहुत सावधानी के बाद भी इस प्रकाशन में कुछ अशुद्धियां रह गई हैं। यहाँ उन अशुद्धियों का शुद्ध रूप प्रकाशित किया जा रहा है। पाठकगण असुविधा के लिये कृपया क्षमा करें।

पहला कालम

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	६	जमीर	जमीन
६	२०	किया और इस	किया। इस
२५	३	अनुमति	अनुकृति
२६	२२	साक्ष	साथ
४२	६	सम्बन्ध	सम्बद्ध
६८	३	आर. जी. डी.	आई. जी. डी.
८४	१२	में १९७६	१९७६ में
८७	१७	काम पिलानी	काम एवं पिलानी
९६	९	संग्राहालयों	संग्रहालयों

दूसरा कालम

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१९	५	पोर्ट्रेट फलक	पोर्टेट पारदर्शी रंगों में
२४	३	फलक है	कलाकार है
३३	५	—	आपकी शुरूआत है।
६१	८	एकला	एकल
७६		कलाकारों के चित्र	१४२□□१४३
९६	३	संग्रालय	संग्रहालय

कुछ **स्टूडियो** जो प्रकाशित न हो सके।

४९ लक्ष्मणराव पैंढ़ारकर : बी. १९१ विश्वविद्यालय मार्ग, जयपुर

कुछ **स्टूडियो** जो प्रकाशित न हो सके।

५६ श्रीमती रेखा भटनागर : बी. १९१ विश्वविद्यालय मार्ग, बापू नगर, जयपुर

६४ चन्द्रप्रकाश चौधरी : कान महाजन का बड़, गोबिन्दरायजी का रास्ता, पुरानी बस्ती, जयपुर

७० कु. मीनाक्षी शर्मा : ९९८, बगरू ठाकुर का रास्ता, चांदपोल बाजार, जयपुर

७५ भंवर सुजानगढ़ी : म. नं. ४३०१ नीमडी पुलिस चौकी, जयपुर

७९ गोपाललाल माथुर : बी. १२६ सेठी नगर, आगरा रोड़, जयपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

राजस्थान ललित कला अकादमी

के

प्रकाशन

1.	राजस्थानी मांडणा	8.00
2.	वार्षिकी 1963	3.00
3.	रामगोपाल विजयवर्गीय	4.00
4.	राजस्थान की लघुचित्र शैलियाँ	40.00
5.	बी० सी० गुई	5.00
6.	राजस्थान के तीन मन्दिर	10.00
7.	गोवर्धनलाल जोशी	2.00
8.	द्वारकाप्रसाद शर्मा	5.00

प्राप्ति स्थान :

राजस्थान ललित कला अकादमी

रवीन्द्र मंच, जयपुर

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh

CC-0. Agamnigam Digital Presevation Foundation, Chandigarh